Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमन्महानाटक



आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
185363

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमन्महानाटक

(द्वितीय संस्करण)

समीक्षार्थ/उपयोगार्थ

नाटककार
भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

Central Library
185363
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

185363

साहित्य रत्नालय
कानपुर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.P.S.
097
ARY-H

I.S.B.N. : 978-81-8378-128-2

❖ पुस्तक - हनुमन्महानाटक
❖ लेखक - भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
'साहित्यमण्डप', चन्द्रलोक कालोनी, शहजादपुर
अकबरपुर-२२४१२२, अम्बेदकरनगर (उ०प्र०)
❖ सम्पर्क-सूत्र - ७०८०३२२७६५
❖ प्रकाशक - साहित्य रत्नालय
गिलिस बाजार, कानपुर-208001
❖ संस्करण - द्वितीय
❖ प्रकाशन वर्ष - २०१६
❖ सर्वाधिकार - लेखकाधीन
❖ मूल्य - ३५०/- (तीन सौ पचास मात्र)
❖ मुद्रक - अजित आफसेट
रामबाग, कानपुर

HANUMANMHANATAK

By- Bhanudatt Tripathi 'Madhuresh'

चेतावनी

इस पुस्तक का कोई भी अंश पुस्तक के लेखक एवं प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से संपादित/प्रसारित नहीं किया जा सकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट–
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

रमणीय नाटक
"हनुमन्महानाटक"

श्री भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' ने हनुमत्-चरित के प्रायः सभी स्रोतों से कथावस्तु का चयन कर प्रस्तुत नाट्यग्रंथ का सृजन किया है। प्राचीन भारतीय साहित्य, धर्म, संस्कृति और अध्यात्म में उनकी गहरी रुचि है। वे गम्भीर अध्येता, श्रेष्ठ कवि, उच्चकोटि के विद्वान् और निष्ठावान् भक्त हैं। इसलिए हनुमत्कथा को आधार बनाकर इतना विशाल नाटक रचने में उन्हें सफलता मिली। महावीर हनुमान उनके इष्टदेव हैं। गोस्वामी जी के 'हनुमान बाहुक' की पद्धति पर रचा गया उनका 'हनुमत्-शतक' काव्य पूर्व प्रकाशित हो चुका है। वह भक्ति-प्रधान गीत-काव्य था और यह चरित प्रधान नाट्य-ग्रंथ है। अभिनेयता में यह नाटक है और विस्तार में प्रबन्ध। प्रबन्ध और नाटक के अनेक तत्त्व यहाँ परस्पर घुलमिल गये हैं। कथा प्रबन्ध में भी होती है और नाटक में भी। प्रबन्ध में वह सर्गबद्ध अथवा सोपानबद्ध होती है और नाटक में उसका विभाजन अंकों और दृश्यों में होता है। संवाद यद्यपि नाटक का प्रमुख तत्त्व है तथापि प्रबन्धकार अपनी कृतियों मे उसका प्रचुर प्रयोग करते हैं। संवादों के समुचित विनियोग से प्रबन्ध में नाटकीयता आ जाती है और कथानक के सुनियोजित संघटन से नाटक में प्रबन्धात्मकता आ जाती है।

कविवर 'मधुरेश' का यह ग्रन्थ नाटक नहीं, महानाटक है। वह अपनी श्रव्यता में ही भक्तों को आह्लादित करने वाला था, चाक्षुष होकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी रमणीय हो गया। इस महानाटक में छोटे-छोटे अनेक नाटक अन्तर्भुक्त हैं। इसका प्रत्येक अंक एक स्वतन्त्र नाटक है ही, यहाँ तक कि इसके कुछ दृश्य भी अपना स्वतन्त्र महत्त्व रखते हैं। रामायण, महाभारत, पुराणों एवं विभिन्न रामकथा-ग्रन्थों से लेकर गोस्वामी जी के राम-चरितमानस तक हनुमत्कथा-विषयक जो भी सामग्री प्राप्त थी, कवि ने उन सबको इस कृति में एक स्थान पर उपनिबद्ध कर दिया है। न केवल भक्तों और सहृदयों के लिए, बल्कि अनुसंधित्सुकों (हनुमान पर शोध करने की इच्छा वालों) के लिए भी यह कृति मननीय है।

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त अत्यन्त विस्तृत कथानक को पुनः संघटित करने में लेखक ने श्रम और सूझ-बूझ से काम लिया है। कथानक विस्तृत अवश्य है किन्तु उसका विन्यास जटिल नहीं है। कुल मिलाकर नाटक की कथावस्तु सरल और बोधगम्य है। एक बार ध्यान से पढ़ लेने पर ही पूरा प्लाट दिमाग पर चित्रित हो जाता है। अंक केवल पाँच हैं किन्तु प्रत्येक अंक में दृश्यों की संख्या अधिक है। संपूर्ण नाटक में कुल तिहत्तर* दृश्य हैं।

नाटक की कथा का कौन-सा अंश कहाँ से लिया गया और उसमें नाटककार ने क्या संशोधन-परिवर्धन किये, इसका संकेत अनुसंधित्सुओं के लिए उपयोगी होगा। जन्म और बाल्यकाल की रामायणोक्त कथा में पुराण-प्रतिपादित रुद्रावतार की कथा का मेल करके प्रथम अंक का सृजन किया गया है। नाटक में पवनदेव को अंजना के साथ रमण करते हुए न दिखाकर केवल शीतल सुरभिमय संचरण से वातावरण की शोभा बढ़ाते हुए दिखाया गया है। इस तरह के परिवर्तन से निश्चय ही

(*द्वितीय संस्करण में ३ दृश्य परिवर्धित होकर कुल छिहत्तर दृश्य हैं।)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथानक में अधिक सुरुचिपूर्णता आ गयी है।

दूसरे-तीसरे अंक की कथा वही है, जिसका वर्णन रामचरितमानस में किष्किन्धा कांड से लंका कांड पर्यन्त हुआ है। तीसरे अंक के अन्तिम दृश्यों में अहिरावणवध और मकरध्वज की उत्पत्ति का वर्णन है। यह प्रसंग रामायण अथवा रामचरित मानस में नहीं है। यह आनन्द रामायण, भावार्थं रामायण और गुजराती 'नर्मकथाकोष' से गृहीत है।

चौथे-पाँचवे अंकों के अनेक दृश्यों में अवान्तर कथायें हैं। द्रौपदी के लिए पुष्प लेने जाते समय भीम की हनुमान से भेंट का प्रसंग महाभारत के वनपर्व में आया है। हनुमान द्वारा अपना वक्षस्थल विदीर्ण करके उसमें रामनाम का दर्शन कराना कृत्तिवासरामायण में वर्णित है। रामचरितमानस की प्रति को चोरों से बचाने की कथा अनुश्रुति पर आधारित है। हो सकता है, हनुमान से सम्बन्धित ऐसी और भी कुछ कथायें हों, जिनका समावेश इस नाटक में न हुआ हो। जितना है, वही क्या कम है? हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता।

नाटक की भाषा और उसमें प्रयुक्त संवादों के विषय में दो शब्द कहना बहुत आवश्यक है। जैसा कि हम जानते हैं, कविवर मधुरेश मात्र कवि नहीं हैं, वे संस्कृत-साहित्य के अध्येता और विद्वान् भी हैं। वाल्मीकिरामायण के अनुसार हनुमान जी स्वयं वेदत्रय के ज्ञाता और व्याकरण के मर्मज्ञ थे। उनके चरित को आधार बनाकर खड़ी बोली में लिखे गये नाटक में उच्चस्तर की गम्भीर भाषा का प्रयोग करना कदाचित् अनुचित न होता। हो सकता है जनसाधारण में नाटक को लोकप्रिय बनाने के लिए रचनाकार ने ऐसा उचित न समझा हो। नाटक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पद्यबद्ध संवादों का प्रयोग भी अधिकतर किया गया है। लोकमंचों पर अब भी पद्यबद्ध संवादों का प्रचलन है। यह भी संभव है कि लेखक ने लोक-रुचि को ध्यान में रखते हुए ऐसा करना उचित समझा हो।

भारतीय पद्धति के नाटकों में रस का विशेष विशेष महत्त्व रहता है। विभिन्न स्रोतों से हनुमत्कथा के जितने रूप मिलते हैं, उन्हें ध्यान में रखकर विचार किया जाय, तो उनमें चार रसों के लिए अवकाश हो सकता है। बाल्यकाल की कथा में वात्सल्य रस, वीरता और साहसपूर्ण कार्यों में वीर रस, असाधारण कृत्यों में अद्भुत रस, प्रभु-प्रेम सम्बन्धी प्रसंगों में भक्ति रस। प्रस्तुत नाटक में यत्र-तत्र चारों रसों की स्थिति देखी जा सकती है। किन्तु प्रधानता भक्ति रस की है। सभी रस अन्ततोगत्वा उसी में अन्तर्भुक्त हो जाते हैं।

मधुरेश जी प्रातिभ, परिश्रमी, अध्यवसायी और नित्य क्रियाशील रहने वाले व्यक्ति हैं। आध्यात्मिक और लौकिक, व्यक्तिनिष्ठ और राष्ट्रीयतावादी, दोनों तरह की कृतियाँ उनकी लेखनी से निकल चुकी हैं, निकल रही हैं और आगे भी निकलेंगी। हिन्दी साहित्य को उनसे और अधिक अपेक्षायें है। हमें विश्वास है कि वे इन अपेक्षाओं को पूरा करेंगे।

प्रस्तुत नाट्य ग्रन्थ भगवद्भक्तों और साहित्य-प्रेमियों में समादृत हो-हमारी यही कामना है।

● डॉ० ओंकारनाथ त्रिपाठी
हिन्दी विभाग
महाविद्यालय
अकबरपुर

०७.०७.१९९५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण एवं रम्य नाटक

हनुमच्चरित की लम्बी परम्परा में 'मधुरेश' जी का "हनुमन्महानाटक" अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण नाटक है। इसे भक्ति प्रधान पौराणिक आख्यान पर आधारित लोकनाट्य और साहित्य-समन्वित नाट्यकृति कहा जा सकता है। इसकी कथा प्रख्यात है, पात्र सुविदित हैं, देश-काल, वातावरण और प्रकृति-परिवेश घटनाक्रम के अनुकूल हैं, संवाद पात्रानुसार संयोजित हैं और उद्देश्य है-श्रीहनुमान का स्तवन। इसमें भक्ति और वीररस का सुन्दर विनियोग हुआ है। इस नाटक का मंचन सरलतापूर्वक किया जा सकता है। गद्यात्मक संलाप के साथ-साथ पद्यात्मक संवाद भी प्रचुरता पूर्वक आये हैं। इसकी भाषा सुगठित किन्तु सर्व सामान्य के स्तर की है। सम्पूर्ण नाटक का विभाजन अंकों-दृश्यों के बीच किया गया है और इस प्रकार हनुमत्कथा को दृश्यकाव्य के रूप में परिणत कर दिया गया है।

श्री मधुरेश जी की इस रम्य रचना के लिए मैं उन्हें बधाई देता हूँ। हिन्दी नाटक अपनी नयी शिल्प विधि के कारण आज अपनी जमीन से विस्थापित-सा हो गया है। वह स्थिति त्रासद है। 'हनुमन्महानाटक' हमें अपनी भूमि और निजी रसानुभूति की ओर उत्प्रेरित कर सकता है।

इसी मंगलाशा के साथ मैं इस नाट्यकृति का स्वागत करता हूँ।

अक्षय तृतीया
१६६५

● डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित
हिन्दी विभागाध्यक्ष
लखनऊ विश्वविद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वाख्यान

वेदों से लेकर वर्तमान तक हनुमत्कथा रामकथा की अन्तर्धारा के रूप में प्रवहमान रही है। आञ्जनेय हनुमान एक ओर जहाँ राघवेन्द्र राम के अनन्य भक्त हैं वहीं दूसरी ओर वे भगवान शिव का एक वानर रूप होने से स्वयं भगवान भी हैं, एतावता हनुमान का चरित भक्त एवं भगवान दोनों ही रूपों में लोकमङ्गल का वह महार्णव है जिसका मनन-मन्थन करने पर मानव का मन ही नहीं, जीवन भी कृतार्थ हो जाता है। हनुमच्चरित की अनुभावना अनुभावक के अन्तः करण को अलौकिक ऊर्जा से अभिसिक्त कर देती है जिसकी अनुभूति का उल्लास जीवन के ऊर्ध्वोन्मुख विकास का पाथेय बन जाता है।

६-७ वर्ष की वय से ही मैं अपनी माँ राजरानी को (जो राजरोग से आक्रान्त थीं) प्रतिदिन 'हनुमान चालीसा' सुनाया करता था, पिताजी ने मुझे हनुमान चालीसा कंठस्थ करवा दिया था। तभी से मेरे मानस में महावीर हनुमान की महिमा-मूर्ति आकार लेने लगी थी। १५ वर्ष की वय में अध्ययनार्थ अयोध्या पहुँचने पर मै वहाँ प्रतिदिन 'हनुमानगढ़ी' दर्शनार्थ जाता और 'सुन्दरकाण्ड' का पाठ करता था। कालान्तर में हनुमान जी के कृपा-प्रसाद से ४५ दिनों का 'अनुष्ठान' सम्पन्न किया और उसी अन्तराल में ११२ छन्दों में महावीर मारुति के प्रति अपनी अनुभवार्द्र भावाञ्जलि अर्पित की जो 'हनुमत्शतक' के रूप में करपात्री स्वामी हरिहरानन्द जी के शुभाशंसन के साथ प्रकाशित हुई थी। तत्पश्चात् वेद-पुराण, महाभारत, वाल्मीकिरामायण, रामचरितमानस, कृत्तिवास, कम्ब, भावार्थरामायण, सर्वाङ्गरामायण इत्यादि अनेक ग्रन्थों का अध्ययन-अनुशीलन करते समय हनुमान के समग्र चरित-लेखन की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणा जागृत हुई। इस संदर्भ में अनेक सन्तों, मनीषी महानुभावों एवं सुधी साहित्यकारों से भी चर्चा-प्रसंग में हनुमच्चरित की अनेक अमिताभ मणियाँ प्राप्त हुईं। इन सब के अतिरिक्त हनुमत्कृपा के अलौकिक आलोक में जो कुछ अनुभूत-उद्भूत हुआ, उस सबका ही परिपाक है यह 'हनुमन्महानाटक'।

वैसे तो हनुमच्चरित को लेकर अनेक ग्रंथ गद्य एवं पद्य में लिखे गये हैं किन्तु मैने इस महच्चरित को दृश्यकाव्य का विषय बनाया है। इसकी सामाजिक एवं साहित्यिक उपयोगिता को समय एवं समाज ही सिद्ध करेगा, मैं तो सूत्रधार द्वारा सूत्रसंचालन से गतिशील पुत्तलिका के रूप में ही स्वयं को पाता हूँ। पुनरपि, यदि यह कृति साहित्य का कुछ भी अभिवर्धन एवं समाज का यत्किचिदपि मनोरंजन कर सकी, तो मैं अपने 'निमित मात्र' होने को सफल-सार्थक समझूँगा। मैंने तो मात्र अपना कर्तव्य-निर्वाह किया है। इससे आगे सुधी सामाजिकों के कर्तव्य एवं अधिकार का क्षेत्र है।

'हनुमन्महानाटक' की लघुकाय भूमिका लिखकर श्रद्धेय बन्धुवर डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित (हिन्दी विभागाध्यक्ष-लखनऊ विश्वविद्यालय) ने मेरे प्रति अपनी जिस उदार आत्मीयता को अर्थवती किया है, तदर्थ मैं उनका हार्देन आभारी हूँ। हिन्दी साहित्य के चारु चिन्तक भाई डॉ० ओंकारनाथ त्रिपाठी का भी सद्भाव मेरी स्मरणीय निधि है। उन्होंने पूरी पाणिलिपि पढ़कर कृति के प्रति अपना अमलाभ अभिमत व्यक्त किया है। इनके अतिरिक्त जिन स्नेही सुहृदों, सुधी मित्रों एवं साहित्यिकों का अनुमोदन-अनुशंसन मेरे साहित्यकार को सम्बल प्रदान करता रहता है, वे सभी सदैव मेरी स्मृति के ज्योतिपुष्प हैं।

विदुषां वशंवद :-

– भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय संस्करण के प्रति- "दो शब्द"

मेरे प्रति श्री हनुमान महाप्रभु की अहैतुकी अनुकम्पा का एक यह भी प्रमाण है, कि "हनुमन्महानाटक" का द्वितीय संस्करण भी प्रकाशित हो रहा है। ई०सन्-१९९४ में प्रथम संस्करण का प्रकाशन एकडल्ला (टांडा) निवासी ८० वर्षीय एक बाल ब्रह्मचारी वैष्णव बैरागी सन्त बाबा रामअँजोर दास (अब दिवंगत) के अर्थानुदान से सम्पन्न हुआ था। पुस्तक की प्रतियाँ अनेक विद्वानों, मनीषियों, सन्तों, समीक्षकों एवं प्रेमी पाठकों के अतिरिक्त अनेक पुस्तकालयों, साहित्यिक संस्थाओं को भी प्रेषित की गयी थीं। अनेक सुधी सुजनो-समीक्षकों एवं सम्पादकों ने हनुमन्महानाटक की प्रस्तुति को अपने "विचारों" में उल्लेखनीय अवदान घोषित किया था। उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ के द्वारा पुस्तक को पुरष्कृत भी किया गया था।

हनुमन्महानाटक की प्रतियाँ मेरे पास शेष नहीं रह गयीं तथापि अनेक लोग पुस्तक की माँग-अपेक्षा करते रहे। इसी बीच श्री हनुमत् कृपा से ही पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित होने का सुयोग बन गया और इस परम कार्य का श्रेय-सौभाग्य श्री हनुमानजी की ही प्रेरणा से श्रीमारुति कृपा-भाजन, साधन-साधनासम्पन्न, सद्गृहस्थ सन्त भाई जगदीश प्रसाद पोद्दार को प्राप्त हुआ। उनके समुदार-सक्रिय सौजन्य से प्रकाशित होकर हनुमन्महानाटक का "द्वितीय संस्करण" सुलभ हो सका। मंगल मूरति मारुतनन्दन की कृपावृष्टि सदैव इनके जीवन-उपवन में होती रहे, यही अन्तस्कामना है। जिन सुजनों, सुधी मनीषियों, महानुभावों का स्नेह-सद्भाव मुझे मिलता रहा है, मिल रहा है- उनका उदार आत्मीय भाव मेरे लिये सदैव सादर अविस्मरणीय है।

श्रीहनुमान महाप्रभु के कृपा प्रसाद का सदैव आकांक्षी-

– भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

श्रीहनुमान जयन्ती २०१९

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। श्री गणेशाय नमः ।।

श्री जानकीवल्लभो विजयते

ॐ श्रीमते भगवते हनुमते नमोस्तुते।।

अति हरिकृपा जाहि पर होई।
पाउँ देइ एहि मारग सोई।।
मनकामना सिद्धि नर पावा।
जे यह कथा कपट तजि गावा।।
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं।
ते गोपद इव भवनिधि तरहीं।।

यह परम आनंद का विषय है, कि परम भागवत् परात्पर शिव भगवान के साक्षात लीला स्वरूप श्री हनुमंतलालजी महाराज के थोड़े से चरित्रों का चिंतन स्वरूप प्रस्तुत ''श्री हनुमन्महानाटक'' का पुनर्मुद्रण किया जा रहा है।

इसके रचयिता कविवर श्रीमद् भानुदत्तजी त्रिपाठी 'मधुरेश' धन्य हैं। यह सब केवल ईश्वरकृपा से ही संभव हो पाया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी विनय-पत्रिका में सच ही लिखा है -

जाके गति है हनुमान की।
ताकी पैज पूजि आई, यह रेखा कुलिस पषान की।।१।।
अघटित-घटन, सुघट-विघटन, ऐसी बिरुदावलि नहिं आन की।
सुमिरत संकट-सोच-बिमोचन, मूरति मोद-निधान की।।२।।
तापर सानुकूल गिरिजाहर, लखन, राम अरु जानकी।
तुलसी कपिकी कृपा-बिलोकनि, खानि सकल कल्यानकी।।३।।

तो, यह ''सकल कल्यानकी खानी'' आपको सहर्ष सौंप रहे हैं। आशा है आप इसका भरपूर लाभ उठायेंगे तथा पठन समय की अपनी भावानुभूतियों को हमारे साथ बाँटते रहेंगे।

भवदीय
भाई जगदीश प्रसाद म० पोद्दार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमन्महानाटक

अंक प्रथम

दृश्य : प्रथम

(पर्दा खुलता है)

(मंच पर विराजमान श्रीहनुमान जी की सुसज्जित विशाल प्रतिमा अथवा चित्र के सम्मुख उपस्थित होकर सभी पात्रों द्वारा समवेत गायन)-

अंजना-नन्दन दुष्ट-निकन्दन ज्ञान-निधान हरे!
जय जग-वन्दन जन-मन-चन्दन जय हनुमान हरे!!
प्रलयंकर शंकर के उज्ज्वल अद्भुत अंश तुम्हीं,
राम-भक्ति-रस-मानसरोवर के चिर हंस तुम्हीं,
जय बलवान अमान अलौकिक मति-दिनमान हरे!
जय जग-वन्दन जन-मन-चन्दन जय हनुमान हरे!!
कन्दुक-सम गिरि वाम हस्त में, दक्षिण हस्त गदा,
आर्ति-विनाशक टेक किये शरणागत-हेतु सदा,
भास्वर रूप अनूप दयामय वीर-प्रधान हरे!
जय जग-वन्दन जन-मन-चन्दन जय हनुमान हरे!!
द्रोह करे तुम से जन जो, उसको फिर ठौर कहाँ,
हो कलि में तरुकल्प तुम्हीं, तुम-सा प्रभु और कहाँ,
शक्त अनल्प, स्व-भक्त-समूह के भव्य विहान हरे!
जय जग-वन्दन जन-मन-चन्दन जय हनुमान हरे!!
मोह-पयोधि अपार प्रभो ! हमको तुम पार करो,
मानव के तन के, मन के दुख-दोष-विकार हरो,
मंगल-मोद महा सुखदायक दिव्य विधान हरे!
जय जग-वन्दन जन-मन-चन्दन जय हनुमान हरे!!

(धीरे-धीरे यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वितीय

(पर्दा उठता है)

(नारद का नामकीर्तन के साथ वीणा बजाते हुए प्रवेश)

भज मन नारायण ! नारायण !! नारायण !!!

भज मन नारायण ! नारायण !! नारायण !!!

(आकाश की ओर दृष्टि करके)

(स्वगत)

नारद- आज कैलाश-शिखर पर एकत्रित होकर सभी देव भगवान भूतनाथ की प्रार्थना करने वाले हैं। अतः, मुझे भी यथाशीघ्र कैलाश पहुँचना है। देखूँ-रावण-वध में नारायण का सहयोग करने के लिये प्रलयंकर पुरारी मृत्युलोक में अवतार लेने को स्वीकार करते हैं या नहीं ....।

उनकी लीला, वे ही जानें।

नारायण! नारायण!!

(नारायण! नारायण! करते हुए नारद का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : तृतीय

(पर्दा उठता है)

(कैलास पर्वत पर ब्रह्मा का देवर्षि नारद एवं सभी देवों के साथ आगमन)

ब्रह्मा - (चारों ओर दृष्टिपात करके)-अहा-हा! यह कँकरीला और पथरीला कैलास देवलोक को भी मात करने वाला है। यहाँ प्रकृति अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य से सुसज्जित है। पवनदेव भी अपने आँचल में सुरभि समेट कर सभी जीवों को आह्लादित कर रहे हैं। आओ, हम लोग यहीं भगवान शंकर को मनायें-उनकी प्रार्थना करें।

समस्त देव- हाँ-हाँ, स्वामी! आप ठीक कहते हैं।

(हाथ जोड़कर समवेत प्रार्थना)

जय शिव शंकर! जय अभयंकर! जय-जय अवढरदानी,
जयति-जयति-जय आशुतोष जय, जयति महेश-भवानी!
जय आरतिहर! जय गंगाधर! जयति भवेश पुरारी,
जय गिरिजापति! जय सेवक-गति! जयति बाल विधु-धारी!
जयति आत्मरत! जयति सर्वगत! जय अभिमत फल-दाता,
जयति निरंजन! जय दुख-भंजन! जयति-जयति जन-त्राता!
जय योगेश्वर! जय जीवेश्वर! जय-जय त्र्यंबक स्वामी,
कृपा करो हे प्रभो दयामय! हम सब हैं अनुगामी।।

(शिव-पार्वती का अन्तरिक्ष पर दिखाई देना)

(सभी देवों का शीश झुकाना)

शंकर- (साश्चर्य देखकर)-आज सभी देवों सहित विधाता का दर्शन होना मेरे सौभाग्य की बात है। कहिये पितामह ! कहिये-सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशल तो है? आज सभी देवों सहित कैलास पर पधारने का कोई कारण?

ब्रह्मा- हाँ प्रभो ! कारण तो अवश्य है।

शंकर- कारण ....? तो क्या उसका निवारण मेरे हाथ है?

ब्रह्मा- हाँ प्रभो ! सभी कारणों का निवारण आप ही के हाथ है। आपके ही अनुरोध पर स्वयं भगवान विष्णु को धर्मोद्धार के लिये अयोध्या के महाराजा दशरथ के घर अवतार लेना पड़ा है।

"आपके अनुरोध पर वादा किया अवतार का,
प्रण किया कुल के सहित दशकंठ के संहार का।
हम निजी अज्ञान से फिर भी प्रभो! भयभीत हैं,
दीखते लक्षण सभी अनुमान से विपरीत हैं।
आप भी, सहयोग में हरि के, स्वयं अवतार लें,
धर्म के उद्धार के अधिकार का कुछ भार लें।।"

शंकर- (मुस्कराते हुए) हाँ-हाँ, आप सत्य कहते हैं पितामह ! धर्मोद्धार के लिये स्वयं लीला पुरुषोत्तम हरि ने अयोध्या में अवतार ले लिया है। (पार्वती की ओर देखकर) शैलजे ! तुम इस सम्बन्ध में चिन्तित-सी क्यों हो गयी?

पार्वती- हाँ स्वामी ! नारायण का अवतार तो रावण-संहार के लिये हुआ है और वह भी आपकी प्रार्थना पर। यदि विचार किया जाय तो रावण आपका अनन्य भक्त है। आपको उसकी रक्षा करनी चाहिये स्वामी !

शंकर- हाँ, शैलजे ! तुम्हारा सोचना और कहना-दोनों अपने-अपने स्थान पर सत्य है। तुम्हारी ही भाँति ऐसा सभी लोग सोच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं'; किन्तु ....

पार्वती- हाँ-हाँ नाथ ! इस दासी को भी इस सम्बन्ध मे कुछ बतायें; 'किन्तु' का रहस्य कुछ हमें भी समझायें स्वामी !

शंकर- अच्छा, प्रिये ! तुम भी अपनी शंका का निवारण कर लो। रावण मेरा परम भक्त है, यह तो अक्षरशः सत्य है। मैं भी उसे अपना परम भक्त मानता हूँ। रावण ने अपने दशों शिर जहाँ मेरी पूजा में अर्पित कर दिये हैं वहीं उसने मेरे रूप 'ग्यारहवें रुद्र' की पूजा न करके मेरी अवहेलना भी की है।

पार्वती- तो स्वामी ने इस सम्बन्ध में क्या सोचा है?

शंकर- (देवताओं की ओर देखकर) अब इस सम्बन्ध में क्या सोचना बाकी रह गया है? शैलजे ! रावण ने अपना वरदान माँगते समय भी नर और मेरे ग्यारहवें रुद्र 'वानर' का निरादर किया है, उसने कहा था-

"मारे मरूँ कभी न किसी से, वश में हो संसार सदा।
नर-वानर की बात भला क्या, वे मेरा आहार सदा।।"

इसलिये नारायण ने भी रावण-वध के लिये मानव रूप में अवतार लिया है। मैं भी यथाशीघ्र अपने ग्यारहवें रुद्र 'वानर' रूप में अवतार ले रहा हूँ।

सभी देव- (समवेत) बोलो, कैलासपति भगवान भूतनाथ की जय !

शंकर- देवगण! आप लोग चिन्ता का परित्याग कर अपने-अपने स्थान को पधारें। मैं धर्मोद्धार में नारायण की सहायता के लिये यथाशीघ्र अवतार ले रहा हूँ।

ब्रह्मा- धन्य हैं, भगवान आशुतोष ! आप धन्य हैं। (देवों से) आओ, अब हम लोग चलें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभीदेव- (एक साथ) हाँ-हाँ, आप ठीक कहते हैं।

(शिव को शिर झुकाकर सभी का प्रस्थान)

शंकर- (स्वगत) इस शुभ कार्य में सहयोग के लिये मैं अभी पवनदेव का आवाहन करता हूँ।

(भगवान शिव का ध्यानारूढ़ होना, आवाज पर पवन देव का आकर शिव को शीश झुकाना)

पवनदेव- (सिर झुकाकर) स्वामी ! पवन देव का प्रणाम स्वीकार हो।

शंकर- जय हो पवन देव ! जय हो ! मैने आज आपको कुछ सहयोग के लिये बुलाया है।

पवनदेव- स्वामी ! यह मेरा अहोभाग्य है। आज्ञा कीजिये, सेवक सेवा के लिये प्रस्तुत है।

शंकर- सुनिये, यह एक रहस्य की बात है। शाप और तपस्या की बात है। अभिशप्त यक्षराज स्वर्णगिरि पर्वत पर, केशरी वानर रूप में और उसकी प्रेयसी अप्सरा शाप के कारण नारी रूप में, रहकर घोर तप कर रहे है। उन्हीं की तपस्या के कारण मुझे माता अंजना की गोद में अवतार लेना है। इसलिये आप इसी समय स्वर्णगिरि जाकर अपने शीतल-सुरभिमय संचरण से वहाँ की शोभा बढ़ायें।

पवनदेव- नाथ ! जो आज्ञा।

(शिव को प्रणामपूर्वक पवनदेव का प्रस्थान)

(यवनिका पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्थ

(पर्दा खुलता है)

(स्वर्णगिरि पर केशरी तथा अंजना बैठे बात कर रहे हैं)

केशरी- प्रिये ! हम दोनों को तप करते-करते आज बारह वर्ष पूरे हो गये।

अंजना- हाँ स्वामी ! पूरे तो हो गये।

केशरी- किन्तु, प्रिये ! हम लोगों पर ईश्वर की कृपा नहीं हुई।

अंजना- स्वामी ! कृपा हो या न हो। यह देखना हमारा कार्य नहीं है। हमें तो केवल कर्तव्य-पालन ही करना चाहिए, फल देना तो दूसरे का कार्य है। स्वामी ! रात अधिक बीत चली, अब आप चिन्ता छोड़ कर विश्राम करें।

केशरी- हाँ प्रिये ! होगा वही-जो ईश्वर चाहेगा। तुम विश्राम करो। मैं भी अब शयन को जाता हूँ।

(केशरी का प्रस्थान)

(अंजना का सोने का उपकम करना, भगवान शंकर का प्रकट होना, ध्यान से देखकर अंजना का आश्चर्य में पड़ना)

अंजना- (स्वगत) मैं यह क्या देख रही हूँ ? यह कौन हैं? जो मेरे सामने खड़े दिखाई दे रहे हैं। क्या मैं स्वप्न देख रही हूँ....? नहीं. ......नहीं.....मैं स्वप्न नहीं देख रही हूँ। (प्रकट) आप कौन हैं? आप मुझ दुखियारी के पास क्यों आये हैं?

"हैं कौन आप? कैसे आये ? कर कृपा मुझे कुछ बतलायें।
क्या काम पड़ा दुखियारी से, हे देव ! मुझे कुछ समझायें।।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकर- माता अंजना ! भय और शंका का त्याग करो।

अंजना- आप कौन हैं? जो मुझसे भय और शंका का परित्याग करा रहे हैं। मुझ अभागिन को माता कह रहे हैं।
(स्वगत-अन्य ओर मुख करके) अहा-हा ! भला मुझे माता कौन कहेगा ? जब आज तक मुझे माता कहने वाला नहीं मिला, तब भला अब मुझे माता कौन कहेगा?

शंकर- माता अंजना ! शंका मत करो। मैं रुद्ररूप स्वयं शिव हूँ। यह सब तुम्हारी ही तपस्या का फल है, जो अब तुम्हें मिलने वाला है।

अंजना- (पैरों पर गिर कर) धन्य हैं, प्रभो ! आप धन्य हैं। आपकी माया निराली है।

शंकर- माता अंजना ! तुम्हारी ही तपस्या के कारण मुझे तुम्हारी ही कोख से जन्म लेना पड़ रहा है।

अंजना- प्रभो ! (हाथ जोड़ कर) आपका यह रूप मुझे भयभीत कर रहा है। आप मुझे शान्त एवं सौम्य रूप में दर्शन देने की कृपा करें।

शंकर- माता ! आप चिन्ता न करें। आपका पुत्र तीनों लोकों में विख्यात होगा। देखो.........अपने पुत्र को सँभालो माँ !
(शंकर का अन्तर्धान होना, फिर बालक-रूप में दिखाई पड़ना)

अंजना- (प्रसन्न होकर बालक को गोद में उठाते हुए) आओ मेरे लाल, मेरे प्राण, मेरे हृदय से लग जाओ।

(अंजना का बालक को गोद में लेना)

(आकाश से पुष्प-वर्षा होना)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R.P.S
097
ARY-H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Central Library
185363
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

दृश्य : पंचम

(पर्दा खुलता है।)

(केशरी का भवन, अंजना और केशरी बालक को फल आदि खिलाते हुए)

अंजना– स्वामी ! यह बालक हमारे पूर्वजों की तपस्या का फल है। ले बेटा ! इसे भी खा ले–(फल देना)

केशरी– हाँ प्रिये ! तुम्हारा कथन सत्य है; अन्यथा ऐसा अद्भुत और होनहार बालक ईश्वर हमें कदापि न देता। इस बालक से हमारा जीवन धन्य हो गया।

अंजना– हाँ स्वामी ! बालक की कला और लीला देखकर मुझे भी आश्चर्य होता है।

केशरी– प्रिये ! बालक की चंचलता और चपलता देखकर मुझे तो हमेशा भय बना रहता है कि बालक को कुछ हो न जाय।

अंजना– हाँ स्वामी ! यह सच है। मैं इसको कई बार उस (सामने की ओर लक्ष्य करके) झाड़ी से खोज कर लायी हूँ। घण्टों चकराई, तब कहीं इसे ढूँढ़ पायी मैं....।

केशरी– इसीलिये तो कहता हूँ कि इस बालक के प्रति काफी सावधान रहने की जरूरत है।

अंजना– हाँ स्वामी ! मैं बालक के प्रति सदैव सजग रहती हूँ। अब आप भी विश्राम करें। मैं भी बालक को सुलाने और सोने जाती हूँ।

केशरी– हाँ–हाँ, अब तुम दोनों आराम करो, मैं भी विश्राम करने जाता हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(केशरी का दूसरे कक्ष को प्रस्थान)

(अंजना का बालक के साथ सोना, थोड़ी देर बाद भैरवी धुन का बजना सुनायी पड़ता है)

(नेपथ्य से)

"भोर हुआ अब जाग मुसाफिर,
व्यर्थ समय क्यों खोता है?
मूल्य समय का जो न जानता,
वह पछताता - रोता है।
जाग-जाग उठ, देख दिवाकर
तुझ से हाथ मिलायेगा।
ठीक समय पर चलने वाला
अपनी मंजिल पायेगा।"

(आवाज को सुनकर अंजना की आँख खुल जाती है)

(अंजना का उठना, बालक का सोते रहना)

अंजना– (बालक को देखते हुए-स्वगत) सोते रहो बेटा, मैं तब-तक घर का भी कुछ काम निबटा लूँ। (कुछ सोचकर) देखो, सोता हुआ कैसा भोला लग रहा है; परन्तु जब मचल जाता है तब यही प्रलयकारी बन जाता है। अच्छा, मेरे लाल ! अभी थोड़ी देर और सोता रह।

(अंजना का दबे पाँव प्रस्थान)

(बालक का जाग कर उठना, पूर्व दिशा मे लाल प्रकाश दिखाई पड़ना, फिर बालक का सूर्य को देखकर विस्मित होना, सूर्य को लाल फल समझ कर बालक का उसकी ओर दौड़ना)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यदेव- (स्वगत) अरे, यह कैसा बालक है? जो वायु-गति से सूर्य-लोक की ओर बढ़ा आ रहा है। मेरी अग्निवर्षिणी किरणों की बालक को तनिक भी चिन्ता नहीं। यह तो बड़ा अपूर्व और अद्भुत है।

"तीव्र किरणों की न बालक को तनिक परवाह है।
मृत्यु को मानो हनेगा, यों भरा उत्साह है।।"

(कुछ क्षण सोचकर)

मैं इस अद्भुत और होनहार बालक की सहायता करूँगा।

इसके मार्ग की सारी कठिनाइयों को दूर कर दूँ- (फिर कुछ सोचकर)

"आग-सी जलती किरण शीतल अभी बन जायगी।
शक्ति सारी अब किरण की बर्फ-सी बन जायगी।।"

(बालक का सूर्य के रथ पर उछल कर बैठना, उसी क्षण राहु का आगमन, और सूर्य पर झपटना, बालक का राहु को दपटना, राहु का भयभीत होकर चिल्लाते हुए भागना।)

राहु- बचाओ ! बचाओ !! देवराज इन्द्र ! बचाओ। इस बालक से मेरी रक्षा करो। यह तो मेरा काल ही प्रतीत हो रहा है। त्राहि माम् देवराज! त्राहि माम्.......।

[राहु का नेपथ्य की ओर पलायन]

(यवनिका पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षष्ठ

(पर्दा खुलता है)

(घबड़ाये हुए राहु का स्वर्ग की ओर बढ़ना)

राहु- (स्वगत) ओह ! यदि आज मैं सूर्यलोक से अपने प्राण बचा कर न भागा होता, तो वह बालक मुझे मार ही डालता। बहुत दिनों के बाद मुझे भूख जगी थी। नियमानुसार सोचा था कि चलकर सूर्य का ग्रसन करके अपनी क्षुधा शान्त कर लूँ, परन्तु; वहाँ तो बालक रूप में मेरा काल ही बैठा है। अब मैं क्या करूँ ?............ कहाँ जाऊँ ? किसको अपनी व्यथा सुनाऊँ ? इस समय मेरी रक्षा कौन कर सकता है?

(कुछ सोचने का अभिनय करके)

हाँ, मैंने ठीक ही गुहार लगायी। देवराज इन्द्र हमारे राजा हैं। चलकर उन्हीं से कहता हूँ। वे राजा हैं-मेरी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे, मेरे कष्टों का निवारण करेंगे। राजा का धर्म है प्रजा की रक्षा करना। अतः मैं जाकर उन्हीं को अपनी इस विपत्ति को बताऊँ।

(तीव्रतापूर्वक एक ओर से प्रस्थान)

(यवनिका पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तम

(पर्दा खुलता है।)

(इन्द्र-दरबार में देवराज इन्द्र अपने सभासदों के साथ बैठे है)

मंत्री- प्रहरी !............प्रहरी !!

प्रहरी- (आकर, सिर झुकाकर) आज्ञा दीजिये स्वामी !

मंत्री- दरबार में मनोरंजन का साधन प्रस्तुत करो।

प्रहरी- स्वामी ! जो आज्ञा। (प्रस्थान)

(नर्तकी का आना, नृत्य-गायन प्रारम्भ होना)

"मदिर मस्त बह रहा पवन है,
मचल रहा मेरा मृग-मन है।
तन ज्यों पुष्पित नन्दनवन है,
यह सब प्रियतम का चिर धन है।
प्राण-पपीहा पल-पल तरसे,
जाने कब स्वाती-घन बरसे।
मेरा रोम-रोम जब हरसे,
रस से सारा यौवन सरसे।"

इन्द्र- (उन्मुख होकर) मंत्रिवर ! प्रजा का क्या समाचार है ? शासन-व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही है न ?

मंत्री- हाँ-हाँ स्वामी ! आपके शासन में सभी खुशहाल हैं, जहाँ देखो, वहीं निहाल हैं, धन-वैभव से मालामाल हैं।

इन्द्र- ठीक है मंत्रिवर ! ऐसा ही होना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रहरी का प्रवेश)

प्रहरी- (साञ्जलि) अन्नदाता की जय हो।

इन्द्र- कहो-प्रहरी ! कहो क्या सम्वाद लाये हो ?

प्रहरी- स्वामी ! राहु घबड़ाये हुए हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।

इन्द्र- यदि मिलना चाहते हैं तो उन्हें सादर प्रवेश कराओ।

(प्रहरी का प्रस्थान) (राहु का प्रवेश)

राहु- (शिर नवाकर) पाहि माम् ; पाहि माम् ;
देवराज ! त्राहि माम्।

इन्द्र- कहो-कहो राहो ! क्या कहना चाहते हो ? इतना अधीर होकर मेरे पास तक आने का क्या कारण है ?

राहु- (हाथ जोड़कर) स्वामी ! कारण साधारण नहीं, असाधारण है।

इन्द्र- कहिये-कहिये, वह कौन-सा कारण है ? मैं उसका निवारण अवश्य करूँगा--
''है कौन-सा वह काम, जो तुम बोलते नहीं !
भयभीत हो अत्यन्त, पर मुख खोलते नहीं।''

राहु- स्वामी ! भूख लगते ही आज जब मैं सूर्यलोक पहुँचा..... ......

इन्द्र- हाँ-हाँ बोलो, तुम चुप क्यों हो गये? बताओ-सूर्यलोक में क्या हुआ?

राहु- बस स्वामी ! यही न पूछिये। हृदय काँप रहा है। लगता है-पैरों के नीचे से आधार ही खिसकता जा रहा है, जिह्वा कुछ कहने के पहले ही जवाब दे रही है। स्वामी ! वह बालक नहीं-मेरा काल है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र- (आश्चर्य पूर्वक) क्या कहा ? बालक ? कैसा बालक ? किसका बालक है, जो तुम्हारा काल है ? राहो ! स्पष्ट कहो। यहाँ किसी का भय नहीं है। जो कुछ कहना चाहते हो, कह डालो। सारा समाधान अविलम्ब करूँगा। तुम अब कोई चिन्ता न करो।

राहु- स्वामी ! जैसे ही मैं सूर्यलोक पहुँचा, देखा-सूर्य के रथ पर एक अद्‌भुत बालक बैठा था। मुझे देखते ही तुरन्त बाज के समान मुझ पर टूट पड़ा।

इन्द्र- (साश्चर्य) तुम पर वह बालक टूट पड़ा ? अरे, वह कैसा बालक है? जो तुम्हें देखते ही ज्वालामुखी के समान फूट पड़ा ?

(कुछ सोचकर) तुम चिन्ता मत करो। राहो ! मैं सब कुछ समझ गया। मैं अभी तुम्हारे कष्ट का निवारण करता हूँ। (मन्द स्वर में अपने आप) राहु और केतु-दोनों अंगहीन हैं, इसलिये नियमानुसार इनकी क्षुधा-शान्ति के लिये सूर्य और चन्द्र को निश्चित किया गया है। इस दैविक नियम में बाधा उत्पन्न करने वाला अवश्यमेव अपराधी है। अपराधी को दण्ड देना राजा का ही कर्तव्य है। (प्रकट) राहो ! मैं अभी सूर्य-लोक जाकर बालक को दण्ड देता हूँ। अब तुम निश्चिन्त रहो।

(स्वगत)

"केतु का धड़ है, मगर है राहु का तो धड़ नहीं,
चाहिये भोजन सभी को, ये निरा हैं जड़ नहीं।
बैर जो इनसे करे वह शत्रु मेरा घोर है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(वज्र को देखते हुए)

शत्रु-बध में वज्र यह मेरा सदा पुरजोर है।।"

(राहु से) राहो ! जाओ-विश्राम करो। मैं सीधे सूर्यलोक ही जाता हूँ। तुम्हारे अपराधी बालक को अभी मृत्यु की गोद में सुलाता हूँ।

"अस्त-ध्वस्त कर दूँगा मैं बालक की सारी चाल को।
कोई रोक नहीं सकता है बालक के इस काल को।।"

(वज्र-हस्त इन्द्र का त्वरित प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

(नेपथ्य से गायन)

चले द्रुत सूर्यलोक सुरराज,
नया कर्तव्य आ पड़ा आज।
देख कर शासन में अन्धेर,
न उनको रुची रंच भी देर।।
राहु पा जाये जिससे न्याय,
उन्हें करना है वही उपाय।
उठाते हुए महा तूफान,
इन्द्र जा पहुँचे तड़ित्-समान।।

(धीरे-धीरे ध्वनि शांत होती है)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : अष्टम

(परदा खुलता है)

(सूर्यलोक)

(सूर्यदेव अपने रथ पर बालक सहित बैठे हैं, इन्द्र का आगमन, इन्द्र को देखते ही बालक का उन पर झपटना)

इन्द्र- (रोष पूर्वक) ठहर बालक ! अब मैं तुझे तेरी धृष्टता का मजा चखाता हूँ, इसी वज्र से तुझे यमलोक पहुँचाता हूँ।

(इन्द्र द्वारा वज्र-प्रहार, व्रज बालक की हनु में लगता है, बालक का गिरना, पवनदेव का आकर बालक को थामना, इन्द्र का पलायन)

- दृश्य-रास्ता-

पवनदेव- (बालक को गोद में लिये हुए)

(स्वगत) अनर्थ ! घोर अनर्थ ! राजा और उसका इतना अनुचित न्याय! एक अबोध बालक के प्रति इतना क्रूर व्यवहार ! मैं इसे कदापि सहन नहीं कर सकता। मैं देवराज को इस अन्याय का मजा चखाऊँगा। (बालक की ओर देखकर) बालक की स्थिति गम्भीर है। पहले इसकी समुचित सुरक्षा कर लूँ। उसके बाद ही इन्द्र को दण्ड देने की व्यवस्था करूँगा। (सामने की ओर देखना)

(केशरी का प्रवेश)

पवनदेव- (केशरी को देखकर) चलो, अच्छा हुआ कि बालक के पिता केशरी आ ही गये। आइये-आइये केशरी जी ! आप ठीक समय पर आ गये। मैं आपके पास ही आने वाला था।

केशरी- (बालक को देखकर) अरे ! यह मेरा लाल यहाँ कैसे ? मैं तो इसे ढूँढ़ ही रहा था। पवनदेव ! मेरे पुत्र को यह क्या हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया ?

पवनदेव- केशरी ! बालक इस समय गम्भीर स्थिति में है। आपका यह नन्हा-मुन्ना बालक सूर्यलोक में था। देवराज इन्द्र ने इस पर वज्र से प्रहार किया; इसलिये यह इस समय मूर्च्छित है। आगे क्या होगा? बाद में सोचा और किया जायगा। आप इसे लेकर तुरन्त इस गिरि-गुफा में छिप जायें।

केशरी- (बालक को गोद मे लेते हुए) अरे अधम, निर्दयी इन्द्र ! तूने यह क्या कर डाला? फूल से भी कोमल मेरे इस बालक ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तूने वज्र का प्रहार कर इसे मार डाला।

पवनदेव- भाई केशरी ! बालक केवल मूर्च्छित है। वज्र बालक की हनु पर लगा है। आप इसे लेकर तुरन्त छिप जायँ; अन्यथा अभी भी बालक संकट में है।

केशरी- अच्छा नाथ ! मैं जाता हूँ।

(बालक को लेकर केशरी का प्रस्थान और गिरि-गुफा में छिपना)

पवनदेव- (स्वगत) आज देवराज के क्रूर कर्म से सारा देवलोक काँप उठा है। अभिमानी इन्द्र ने बालक पर वज्र से प्रहार कर वज्र का भी अपमान किया है। (आवेश में) ठहर, इन्द्र! ठहर, मैं तुझे तेरे अभिमान का मजा चखाऊँगा। आकाश-पाताल और मृत्युलोक में मैं वायु-गति को रोक दूँगा। देखता हूँ-तुझमें और तेरे वज्रबल में क्या प्रभाव है। (प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : नवम

(परदा खुलता है)

[ब्रह्मा, नारद, इन्द्र आदि देवता एक साथ बैठे हुए]

ब्रह्मा- देवराज इन्द्र ! तुम्हारा यह कहना सत्य है कि तुमने वज्र का प्रयोग अपनी प्राण-रक्षा में किया है; परन्तु एक अबोध बालक पर ऐसे प्रबल अस्त्र का प्रयोग कर तुमने भंयकर भूल भी की है।

इन्द्र- मेरे अपराधों को क्षमा कर दें विधाता ! मुझे मेरा अपराध स्वीकार है। इसके लिये जो भी दण्ड-विधान आप करें, उसके लिये यह अपराधी इन्द्र तैयार है।

(पवनदेव का प्रवेश)

पवनदेव- (आकर) इन्द्र ! तुम्हारा अपराध क्षम्य नहीं है।

इन्द्र- (साञ्जलि) नहीं पवनदेव ! नहीं। मैं क्षमा नहीं चाहता। मुझे दण्ड दीजिये। मैं अपराधी हूँ। मुझे मेरे अपराध का दण्ड मिलना ही चाहिये।

ब्रह्मा- पवनदेव ! अब आप ही इस गम्भीर समस्या का समाधान करें।

पवनदेव- पितामह ! यदि बालक का कुछ अनिष्ट हुआ तो समझ लीजिये-घोर अनर्थ हो जायेगा।

"बालक दुखी रहा तो सब खेल खत्म समझो।
धर्मोद्धार तो क्या, त्रयलोक भस्म समझो।।"

ब्रह्मा- मैं भी यही सोच रहा हूँ। आओ-हम सभी मिलकर बालक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कल्याण की प्रार्थना करें।

सब- (एक साथ) हाँ-हाँ नाथ ! बालक के कल्याण से तीनों लोकों का कल्याण है।

(सभी का ध्यानपूर्वक प्रार्थना करना)

"जो सभी में है रमा, जिसमें रमा संसार है।
जो सभी का जन्मदाता और पालनहार है।।
जो सभी में प्राण बन कर है निरन्तर डोलता।
जो करुण रस में दया का दिव्य रस है घोलता।।
है भरी संजीवनी जिसके अलौकिक प्यार में।
नाचता आनन्द बन कर जो स्वयं संसार में।।
पूर्णतम परमेश वह हम आर्तों को त्राण दे।
प्रेम का अमृत पिलाकर विश्व को कल्याण दे।।"

(चैतन्य दशा में बालक को गोद में लिये हुये केशरी का प्रवेश)

(सबका बालक को शीश झुकाना)

ब्रह्मा- मैं, बालक को वरदान देता हूँ कि यह बालक दैविक गुणों से पूर्ण सम्पन्न हो।

सूर्यदेव- मैं सूर्यदेव, बालक को वरदान देता हूँ कि यह बालक तीनों लोकों में विद्या और विनय का निधान हो।

पवनदेव- मैं पवनदेव, इस बालक को वर देता हूँ कि यह बालक मुझसे बढ़कर शक्तिमान और गतिमान हो।

अग्निदेव- मैं अग्निदेव, इस बालक को सदैव के लिये अपने से अभयदान देता हूँ।

वरुणदेव- मैं वरुणदेव, बालक को जलशक्ति से निर्भयता का वरदान देता हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्षपति- मैं यक्षपति कुबेर, इस बालक को धन-धान्य से सम्पन्न करता हूँ।

ब्रह्मा- (बालक की ओर देखकर) वज्र के प्रभाव ने बालक का हनु भंग कर दिया है। अतः यह हनुभंगधारी 'हनुमान' नाम से तीनों लोकों में विख्यात होगा। पवनदेव ने इसकी प्राण-रक्षा की, अतः 'पवनकुमार' भी कहा जायगा-

"बालक नहीं नादान, यह अवतार है भगवान का।
सिद्ध्ध होंगे काम, होगा भक्त जो हनुमान का।।"

[आकाश से पुष्प-वर्षा होना]

(सबका जय-जयकार करना)

समवेत स्वर- बोलो हनुभंगधारी हनुमान की जय !
बज्र अंग-धारी बजरंगी की जय !!
महावीर बलवान हनुमान की जय !!!

(यवनिका-पतन)

(नेपथ्य में गायन)

"जो भी प्रभु की भक्ति जगत में शुचि मन से अपनाता है,
उसका सारा क्लेश-कष्ट-वन पल भर में कट जाता है।
जो पृथिवी पर अहंभाव के बीज विषैले बोयेगा,
प्रभु से हो कर दूर, चूर मद में जीवन-रस खोयेगा।
जीवन का फल है अपने को अपने में ही पाने में,
अपना जान सभी को अपना निर्मल प्यार लुटाने में।
भानुदत्त 'मधुरेश' रसिक है ऐसे पावन प्राणी का,
प्राप्त हो गया आँचल जिसको प्रेम-भक्ति कल्याणी का।।"

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : दशम

(केशरी का भवन, अंजना और केशरी का वार्तालाप)

केशरी- (कुछ चिन्तित-सा होकर)
प्रिये ! आजकल हनुमान बड़ी दुष्टता कर रहा है।

अंजना- मेरा लाल हनुमान, और दुष्टता ? स्वामी ! आप यह क्या कह रहे हैं?

केशरी- हाँ-हाँ प्रिये ! मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूँ। आजकल हनुमान प्रातः अरण्य में जाकर आश्रमों में उत्पात करता है। साधु-संतो के वस्त्रों और कमण्डलों को हटा देता है, उठाकर इधर-उधर छिपा भी देता है।

अंजना- साधु-संतों के वस्त्र-कमण्डलों को क्यों हटाता है? उनसे क्यों रुष्ट है ? आखिर उन्हें क्यों चिढ़ाता है ?

केशरी- बस, केवल इसलिये, कि साधु परस्पर लड़ें और एक साधु दूसरे साधु को चोर कहे।

अंजना- तो, स्वामी ! इससे हनुमान को क्या मिलता है ?

केशरी- मिलेगा क्या ? केवल साधुओं को लड़ाकर आनन्द लेता है।

अंजना- अच्छा, स्वामी ! मेरा हनुमान निरा बच्चा है। उसे क्षमा करो। (एक ओर से आते हुए हनुमान को देखकर) देखिये-सामने मेरा लाल हनुमान आ रहा है। आप उसे कुछ न कहें। मैं अपने लाल को समझा लूँगी।

(हनुमान का आकर माता-पिता के चरणों को छूकर बैठना)

हनुमान- मातृ-पितृदेव के श्रीचरणों में पुत्र हनुमान का प्रणाम।

अंजना-केशरी- (एक साथ) चिरंजीव वत्स ! भगवान तुम्हें अमर रखें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- देखो माँ ! आरण्यक साधु मुझे अरण्य में घूमने से रोकते हैं। जब देखो-मेरे पीछे पड़े रहते हैं। मुझे वन में देखते ही मारने दौड़ते हैं। माँ ! अब मैं भी उन्हें मार दूँगा।

अंजना- नहीं-नहीं, मेरे लाल ! तुम्हें तो साधु-सन्तों की सेवा करनी चाहिये, उनकी बात माननी चाहिये। उन्हें सताना या मारना पाप है बेटा !

केशरी- बेटा ! साधु तुम्हें इसीलिये डाँटते हैं जो कि तुम उन्हें चिढ़ाते हो, कष्ट पहुँचाते हो।

हनुमान- नहीं माँ ! मैं उन्हें जान-बूझकर कष्ट नहीं पहुँचाता हूँ।

अंजना- हाँ बेटे ! भले लोग कभी भी साधु-सन्तों को नहीं सताते, समझे ? बेटा ! उनकी सेवा करनी चाहिये।

हनुमान- माते ! मैं आज राम-कथा रात भर सुनूँगा। तुम रात भर सुनाओगी न माँ !

अंजना- हाँ-हाँ मेरे लाल, मैं जानती हूँ कि तुम रामकथा के प्रेमी हो। मैं आज देर रात-तक तुम्हें राम-कथा सुनाऊँगी। चलो-मेरे साथ कुछ खा लो।

हनुमान- (मचलकर) हाँ-हाँ चलो माँ! भूख भी बहुत लगी है।

अंजना- चलो बेटा! चलो।

(हनुमान-अंजना का एक ओर प्रस्थान, दूसरी ओर से दो साधुओं का आवेशपूर्वक आगमन)

पहला साधु- (रोष सहित) देखो केशरी! तुम अपने पुत्र हनुमान को मना कर दो कि वह हम लोगों की तपोभूमि में न जाया करे।

दूसरा साधु- (आँखें चढ़ाकर) नहीं तो जानते हो-क्या होगा?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला साधु- यही,..........कि हम लोग उसे शाप दे देंगे।

केशरी- (हाथ जोड़कर) नहीं महाराज ! ऐसा नहीं। आप लोग मेरे हनुमान को क्षमा कर दें। शाप न दें महाराज ! नहीं तो हम लोग जीवित नहीं रहेंगे।

पहला साधु- देखो केशरी ! तुम्हारे हनुमान के कारण आज साधुओं के दो दलों में जमकर मारपीट हो गयी।

दूसरा साधु- अरे, कहाँ-तक कहें ? चिमटे टूटे, डंडे टूटे, कितनों की खोपड़ियाँ फूटीं और कितनों की टाँगें टूटीं।

केशरी- हे भगवान ! तू इन सन्तों की रक्षा कर। (हाथ जोड़कर) सम्मान्य सन्तो ! मैं आप लोगों को हाथ जोड़ता हूँ। आप बालक को क्षमा कर दें। मैं हनुमान को रोकूँगा कि वह आप लोगों की तपोभूमि में न जाय।

(इसी बीच कुछ अन्य लोग आ जाते हैं)

पहला साधु- एक दिन कई साधुओं ने मिलकर तुम्हारे हनुमान को पकड़ कर आँवले के एक पुराने पेड़ में बाँधा भी था।

दूसरा साधु- अरे महाराज ! उस दिन की गाथा न सुनायें। मेरे सैकड़ों वर्ष पुराने आँवले के पेड़ को मूली-गाजर की भाँति उखाड़ कर हनुमान चला आया।

पहला साधु- और उसे पेड़ में बाँधना व्यर्थ हो गया।

दूसरा साधु- उस तपोभूमि में हजारों सन्तों का अखाड़ा है।

(हनुमान का प्रवेश)

हनुमान- (हाथ जोड़कर) सभी सन्त-सज्जनों को केशरीनन्दन हनुमान का प्रणाम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों साधु- (एक साथ) चिरंजीव ! सदा प्रसन्न रहो।

हनुमान- आप दोनों को देखकर बहुत प्रसन्न हूँ।

पहला साधु- मिलने पर ऐसे मिलते हो, मानो हम लोगों के परम भक्त हो परन्तु कर्म सदैव शत्रु जैसा करते हो।

दूसरा साधु- इस बालक को अपने बल पर बड़ा घमण्ड है।

पहला साधु- तो क्या ? इसका अपने बल पर घमण्ड मिथ्या है !

दूसरा साधु- मिथ्या नहीं, अक्षरशः सत्य है।

पहला साधु- यही तो हम लोगों के लिए कष्टकारी है।

दूसरा साधु- अच्छा, तो सुनो हनुमान ! आज पूरे साधु-समाज की ओर से तुम्हें शाप दिया जा रहा है कि तुम सदैव अपने शक्ति-सामर्थ्य को स्वयं भूले रहोगे। जब कोई दूसरा तुम्हें तुम्हारे ही बल-सामर्थ्य का स्मरण करायेगा तभी तुम अपने बल का प्रयोग कर सकोगे; अन्यथा; सब कुछ भूले ही रहोगे।

केशरी- (हाथ जोड़कर) बस, महाराज ! क्षमा ! बालक उद्दण्ड होते ही हैं। अब आप लोगों को इस बालक से कष्ट नहीं होगा महाराज !

पहला साधु- ठीक है। बालक को रोकने का अविलम्ब उचित प्रबन्ध करो। हम लोग चलते हैं, ध्यान रखना।

केशरी- हाँ-हाँ महाराज ! अवश्य प्रबन्ध करूँगा।

दूसरा साधु- अच्छा, अब हम जा रहे हैं। फिर ऐसा अवसर न आये।

केशरी- सन्त-समाज को प्रणाम।

दोनों साधु- (एक साथ) प्रसन्न रहो। (एक ओर से प्रस्थान)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[दूसरी ओर से अंजना का प्रवेश]

अंजना- (पास आकर) स्वामी ! साधु-समाज का क्या कथन है?

केशरी- प्रिये ! तपोवन के सभी सन्त तुम्हारे लाड़ले हनुमान की करतूतों से त्रस्त हैं। मैं तो यही सोचता हूँ कि बालक को शिक्षा-दीक्षा के लिये कहीं अन्यत्र भेज दिया जाय।

हनुमान- (हाथ जोड़कर) पिताश्री ! मैं आपसे ऐसी आज्ञा माँगने ही वाला था। आपका विचार उत्तम है। सारी शिक्षायें गुरु सूर्यदेव से प्राप्त हो ही चुकी हैं। अब मेरी इच्छा कुछ राजनीति सीखने की है।

केशरी- हाँ वत्स ! तुम ठीक कहते हो। मैं तुम्हें राजनीति सीखने की उचित व्यवस्था किये देता हूँ।

हनुमान- पिताश्री ! सुना है पम्पापुर में वानरराज सुग्रीव के पास राजनीति पढ़ने और सीखने-दोनों की सुविधा है।

केशरी- हाँ, तुम्हारा कथन ठीक है। मेरे भी विचार से तुम्हारे लिये वह स्थान उत्तम रहेगा। इस सम्बन्ध में अपनी माता की भी सहमति ले लो।

अंजना- (हँसकर) जिस बात पर पिता-पुत्र दोनों सहमत हैं, उसे भला मैं क्यों रोकूँगी ?

हनुमान- नहीं माँ ! आपकी सहमति और आशीर्वाद सर्वोपरि है।

अंजना- वत्स ! तुम ठीक कहते हो। तुम्हारा व तुम्हारे पिताश्री का विचार संगत है।

हनुमान- माता ! इस शुभ कार्य के लिये अब मैं आप लोगों का आशीर्वाद चाहता हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशरी- तो क्या तुम्हारा विचार आज ही जाने का है ?

हनुमान- हाँ पिताश्री ! यदि आप लोग अनुमति दें, तो प्रस्थान करूँ-आज ही जाने का मन है-शुभस्य शीघ्रम् !

केशरी- (पत्र लिखकर हनुमान को देते हुए) अच्छा तो पुत्र ! आशीर्वाद के साथ मेरा यह पत्र भी लो। इसे सुग्रीव को दे देना।

(पत्र लेकर हनुमान का माता-पिता को प्रणाम करना)

हनुमान- माते ! (पैर छूकर) चरणस्पर्श।

अंजना- सकुशल चिरजीवी रहो वत्स !

हनुमान- (पिता के चरणों में शीश झुका कर) पिताश्री ! अब जाता हूँ।

केशरी- जाओ वत्स ! यशस्वी, प्रतापी तथा चिरजीवी बनो।

(हनुमान का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

(नेपथ्य से गायन)

माता-पिता का शुभाशिष पाकर,
पम्पापुरी हनुमान चले।
जीवन ज्योतित हो जिससे
'मधुरेश' वही मुद मान चले।।
धर्म के कर्म का मर्म महत्तम,
जो है - उसे पहचान चले।
जन्म लिया जिस हेतु, वही-
करने के लिये प्रण ठान चले।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंक द्वितीय

दृश्य : प्रथम

(पर्दा खुलता है।)

(पम्पापुर में सुग्रीव का दरबार)

[प्रहरी का प्रवेश]

प्रहरी- (साञ्जलि) स्वामी ! वानर-विशिष्ट केशरी का पुत्र हनुमान द्वार पर उपस्थित है।

सुग्रीव- (प्रसन्न अधीरतापूर्वक) प्रवेश कराओ।

(प्रहरी का प्रस्थान, हनुमान का प्रवेश)

हनुमान- (हाथ जोड़कर) राजनीति-विचक्षण वानरराज को केशरी-पुत्र हनुमान के प्रणाम !

सुग्रीव- आयुष्मान् बन्धुवत्स ! आओ-स्वागत है।

(सबको सविनय नमन करके हनुमान का बैठना, सुग्रीव को पत्र देना; सुग्रीव द्वारा पत्र पढ़ा जाना)

सुग्रीव- हनुमान ! तुम्हारे आने से मेरे दक्षिण अंग स्फुरित हो रहे हैं। तुम्हें शिष्य रूप में पाकर मुझे लगता है कि मैंने सब कुछ पा लिया।

हनुमान- (सविनय) आप से राजनीति का प्रसाद पाकर मैं उपकृत होऊँगा।

सुग्रीव- अच्छा, अब चलो-कुछ खा-पीकर विश्राम करो।

(सभी का प्रस्थान)

[यवनिका-पतन]

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वितीय

(पर्दा खुलता है।)

(स्थान-ऋष्यमूक पर्वत-शिखर)

(हनुमान, जाम्बवन्त, नल-नील आदि के साथ सुग्रीव चुपचाप चौकन्ना बैठे हैं)

[एक ओर से राम-लक्ष्मण का धनुष-बाण लिये हुए प्रवेश]

सुग्रीव- (चौंककर दूर की ओर अँगुली से लक्षित करते हुए) - हनुमान ! अरे, देखो-उन दो धनुर्धर युवकों को देखो। मुझसे बैर मानने वाले बन्धु बालि ने ही कहीं इन्हें न भेजा हो? वह तो मेरा काल बना बैठा है।

हनुमान- नहीं, वानरराज ! मेरे विचार से ये दोनो बालि के भेजे हुए, नहीं लगते; क्योंकि इन्होंने धनुष की प्रत्यंचा उतार रखी है। इन्हें देखने से ऐसा लगता है कि ये दोनों तेजस्वी राजकुमार हैं जो कि भटक कर पथ की खोज में इधर आ पहुँचे हैं।

सुग्रीव- (उद्विग्नतापूर्वक) किन्तु मेरा मन तो शंकित है हनुमान ! तुम राजनीति में भी पूर्ण पटु हो। वेष बदल कर पता करो-कौन हैं ये दोनो?

हनुमान- वैदिक ब्राह्मण पर क्षत्रिय बाण नहीं चलाते। अतः मैं बटु-वेष धारण करके ही जाता हूँ।

(बटु-वेष धारण करके हनुमान का प्रस्थान)

हनुमान- (समीप पहुँचकर) [शिर नवा कर हाथ जोड़े हुए] आप दोनो क्षत्रिय वेष में कौन हैं? श्याम-गौर वर्ण आप दोनों किशोर एवं अत्यन्त कोमल अंगों वाले हैं। कँकरीली-कँटीली इस वनभूमि में आप नंगे पैर पैदल क्यों चल रहे हैं ? आप कोई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव हैं, गन्धर्व हैं, यक्ष हैं या नाग ? अथवा फिर आप दोनों मनुष्य रूप में नर-नारायण ही हैं?

साँवला किशोर- हम दोनो अयोध्यानरेश श्रीमान् दशरथ के पुत्र हैं। पिता की आज्ञा मानकर हम वन में आये हुए हैं। मेरा नाम राम है और यह मेरा कनिष्ठ भाई लक्ष्मण है (लक्ष्मण की ओर संकेत)। मेरी पत्नी वैदेही सीता को यहाँ किसी निशाचर ने हर लिया है। हम दोनों उसे ही यहाँ खोजते फिर रहे हैं। विप्रवर ! मैंने अपना परिचय दिया। अब आप भी अपना अभिज्ञान दें।

(प्रभु राम के चरणों में हनुमान का साष्टांग प्रणाम, हनुमान का भाव-विह्वल एवं रोमांचित होना)

हनुमान- (हाथ जोड़कर) प्रभो ! क्षमा करें-मैं पहले आपको पहचान नहीं पाया। एक तो मैं मन्दमति, मोह-मूढ़ हूँ। हृदय में कुटिलता और अज्ञान का अन्धकार भरा है। दूसरे, हे दीनबन्धो ! आपने भी मुझे भुला दिया। स्वामी ! जीव तो आपकी माया के प्रबल-पाश में जकड़ा है। उससे वही पार पा सकता है जिस पर आपकी अकारण अनुकम्पा हो। (गला रुँध जाना)

राम- (सस्मित) आगे कहो। क्या अभिप्राय है तुम्हारा?

हनुमान- (धैर्य धारण कर) स्वामी ! वैसे तो मुझमें अनेक अवगुण हैं; किन्तु आप अपना सेवक जानकर मुझे अवश्य अपनायेंगे-यही मुझे पूर्ण विश्वास है। मैं आपको पाने के लिये कोई भजन-साधन या उपाय नहीं जानता। मैं तो सब प्रकार से आपका हूँ। आप ही मेरी गति हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ब्राह्मण वेष त्याग कर हनुमान का निजी रूप में होना तथा अधीरता-पूर्वक राम के चरणों में शिर रखना। राम द्वारा हनुमान को उठाकर गले लगाना, दोनों को अश्रुपात होने लगता है)

राम- प्रिय हनुमान ! तुम अपना मन छोटा न करो। तुम तो मुझे लक्ष्मण से दोगुना प्रिय हो। वैसे तो मैं सभी के लिये समदर्शी हूँ किन्तु मेरा सेवक मुझे अनन्य प्रिय है। मैं अपने सेवक के लिये स्वयं सेवक बन जाता हूँ। मेरा सेवक मेरे हृदय में रहने का अधिकारी है।

हनुमान- (हाथ जोड़कर) प्रभो ! आप मेरे अवगुणों की उपेक्षा करके मुझ पर प्रसन्न हैं। मैं आपका चिर ऋणी हूँ। नाथ ! ऋष्यमूक गिरि पर वानराज सुग्रीव का निवास है। वह आपका दास है। आप उसे दीन जान कर अभय प्रदान करें। आपसे मैत्री का हाथ पाकर वह देवी सीता की खोज भी करायेगा। आप उसे उपकृत करें। मैं आपको अपनी पीठ पर ले चलता हूँ।

(हनुमान द्वारा राम-लक्ष्मण को पीठ पर बैठाकर सुग्रीव के पास आना)

सुग्रीव- (सबके साथ खड़े होकर हाथ जोड़े हुए) वानरराज सुग्रीव की कुटी में आप दोनो का स्वागत है।

(राम-लक्ष्मण को आसन पर बैठाकर सुग्रीव का स्वयं बैठना)

हनुमान- (खड़े रहकर) आप दोनो राम-लक्ष्मण अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र हैं। आप दोनो के साथ वन में आयी देवी सीता का किसी ने हरण किया है। उन्हीं की खोज में आपका इधर आगमन हुआ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुग्रीव- (सविनय) आपके आगमन से मैं कृतार्थ हुआ। (हनुमान की ओर देखकर) केशरीनन्दन ! हमें क्या करना चाहिये?

हनुमान- (कुछ सोचकर) आप अपने राज्य, वैभव एवं वनिता से भी वंचित हैं। ऐसी स्थिति में मेरा विचार है कि आप राघवेन्द्र राम से मैत्री सम्बन्ध कर लें क्योंकि समान स्थिति वालों की मैत्री मुद-मंगलकारिणी होती है-

'समानसख्यं श्रेयष्करं स्यात्'।

सुग्रीव- हनुमान ! जो कह रहे हो, वही ठीक है। मैं राघवेन्द्र से मैत्री करने को प्रस्तुत हूँ।

(हनुमान द्वारा समिधा जलाकर अग्नि की साक्षी में मैत्री की औपचारिकता पूरी करना,) [राम-सुग्रीव का परस्पर हाथ मिलाना और गले मिलना]

(यवनिका-पतन)

(नेपथ्य से)

राम और सुग्रीव में हुई मित्रता आज।
दोनो के सहयोग से होंगे पूरे काज।।
दो सुजनों के मेल से खिलते सुख के फूल।
फलती है मनकामना, कट जाते सब शूल।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : तृतीय

(पर्दा उठता है)

[स्थान-ऋष्यमूक पर सुग्रीव की सभा]

राम- केशरीनन्दन हनुमान ! कल रात में तुमसे अहम्मूढ़ बालि के अन्याय को सुन कर मुझे बड़ी व्यथा है। भाई पर बलपूर्वक अत्याचार करने वाले बालि को सीधा करना होगा। मुझे सुग्रीव के प्रति पूरी सहानुभूति है।

हनुमान- (हाथ जोड़कर) प्रभो ! वानरराज के परित्राण में आप ही समर्थ हैं।

सुग्रीव- नहीं हनुमान ! रघुनाथ जी से मेरे लिये श्रम न कराओ। तुम तो जानते ही हो-बालि बड़ा बली है। उसने महिषरूपधारी दुन्दुभि राक्षस को पैर पकड़ कर ऐसा फेंका कि वह सात योजन दूर जाकर गिरा था। उसका अस्थिपुंज ही बालि के बल का प्रमाण है।

राम- वानरराज ! कहाँ है दुन्दुभि का वह अस्थि-पुंज ?

सुग्रीव- (कुछ दूर जाकर अंगुली से लक्षित करते हुए) राघवेन्द्र ! वह- उधर देखें, इस पर्वत शिखर से जो सात ताड़-वृक्ष एक पंक्ति में दिखाई दे रहे है; दुन्दुभि का अस्थि-पुँज इन्हीं से घिरा हुआ है। किन्तु आप.............।

राम- (सस्मिति) वानरराज ! आप संकोच न करें। मैं अभी..... ....।

(राम द्वारा धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर एक बाण से अस्थिपुंज को आकाश में उड़ाकर दूर फेंक देना तथा दूसरे बाण से सातों ताड़वृक्षों को पल भर में काट गिराना)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुग्रीव- (आश्चर्यपूर्वक दौड़कर पैरों में गिर पड़ता है) प्रभो ! मैने आपकी बाणशक्ति पर सन्देह करके महान अपराध किया है, क्षमा करें स्वामी !

राम- मित्र ! तुम मेरे ऊपर विश्वास करके शोकमुक्त हो जाओ। मैं तुम्हारे लिये सर्वथा सहायक होऊँगा, क्योंकि-

"जो नहीं निज मित्र के दुख का घटाता भार है।
देखना है पाप उसको औ' उसे धिक्कार है।।
मित्र है सच्चा वही जो मित्र को शुचि प्यार दे।
दुःख-सागर में पड़ा जो मित्र, उसको तार दे।।"

सुग्रीव- (आश्वस्त होकर) प्रभो ! आप मेरी विवशता को, व्यथा को भली-भाँति समझते हैं। मैं तो आपका अनुचर हूँ।

राम- नहीं सुग्रीव ! अनुचर नहीं-तुम्हें मुझसे आगे चलना होगा। तुम जाओ, और जाकर बालि को युद्ध के लिये ललकारो। जब वह किष्किन्धा से बाहर आकर तुमसे भिड़ेगा-तब मैं उसे अपने बाण का भक्ष्य बनाऊँगा।

(गदा लेकर सुग्रीव का प्रस्थान, बालि को ललकारना, ललकार सुनकर बालि द्वारा सुग्रीव का पीछा करना, नगर से बाहर सुग्रीव-बालि का भीषण युद्ध, आहत सुग्रीव का चिल्लाते हुए पलायन)

सुग्रीव- बचाओ-रघुबीर ! बचाओ। (निकट आकर) अरे वाह मित्र ! वाह ! !

राम- (सहजतापूर्वक) क्या हुआ वानरराज !

सुग्रीव- (आक्रोश से भरकर) आप तो मेरा उपहास कर रहे हैं रघुनाथ! मुझे काल के मुख में भेज कर अब........? मैं तो पहले ही जाने के पक्ष में नहीं था। किन्तु आपके वचनों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर ही विश्वास करके गया था। क्या आपने इसीलिये मुझे भेजा था?

राम- नहीं मित्र सुग्रीव ! आप मुझ पर अविश्वास न करें। वस्तुतः आप दोनों भाइयों के रूप में इतनी साम्यता है कि मैं युद्ध करते हुये दोनों भाइयों में अन्तर न कर सका कि आप दोनों में बालि कौन है?

(हनुमान को देखते हुए) केशरीनन्दन! जरा जलबल्लरी के फूलों की माला तो लाओ। (हनुमान का प्रस्थान)

(जलबल्लरी की पुष्पमाला बनाकर हनुमान का आना)

हनुमान- (राम को माला देते हुए) लीजिये स्वामी !

राम- (हनुमान से माला लेकर सुग्रीव को पहनाते हुए)

वानरराज ! अब तुम फिर जाओ और बालि को ललकार कर बाहर लाओ। इस बार इस माला के कारण तुम पहचाने जाओगे और बालि के प्राण मेरा यह बाण पी जायेगा।

(माला पहने हुए सुग्रीव का प्रस्थान, बालि को ललकारना, बालि-सुग्रीव का युद्ध, वृक्ष की ओट से राम का बालि पर बाण-संधान)

[चिल्लाते हुए आहत बालि का गिरना]

बालि- अरे राम ! तुमने यह क्या अन्याय किया ?

राम- (गम्भीरतापूर्वक) कैसा अन्याय ? वानरराज !

बालि- समान दोष वाले दो भाइयों में से एक के प्रति पक्षपात, लड़ते हुए दो योद्धाओं में से एक पर वृक्ष की ओट में खड़े होकर बाण-प्रहार करना। यह तो सभ्य योद्धा का नहीं, ब्याध का कार्य है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम- हाँ वानरराज ! तुम ठीक कहते हो। मैं ब्याध हूँ, लेकिन सबके के लिये नहीं, केवल तुम्हारे जैसों के लिये, जो अपने सत्तामद में चूर होकर न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित की परिभाषा ही भूल जाते हैं और वे न्याय को अन्याय तथा पुण्य को पाप समझने लगते हैं-

"अनुज-बधू भगिनी, सुत-नारी का कन्या-सम नाता है,
सुन रे शठ ! इन पर जो कोई कहीं कुदृष्टि जमाता है।
किंचित् पाप नहीं है उसके प्राणों को पी जाने में,
है अन्याय न, किसी युक्ति से उसकी मूल मिटाने में।।"

बालि- अच्छा, रघुनाथ ! बाण से व्यथित शरीर को अब प्राण छोड़ना चाहते हैं। मैं अपने पुत्र अंगद को आपकी सेवा में सौंपता हूँ। उसे आप अपनाये रहें राम !

राम- मैं तुम्हारे शरीर को अभी उपचार से ब्रण-व्यथा-मुक्त किये देता हूँ। तुम जब-तक चाहो, तब-तक इसी शरीर से आरोग्य सहित आनन्दपूर्वक रहो।

बालि- नहीं, रघुवीर ! नहीं, अब मैं तन त्यागने में ही कल्याण समझता हूँ। मरते समय जिसके नाम का उच्चारण होते ही जीव मुक्त हो जाता है, वही परब्रह्म राम आज मेरे सामने स्वयं विद्यमान है। ऐसा दिव्य-दुर्लभ अवसर मैं नहीं खोना चाहता राम !

(इतना कहकर अपने हाथ से चुभे बाण को निकालता है, बाण के निकलने के साथ ही प्राण पखेरू भी उड़ जाता है, शरीर पर सम्बन्धी जन फूट-फूट कर रोने लगते हैं। चारों ओर करुणक्रंदन गूंजने लगता है।)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम- (विलाप करते हुए सुग्रीव से) वानरराज ! अब तुम भाई के अन्तिम संस्कार की तैयारी करो। इस कार्य में अंगद को भी साथ ले लो।

(रोता हुआ अंगद सहित सुग्रीव का प्रस्थान)

[अंगद और सुग्रीव द्वारा चिता बनाकर बालि का शव-दाह करना चिता से लपटें उठने लगती हैं, सभी स्तब्ध खड़े रहते हैं]

(धीरे-धीरे यवनिका पतन)

(नेपथ्य से)

जलता केवल देह जगत में जो है जलने वाला।
नित्य-सत्य-चैतन्य आत्मा नहीं बदलने वाला।।
विधि का अटल विधान लोक में कोई काट न पाता।
आता है जो देह जन्म ले वही एक दिन जाता।।
माया-मोह-मूढ़ता में ही होता रोना-धोना।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्मय है विभु का कोना-कोना।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्थ

(पर्दा खुलता है)

(स्थान-पम्पापुर के बाहर एक उद्यान)

(राम एक वेदिका पर आसीन हैं। जाम्बवन्त, हनुमान, लक्ष्मण, नल-नील आदि उनके चारों ओर स्थित हैं।)

[सुग्रीव के साथ तारा व अंगद का आगमन, तीनों का रोते हुए राम के चरणों में पड़ना]

राम- (तीनों को आश्वस्त करते हुए) उठो, मनीषियों ने कहा है कि अतीत का शोक नहीं करना चाहिये। भविष्य में क्या होगा- अनिश्चित है, अज्ञात है। अतः वर्तमान को सुधारना चाहिये; क्योंकि वही अपने साथ है। शोक छोड़ो, कर्तव्य पुकार रहा है।

(लक्ष्मण की ओर देखकर)

राम- लक्ष्मण ! जाओ-किष्किन्धा के राजासन पर सुग्रीव का अभिषेक करके अंगद को युवराज घोषित कर दो और फिर यथाकृत सूचित करो।

(लक्ष्मण का सुग्रीव, हनुमान व अंगद सहित प्रस्थान)

(तारा का अधीरतापूर्वक रोना-कलपना)

राम- (दृढ़तापूर्वक) तारा ! जिस शरीर को तुमने जलते हुए देखा उसके लिये इतना शोक ? अब बस करो। देखो, तुम्हारा यह शरीर क्या तुम हो? क्या इस शरीर से भिन्न तुम्हारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ता नहीं ? इस शरीर के साथ 'मैं' 'मेरा' का भाव ही तो माया है और देह की वासना ही जन्म-मृत्यु का कारण है। वही दुख-शोक का भी कारण है।

तारा- (भावाकुल होकर) रघुनाथ ! आपने मेरे पति का वध करके मेरा सौभाग्य हर लिया। मैं अब कहाँ जाऊँ ? क्या करूँ? राम ! ....क्या करूँ?

राम- शुचिव्रते ! धैर्य धारण करो। यदि शरीर ही आत्मा होता तो बालि का भी कभी देहान्त न होता। यह शरीर तो कर्म-भोग एवं कर्मयोग का साधन मात्र है। तुम अपने आपको पहचानो तथा आत्मा को भूल कर अनात्मा के लिये शोक न करो। यहाँ कर्तव्य में ही जीव का अधिकार है।

तारा- (आश्वस्त होकर हाथ जोड़े हुए) प्रभो ! अब तो आप ही हमारी गति हैं।

(एक ओर से सुग्रीव, अंगद, लक्ष्मण व हनुमान का प्रवेश)

(सुग्रीव व अंगद राम के चरणों में प्रणाम करते हैं, राम उन्हें अभयदान करते हैं)

लक्ष्मण- (राम से) आर्य ! अभिषेक यथाविधि से सम्पन्न हो गया। सभी प्रजा-जन प्रसन्न हैं।

सुग्रीव- (तारा के पैर छूकर) सुग्रीव आपका आशीष चाहता है।

तारा- सुख तुम्हारा सहचर बने।

अंगद- (तारा के पैरों में गिर कर) माँ ! प्रणाम करता हूँ।

तारा- (पीठ पर हाथ फेर कर) आयुष्मान्, कीर्तिमान् बनो वत्स!

सुग्रीव- (हाथ जोड़कर राम से) रघुनाथ ! अब आप किष्किन्धा के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज-भवन में पधार कर मुझे कृतार्थ करें। वहाँ आपकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर राजपरिवार धन्य होगा।

राम- नहीं वानरराज सुग्रीव ! मैं वनवास की अवधि तक नगर में नहीं जा सकता।......... अब वर्षा ऋतु आ गयी है, सभी मार्ग जल से भर रहे हैं। अतः पावस भर मुझे प्रतीक्षा करनी होगी। उसके बाद ही वैदेही की खोज में निकलेंगे। सीता न जाने कहाँ-कैसे हो?

सुग्रीव- राघवेन्द्र! आप निश्चिन्त रहें। मैं अभी से देवी सीता की खोज प्रारम्भ करवाता हूँ। मैं अपने विशेष वानर दूतों को सभी दिशाओं में अविलम्ब भेजूँगा। अब तो यह मेरा कर्तव्य और दायित्व है।

राम- ठीक है वानरेन्द्र! (सामने की ओर इंगित करते हुए) मैं तब-तक इस प्रवर्षणगिरि पर वास करूँगा। आप अपना राजकार्य देखें। प्रजा आपका अनुरंजन चाहती है।

सुग्रीव- (साञ्जलि) नाथ! जब-तक देवी सीता का पता नहीं चल जाता, तब-तक सपरिवार मुझे भी अपनी सेवा में रहने की अनुमति दें। प्रवर्षणगिरि पर कन्दमूल-फल-जल की कमी नहीं है। हम सबका एक साथ निर्वाह हो जायगा।

राम- (दृढ़तापूर्वक) नहीं, मित्र! नहीं। तुम सपरिवार किष्किन्धा में ही रहो। किष्किन्धा को तुम्हारी अधिक आवश्यकता है।

हनुमान- (हाथ जोड़े हुए सम्मुख आकर) प्रभो! इस दास को तो अपने चरणों में ही रखें। सेवक स्वामी से दूर कैसे रह सकता है नाथ!

राम- नहीं केशरीनन्दन! अभी तुम वानरराज के राजकार्यों में ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक बनो। मुझसे अधिक अभी इन्हें तुम्हारी आवश्यकता है।

हनुमान- (शिर झुकाकर) अच्छा स्वामी, जो आज्ञा।

राम- (सुग्रीव से) अच्छा मित्र वानरराज! अब तुम सपरिवार किष्किन्धा को प्रस्थान करो। मुझे विश्वास है कि तुम वैदेही की खोज में शीघ्र प्रयास करोगे। जाओ-प्रजा के प्रिय बनो। (सुग्रीव सभी के साथ राम-लक्ष्मण का चरण-वन्दन करके प्रस्थान करते हैं। हनुमान बारम्बार राम के चरणों में शिर नवाकर सुग्रीव का अनुगमन करते हैं।)

राम- (लक्ष्मण से) चलो लक्ष्मण! अब हम प्रवर्षणगिरि पर निवास कर समय की प्रतीक्षा करें।

(दोनों का प्रस्थान)

(धीरे-धीरे यवनिका-पतन)

(नेपथ्य से)

समय बड़ा बलवान जगत में, चलो समय के साथ।
यही सोचकर गिरि पर सानुज बसे राम रघुनाथ।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : पंचम

(मंच पर पर्दा खुलता है)

(स्थान - किष्किन्धा)

(सुग्रीव का दरबार)

(सुग्रीव के सामने आसन पर हनुमान, जाम्बवन्त, अंगद, नल-नील आदि बैठे हैं)

मंत्री- (आसन से खड़े होकर हाथ जोड़े हुए) स्वामी! यदि आज्ञा हो तो कुछ मनोरंजन की व्यवस्था करूँ।

सुग्रीव- मंत्रिवर! जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसी व्यवस्था करो। मुझे कोई आपत्ति नहीं।

मंत्री- प्रहरी ! प्रहरी !

(प्रहरी का प्रवेश)

प्रहरी- (आकर शीश झुकाकर) स्वामी! सेवक सेवा हेतु उपस्थित है। आज्ञा कीजिये।

मंत्री- किसी गायिका नर्तकी को दरबार में प्रस्तुत करो।

प्रहरी- जो आज्ञा नाथ! (प्रस्थान)

(दोनों ओर से दो नर्तकियों का गाते हुए प्रवेश)

(समवेत-गायन)

रे मन! अब तो आँखें खोल,
पल-पल गलता चला जा रहा जीवन-घट अनमोल।
रे मन!अब तो आँखें खोल।।
बीती रात, हुआ प्राची-मुख अरुणोदय से लाल,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुप-मण्डली लगी पूछने कली-कली का हाल।
वन-उपवन में विहग-वृन्द के फूटे मीठे बोल,
रे मन! अब तो आँखें खोल।।
तू कर ले सत्कर्म, धर्म की पकड़ हाथ में डोर,
प्रियतम तुझे पुकार रहा है, तू चल उसकी ओर।
तृप्ति नहीं मृग-जल से होगी, मरुथल में मत डोल,
रे मन! अब तो आँखें खोल।।
छोड़ प्रेम के सुरभित-सुन्दर सहज सलोने फूल,
क्यों चुनता है मान-मोह के महा भयंकर शूल!
उठ कर अपनी श्वास-श्वास को प्रेम-तुला पर तोल,
रे मन! अब तो आँखें खोल।।

(दोनों का शिर नवाकर प्रस्थान)

हनुमान- (सुग्रीव से) महाराज! आप रघुनाथ जी के कार्य को भूल ही गये हैं। अब तो पावस ऋतु भी बूढ़ी हो गयी। (कुछ सोच कर) राजन्! राजाओं के चार अस्त्र होते हैं-साम, दाम, दण्ड और भेद। प्रभु ने अभी केवल दो अस्त्रों का प्रयोग आपके साथ किया है। साम के द्वारा आपसे घनिष्ठ मित्रता जोड़ी, दाम में आपको किष्किन्धा का राजसिंहासन दिया। अब केवल दण्ड और भेद ही शेष हैं। मुझे तो लगता है, कि कहीं आप पर प्रभु को वे दोनों शेष अस्त्र भी न चलाने पड़ें?

सुग्रीव- (सहसा चौंककर कान में अंगुली डाले हुए) बस कीजिये पवन कुमार! बस कीजिये। अब मुझसे नहीं सुना जा रहा है। मेरा हृदय मानो बैठा जा रहा है। मैं अब क्या करूँ बजरंग!-मैने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी भयंकर भूल की है।

हनुमान- हाँ, भूल तो भयंकर ही है किन्तु अभी उसका उपचार संभव है।

सुग्रीव- (साञ्जलि) हे महावीर! अब आप मेरी सहायता करें। आप जैसा कहें-मैं करने को तैयार हूँ।

हनुमान- वानरराज! आप इतने अधीर न हों। मेरा तो आपको यही विमर्श है कि आप सम्भावित संकट से मुक्ति का मार्ग अपनाइये। जैसे प्रभु ने आपको राजा बनाया है वैसे ही आप भी उन्हें माता सीता से मिलवाइये।

सुग्रीव- हे महावीर! आप समस्त वानरी सेना को साथ ले जायें। जहाँ तक सम्भव हो गिरि-गह्वर-गुफा, वन, नगर आदि स्थानों में देवी सीता की खोज करायें। पूरी वानरवाहिनी के प्रत्येक व्यक्ति को सावधान कर दें कि जो माता जानकी का पता लगाये बिना आयेगा, उसे मृत्यु-दण्ड दिया जायेगा।.. .... इस कार्य के लिये एक मास का समय दिया जा रहा है।

हनुमान- ठीक है। आप चिन्ता न करें। हम लोग अभी रघुनाथ जी से मिलकर माता जानकी का पता लगाने जा रहे है। (सभी सभासदों को लक्षित करके) आओ भाई, अब हम लोग चलें और माता जानकी का पता लगायें।

सभी सभासद- (एक साथ) हाँ-हाँ, ठीक है-'शुभाय शीघ्रम्'।

(सभी लोग सुग्रीव से मिलकर प्रस्थान करते हैं)

सुग्रीव- (सभी से) देखना, प्रभु का कार्य है-शीघ्र पूरा कर लेना।

हनुमान- हाँ-ऐसा ही होगा, वानरराज!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी- (एक साथ) बोलो महावीर हनुमान की जय!

(प्रस्थान करते हुए हनुमान के साथ सभी का समवेत गायन)

आओ भाई! अभी सभी हम
सजग खोज-अभियान करें।
सभी दिशाओं को वानर-गण
अलग-अलग प्रस्थान करें।।
माता सीता के दर्शन का
हर सम्भव संधान करें।
नव विहान जीवन में जागे,
कृपा राम भगवान करें।।
पता लगाये बिन सीता का,
अब होगा कल्याण नहीं।
शरण राम की छोड़ लोक में
कहीं हमारा त्राण नहीं।
चलो-चलो साहस बटोर कर,
चलो बन्धु! अविराम चलो।
निर्भय आगे बढ़ो, जोर से
कहते जय श्रीराम ! चलो।।

(स्वर धीरे-धीरे मन्द पड़ता है)

(यवनिका - पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षष्ठ

(पर्दा खुलता है)

(स्थान-किष्किन्धा का राजउद्यान)

(अनेक वानरयूथपों के साथ जाम्बवन्त, अंगद, हनुमान, द्विविद, मयंद नल, नील, गवय, सुषेण इत्यादि एक वृक्ष के नीचे बैठे हैं।)

हनुमान- (खड़े होकर) बन्धुजनो! माता जानकी की खोज के लिये असंख्य वानर अपने-अपने यूथपों के साथ पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर चुके हैं।....अब दक्षिण दिशा को हमें प्रस्थान करना है। आप जानते ही हैं कि दक्षिण में ही राक्षसेश्वर रावण की सिन्धु-रक्षिता लंका है। इसी दिशा में वैदेही के मिलने की विशेष सम्भावना है क्योंकि उनका हरण करके रावण को इसी ओर जाते हुए देखा गया है। अतः हमें इस दिशा का कोना-कोना छान डालना है।

अंगद- (उत्साहित होकर) हाँ, महावीर जी! आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। हमें यही करना होगा।

हनुमान- किन्तु, युवराज! प्रस्थान के पूर्व हमें अपने दल का नायक तो निश्चित करना है, जिसके निर्देशन में हम कृतकार्य हो सकें।

अंगद- (उठकर) मेरे विचार से तो हमारे दल का नायक ऋक्षराज को होना चाहिये। (नल-नील, केशरी इत्यादि को देखते हुए) आप लोगों का क्या विचार है?

सभी वानर- (एक साथ) स्वागत है। स्वागत है। युवराज! आपके निश्चय का स्वागत है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (उल्लसित होकर) आप सभी ने मेरे मन की बात स्वयं कह दी। मैं भी यही चाहता था कि हम सबमें वयोवृद्ध ऋक्षराज के अनुभव का आलोक हमारा पथ प्रशस्त करे। अच्छा, अब हमें अति शीघ्र श्रीराघवेन्द्र की चरणरज लेकर प्रस्थान करना चाहिये। (जाम्बवन्त से) ऋक्षराज! आप हमें आदेश करें।

जाम्बवन्त- (खड़े होकर) आप सभी ने मुझे जो सम्मान दिया है वह आप लोगों का ही बड़प्पन है। मेरे लिये तो यही सबसे बड़ा सुख एवं सौभाग्य है कि मैं श्रीसीतापति राम के किसी काम आ सकूँगा। अब हमें अविलम्ब उनके चरणों में पहुँचना है।

सभी- (एक साथ) हाँ हाँ, अभी चलें। 'शुभस्य शीघ्रम्'।

(जाम्बवन्त के साथ सभी का प्रस्थान। राम के सम्मुख पहुँचकर)

जाम्बवन्त- (हाथ जोड़कर) राघवेन्द्र जी! पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशा को मैथिली की खोज के लिये वानर-दल जा चुके हैं। अब हमारा दल दक्षिण के लिये उद्यत है। आप हमें आदेश एवं आशीर्वाद प्रदान करें। (चरणों में प्रणाम करते हैं)

राम- (आशीर्वाद मुद्रा में) आप लोग यथाशीघ्र अपने अभियान में कृतकार्य होकर मुझको अपने दर्शन से सुखी करें।

(सभी वानर एक-एक करके राम के चरणों में शिर नवाकर प्रस्थान करते हैं। सबके बाद हनुमान राम के चरणों में दण्डवत प्रणाम करके जाने को उद्यत होते हैं।)

राम- (स्नेहपूर्वक हनुमान के कन्धे पर दाहिना हाथ रख कर) आंजनेय! मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह अभीष्ट तुम ही सिद्ध करोगे। तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो। मैं तुम्हारे शीघ्र लौटने की प्रतीक्षा करूँगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (हाथ जोड़कर कृतार्थभाव से) प्रभो! यह हनुमान तो आपका एक तुच्छ सेवक मात्र है। आपके कृपा-बल से ही यह कुछ भी कर सकेगा। आपके नाम-प्रभाव से ही दास यथाशीघ्र इन श्रीचरणों का दर्शन करेगा। (कुछ सोचकर) वैसे भी वानरेन्द्र सुग्रीव ने सभी वानरों को एक मास की अवधि में माँ मैथिली का पता न लगा पाने पर प्राणदण्ड की घोषणा की है।

राम- (अँगुली से मुद्रिका निकालते हुए) हनुमान! लो यह मुद्रिका। वैदेही से भेंट होने पर अपने प्रति विश्वास के लिये तुम उनको दे देना और उनके आश्वस्त हो जाने पर मेरा यह सन्देश सुना देना कि-'हे विदेहनन्दिनी! प्रेम के तत्त्व को मन ही जानता है और राम का मन तो तुम्हारे ही पास है, तुमसे दूर राम का केवल शरीर है। (मुद्रिका दे देते हैं)

हनुमान- (राम-मुद्रिका को सादर मस्तक में छुवाकर अपने शिर के केशपाश में बाँध कर हाथ जोड़े हुए) अच्छा, प्रभो! अब आज्ञा दें। मैं चलूँ। (शिर नवाते हैं)

राम- (अभयमुद्रा में) 'शिवास्ते सन्तु पन्थानः।'

('जयश्रीराम' का घोष करते हुए हनुमान का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तम

(पर्दा खुलता है)

(स्थान-दक्षिण भारत का पर्वतीय क्षेत्र)

(समय : शरद ऋतु का मध्याह्न)

(पर्वत शिखर पर जाम्बवन्त, नल, नील, हनुमान, अंगद इत्यादि व्याकुल मुद्रा में चिन्तामग्न बैठे हैं।)

अंगद- (खड़े होकर सूखे स्वर में) हाँ, अब तो भूख-प्यास का कष्ट सहा नहीं जाता। अरुणोदय से अब-तक हम लोगों ने (चारों ओर दृष्टिपात करते हुए) इस गिरि-प्रान्त में आज एक भी जलाशय, नदी-निर्झर अथवा छायावान् वृक्ष नहीं देखा। जहाँ देखो, वहीं सूखा-ही-सूखा। श्रान्ति एवं प्रचण्ड धूप के प्रभाव से क्षुधा-पिपासा दसगुणा बढ़ गयी है। प्यास की पराकष्ठा से मुख के भीतर काँटे-से उग आये हैं। लगता है, यह प्यास ही हमारे प्राण पी जायेगी।...(हनुमान की ओर देखकर) महावीर जी! अब माँ मैथिली की खोज का क्या होगा?

हनुमान- (उद्विग्नतापूर्वक खड़े होकर) मैं स्वयं इस भीषण संकट से चिन्तित हूँ। यहाँ तो धरती ही प्यास से तड़प रही है। चारों ओर दरारें ही दरारें दीख रही हैं। फल-फूल की कौन कहे, यहाँ के वृक्षों में तो पर्ण भी नहीं हैं......

सब कुछ रूखा-रूखा.......... सूखा-सूखा।

(चारों ओर देखने लगते हैं। सहसा एक शिखरस्थ शुष्क वृक्ष पर दृष्टि गड़ाकर)

हनुमान- वह, उधर देखो-उच्च शिखर पर इस क्षेत्र का उच्चतम वृक्ष दीख रहा है। मैं उस पर अभी चढ़कर जल की सम्भावना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पता करता हूँ।

(हनुमान का उछलते हुए जाना और उच्च शिखरस्थ वृक्ष पर चढ़ कर चारो ओर देखना।)

हनुमान- (एक ओर देखते हुए-स्वगत) अरे, यह क्या? यह तो कोई जल-स्रोत प्रतीत हो रहा है। ये सारस, बक इत्यादि जलपक्षी वहाँ उड़ रहे हैं और वह हरे-भरे वृक्षों का झुण्ड भी वहाँ जल की सम्भावना बता रहा है। (कुछ प्रसन्न होकर) अवश्य ही वहाँ कोई जलाशय होगा। तो अब मैं अपने साथियों को बुलाकर वहीं चलूँ।

(वृक्ष से ही हनुमान का किलकारी देकर सबको बुलाना। किलकारी सुनकर सभी का वहाँ आगमन)

हनुमान- (वृक्ष से उतरकर) साथियो! मुझे जल की सम्भावना का आभास मिल गया है। आप लोग अविलम्ब मेरे साथ चलें। (आगे-आगे चल पड़ते हैं।)

(हनुमान के साथ सभी का प्रस्थान। हरे वृक्षों के निकट पहुँचकर)

जाम्बवन्त- ओह! यहाँ तो हवा भी शीतल है। वृक्ष हरे-भरें हैं। (उड़ते हुए पक्षियों को देखकर) और उधर उस गुफा से निकलते हुए जलविहंग देखो-इनके पंख पानी से भीगे हुए प्रतीत हो रहे हैं।

अंगद- (प्रसन्न होकर) अवश्य इस भू-विवर में कोई जल-स्रोत होना चाहिये। हमें अविलम्ब इसमें प्रविष्ट होकर प्राण-रक्षा करनी चाहिए।

जाम्बवन्त- इस सन्दर्भ में तो हमें आंजनेय के अनुसार ही करना ठीक होगा। (हनुमान की ओर देखने लगते हैं।)

हनुमान- (कुछ सोचकर) देखो भाई ! यह मायावी राक्षसों का क्षेत्र है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः हमें इस गुफा में सजगतापूर्वक ही प्रवेश करना चाहिये। क्योंकि; राक्षस कभी भी धोखा कर सकते हैं। यहाँ पूर्ण विश्वास करना शुभ नहीं है।

जाम्बवन्त- महावीर जी! आप आगे-आगे चलें और अंगद सबसे पीछे रक्षक के रूप में चलें। मैं भी आपका ही अनुगमन करूँगा।

हनुमान- हाँ, ठीक है। मैं आगे चल रहा हूँ। आपके निर्देशानुसार सभी लोग आयें- 'जय श्रीराम'!

(हनुमान का गुफामुख में प्रवेश, जाम्बवन्त इत्यादि का उनके पीछे-पीछे प्रस्थान)

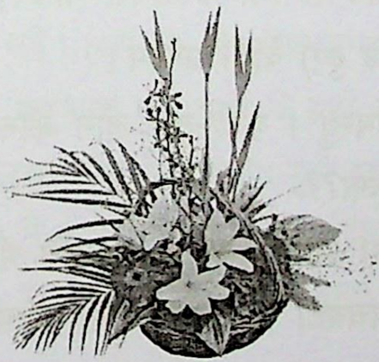
जाम्बवन्त- अरे ! यहाँ तो घोर अंधकार है। हाथ को हाथ नहीं सूझता। सभी लोग एक दूसरे का हाथ पकड़कर पंक्तिबद्ध होकर चलें।

सभी- (एक साथ)- हाँ-हाँ, यही करना ठीक रहेगा।

['जयश्रीराम'! का घोष करते हुए सभी का आगे बढ़ना]

(यवनिका-पतन)

●



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : अष्टम

(पर्दा खुलता है)

(स्थान-गुफा का भीतरी भाग)

(यकायक गुफा के छोर पर सुरम्य उपवन एवं स्वच्छ सरोवर को देखकर)

हनुमान- (उल्लसित होकर) अहा! हम लोग कहाँ आ गये। यहाँ तो जलाशय ही नहीं, फल-फूलों से लदे हुए वृक्ष भी हैं। कहाँ गुफा का वह गहन अन्धकार और कहाँ यह स्वर्णिम प्रभा वाला प्रसन्न प्रान्त। कितना स्वच्छ है सरोवर का यह जल और कितने सुन्दर हैं इसमें खिले हुए स्वर्ण-कमल! एक अपूर्व उल्लास खेल रहा है यहाँ के वातावरण में। पता नहीं, कौन होगा इसका स्वामी!

(सभी का प्रसन्नता से किलकारी भरना)

अंगद- (सहसा एक ओर देखकर) अरे, उधर देखो, वह कौन है। छोटे से भव्य भवन के सामने स्वच्छ शिला पर मृगचर्म बिछाकर ध्यानावस्था में बैठी हुई श्वेतवसना वह स्त्री मूर्तिमती वन-देवी है क्या? (सभी का उस ओर देखना)

हनुमान- आप लोग शान्त रहें। अभी जल-फल न छुएँ।

[विनतभाव से स्त्री के समक्ष जाकर]

हनुमान- (हाथ जोड़े हुए) देवि! प्रणाम।

स्त्री- 'कल्याणमस्तु'। कहो-तुम लोग कौन हो? यहाँ किसलिये आना हुआ??

हनुमान- तपस्विनि! अयोध्यानन्दन, दाशरथि श्रीराम का दास हनुमान हूँ मैं। पंचवटी में उनकी पत्नी सीता का किसी राक्षस ने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरण कर लिया है। उनको खोजने के लिये हम लोग निकले हैं। आज हम लोग क्षुधा-पिपासा से पीड़ित होकर जल की सम्भावना में यहाँ तक आ पहुँचे।......................
देवि! आप अपना परिचय देकर हमें कृतार्थ करें।

स्त्री- (उल्लसित होकर) तुम लोगों को देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुई। तुम लोगों को अभी विश्राम की आवश्यकता है। पहले जाओ, सरोवर में स्नान करके जल एवं फल ग्रहण करो और फिर विश्राम करके आओ। तभी मैं अपना परिचय दूँगी।

हनुमान- जैसा आपका आदेश। (शिर नवा कर प्रस्थान)

(हनुमान के साथ सभी जाकर सरोवर में स्नान, जलपान एवं जल-फल ग्रहण करते हैं। कुछ देर तक वृक्षों पर एवं नीचे विश्राम करके पुनः स्त्री के समक्ष पहुँचते हैं)

स्त्री- तुम लोग बहुत शीघ्र ही आ गये? तृप्त हो गये न?

हनुमान- हाँ, देवि! हम लोग पूर्ण तृप्त हो गये। माँ मैथिली की खोज के लिये हमें शीघ्रता है। वानरेन्द्र सुग्रीव ने इस कार्य के लिये हमें एक मास का समय दिया था। अधिक समय बीत गया। अभी तक हम लोग कृतकार्य नहीं हो सके। आप अपना परिचय देकर हमारी जिज्ञासा को सार्थक करें और हमें जाने को कहें। (स्त्री की ओर जिज्ञासुभाव से देखना)

स्त्री- प्रिय हनुमान! तुम सभी के यहाँ आगमन से मेरा परम-प्रिय मनोरथ साकार हो गया। मुझे इसी अवसर की चिर प्रतीक्षा थी। मैं हूँ 'स्वयंप्रभा'। गन्धर्वराज 'दिव्य' की कन्या। मेरी एक सखी थी देवबाला 'हेमा'। उसी का है यह रम्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम।

हनुमान- देवि! आप यहाँ कब से रह रही हैं और क्यों?

स्वयंप्रभा- हेमा जब ब्रह्मलोक जाने लगी, तो उसने मुझे ही उपयुक्त समझकर इस पुण्य आश्रम का उत्तराधिकार सौंपा। उसके बाद एक दिन देवर्षि नारद यहाँ पधारे। उन्होंने मुझे राम-नाम की दीक्षा दी और कहा कि-रामनाम का जप एवं ध्यान करते हुए तुम यहीं निवास करो। आगे भविष्य में परम प्रभु स्वयं राम के रूप में पृथिवी का अघभार उतारने के लिये अवतार लेंगे। उनकी पत्नी सीता का राक्षस हरण करेगा। उनका पता लगाते हुए जब रामदूत वानर तुम्हारी इस तपोभूमि में आ पहुँचें तो तुम उनका जल-फल इत्यादि से सत्कार करके रामकार्य में सहायता करना और वानरों से राम का पता पाकर उनके दर्शन से कृतार्थ होना; तभी से मैं यहाँ तप करती हुई तुम लोगों की प्रतीक्षा में रही। अब तुम लोग प्रस्थान करो। मैं भी अपने प्रियतम राम के चरणों में अब जा रही हूँ।

हनुमान- (हाथ जोड़कर) किन्तु, देवि! हम लोग अब-तक अपने लक्ष्य में असफल रहे हैं। समय अधिक बीत गया है। यदि आपको देवी सीता का कुछ पता हो, तो कृपापूर्वक बता दें। हम आपके आभारी रहेंगे।

स्वयंप्रभा- (नेत्र बन्द करके कुछ ध्यान-सा करती है फिर आँखें खोलकर) मैं सीता का पता तो बता पाने में असमर्थ हूँ, किन्तु तुम लोगों को ऐसे स्थान पर पहुँचा देती हूँ, जहाँ से तुम्हारा कार्य सरल हो जायगा। तुम सब लोग अपनी आँखें बन्द करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे पीछे-पीछे आओ।

(सभी लोग आँखें बन्द करके स्वयंप्रभा के पीछे चल देते है)

अंगद- (कुछ समय बाद आँखें खोलकर आश्चर्यपूर्वक) अरे, हम कहाँ आ गये?

(सभी लोग आँखें खोल देते हैं। सामने लहराते हुए अपार समुद्र को देखते हैं।)

जाम्बवन्त- (आश्चर्यपूर्वक) ओह! यह समुद्र? और वह देवी कहाँ गयी? एक ओर यह अछोर सागर और दूसरी ओर यह पर्वत।.. ..अब क्या करें? कहाँ जायँ?

अंगद- (नैराश्यपूर्वक) मैं तो अब यहीं प्रायोपवेशन करके प्राण-त्याग करूँगा। वैसे भी असफल होकर किष्किन्धा लौटूँगा तो चाचा सुग्रीव मेरा वध अवश्य कर देंगे। मैं ही तो उनके शत्रु बालि का एकमात्र पुत्र हूँ। जानकी का पता न लगा पाने का उनको बहाना भी मिल जायेगा। अतः यहीं प्राणत्याग करना मेरे लिये श्रेयष्कर है।

जाम्बवन्त- नहीं, अंगद, नहीं। हम तुमको यों प्राणत्याग नहीं करने देंगे। तुम वानरेन्द्र के युवराज हो और तुमने मुझे अपना नायक स्वीकार किया है। अतः तुम ऐसा नहीं करोगे अन्यथा, हम लोग भी यहीं प्राणत्याग कर देंगे।

हनुमान- हाँ, ऋक्षराज! आप ठीक कहते हैं।

कई वानर एक साथ- हाँ, हम भी यही करेंगे। युवराज के साथ हम भी यहीं प्राण-त्याग देंगे।

(वानरों के कोलाहल को सुनकर एक गुफा से एक भयंकर गीध का निकलना)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीध- (गुफा से निकलकर-स्वगत) अरे वाह रे विधाता! तू बड़ा दयालु है। मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ। आज तू ने मेरी भूख का अच्छा समाधान कर दिया। (वानरों की ओर देखकर) इतनी अधिक संख्या में ये बड़े-बड़े वानर धीरे-धीरे मरते जायेंगे और मैं इनको लम्बे समय तक खाता और पुष्ट होता रहूँगा। अहा-हा-हा-हा-हा-हा-हा (अट्टहास करता है)

अंगद- (गीध के शब्द सुनकर आश्चर्य पूर्वक) अरे, यह कौन गीध है? जो राम-कार्य के लिये निकले हुए लोगों को अपना ग्रास बनाना चाहता है। एक गीध जटायु भी था जो श्रीजानकी का अपहरण करने वाले राक्षस से युद्ध करते हुए बलिदान हो गया और एक गीध यह है, जो हमें ही खाना चाहता है।

गीध- (जटायु का नाम सुनकर उल्लसित होता हुआ) अरे, तुम कौन हो, जो मेरे प्रिय अनुज जटायु का नाम ले रहे हो। क्या हुआ मेरे प्यारे अनुज को? डरो नहीं। तुम मेरे पास आओ। बताओ मेरे प्यारे भाई का समाचार। मैं संपाति हूँ। (गीध की बात सुनकर अंगद, हनुमान और जाम्बवन्त का उसके निकट जाना)

अंगद- मैं हूँ बालिपुत्र अंगद। हम सभी लोग सर्वेश्वर राम की भार्या सीता की खोज में यहाँ तक आ पहुँचे। अयोध्या-नरेश दशरथनन्दन राम पिता की आज्ञा मान कर अनुज लक्ष्मण एवं देवी सीता के साथ दण्डकारण्य पधारे। वहीं पंचवटी में देवी सीता का राक्षस ने हरण कर लिया। मार्ग में जटायु ने सीता को छुड़ाने के लिये राक्षस पर चोंच और पंजों से प्रहार करते हुए उसे व्यथित कर दिया किन्तु राक्षस की कटार से घायल हो गये और राम के आने पर उनकी गोद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही उन्होंने प्राण-त्याग किया। जटायु का जीवन-मरण परम धन्य हो गया।

संपाति- धन्य हो जटायु! तुम धन्य हो। मैं तो राम के किसी काम न आ सका, किन्तु तुमने तो अपना जीवन पुण्य-पावन और कृतार्थ कर लिया। तुम्हारा जैसा सौभाग्यवान और कौन है मेरे भाई! (अंगद से) तुम मुझे उठाकर समुद्रतट पर ले चलो। मैं अपने अनुज का तर्पण तो कर लूँ। क्या करूँ, मैं स्वयं चल-फिर नहीं सकता। हाय.......।

अंगद- पक्षिप्रवर! आपके पंख कैसे जल गये? यह गति कैसे हुई?

संपाति- (उच्छ्वास लेकर) हम दोनों भाई अपने युवाकाल में सूर्यलोक नापने के लिये ऊपर उड़ते जा रहे थे। जटायु तो बीच से ही लौट आया, किन्तु मैं उड़ता गया। अन्त में सूर्यताप से मेरे पंख जल गये और मैं इसी शिखर पर गिरा। चन्द्रमा मुनि ने मेरा उपचार किया और कहा कि-तुम यहीं रहो। त्रेता में सर्वात्मा राम की पत्नी का पता जब तुम वानरों को बताओगे तो तुम्हारे पंख फिर पूर्ववत उग आयेंगे और तुम पूर्ण युवा हो जाओगे। चलो, मुझे ले चलो- पहले मैं अपने प्रिय भाई का तर्पण कर लूँ फिर तुम्हें सीता का पता बताऊँ। (हनुमान का संपाति को उठाकर समुद्रतट पर ले जाना, संपाति द्वारा जटायु को जलदान करना)

संपाति- (प्रसन्नमुद्रा में उल्लसित होकर) अच्छा, तो सुनो-राम की भार्या सीता राक्षसेन्द्र रावण की पुरी लंका में अशोकवनिका के मध्य राक्षसियों से घिरी बैठी हैं। मैं गीध हूँ, यहीं से सब देख रहा हूँ। तुम लोग नहीं देख सकते। गीध की दृष्टि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरगामी होती है।

अंगद- पक्षिश्रेष्ठ! किन्तु हम लोग लंका तक कैसे पहुँच पायेंगे?

संपाति- जो इस सौ योजन चौड़े सागर को लाँघ सकता हो, वही सीता का दर्शन कर सकेगा। (इतना कहते-कहते संपाति के शरीर में नये पंख निकल आये और वह पूर्ण युवा जैसा स्फूर्तिमान हो गया।)

संपाति- अच्छा, अब तुम लोग लंका जाने का प्रयत्न करो। मैं तो अब चला।

(संपाति का एक ओर उड़ जाना, सभी एकटक देखते रह जाते हैं)

(यवनिका-पतन)

(नेपथ्य से)

नव जीवन पाकर हुआ संपाती मुदमान।
राम! राम! मुख से करे, हिये राम का ध्यान।।
वानरदल विस्मित बहुत, सम्मुख सागर घोर।
सभी सोचते सिन्धु का कैसे पावें छोर।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : नवम

(पर्दा खुलता है)

(स्थान-दक्षिण समुद्र-तट)

(समुद्र-तट पर जाम्बवन्त, हनुमान, अंगद, नल-नील आदि बैठे हैं)

जाम्बवन्त- (चिन्ता पूर्वक) साथियो! जटायु के भ्राता संपाति के कथनानुसार माता जानकी का पता लगाने के लिये इस (समुद्र को लक्षित करते हुए) सौ योजन समुद्र को लाँघना होगा। (कुछ सोचते हुए) मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ। अन्यथा मैं ही समुद्र को लाँघ कर माता जानकी का पता लगा आता। आप लोगों में कौन इस कार्य को कर सकता है?

विकट- मैं तीस योजन तक जा सकता हूँ। इससे आगे जाने में असमर्थ हो जाऊँगा।

दुर्धर्ष- मैं तो चालीस योजन तक लाँघ सकता हूँ। उससे आगे गतिहीन हो जाऊँगा।

नील- मैं पचास योजन तक छलाँग लगा सकता हूँ।

नल- साथियो! मैं तो साठ योजन तक जा सकता हूँ, किन्तु इससे भी कार्य की सिद्धि नहीं होती है।

अंगद- (निराशापूर्वक) मैं उस पार जा तो सकता हूँ, क्योंकि माता जानकी मेरे सम्मुख हो जायेंगी, किन्तु लौट आने में मुझे संशय है, रावण-पुत्र अक्षय कुमार से मुझे भय है।

जाम्बवन्त- प्रिय अंगद! तुम में भरपूर सामर्थ्य है, किन्तु; हम तुम्हें इस समय नहीं भेज सकते क्योंकि तुम्हीं वानरेन्द्र सुग्रीव के एक मात्र युवराज हो।

"हो गया मैं वृद्ध, अब-तक था कभी हारा नहीं,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु; मेरे हाथ अब कोई रहा चारा नहीं।''

(सहज शान्त बैठे हनुमान को सम्बोधित करते हुए)

जाम्बवन्त- ''हे महावीर हनुमान! सुनो, अपनी तंद्रा को त्यागो तुम,
सम्पूर्ण शक्ति के साथ-साथ हे राम-दुलारे! जागो तुम।
हे कामरूप! शंकर-स्वरूप! बजरंगी नाम तुम्हारा है,
अपने पौरुष को करो स्मरण, यह जंगी काम तुम्हारा है।
रणधीर उठो, बलवीर उठो-अब तुम ही लाज बचाओगे,
हे कृपाधाम के कृपा-पात्र! यह कार्य तुम्हीं कर पाओगे।।''

हनुमान- (जमुहाई लेते हुए, दाहिने हाथ को तानकर)-
''हे ऋक्षराज! चिन्ता न करें, मैं लाँघ सिन्धु को जाऊँगा,
रावण को उसके पापों का मैं कटु फल आज चखाऊँगा।
माता सीता का पता लगा, लंका का दिल दहलाऊँगा,
सौगन्ध राम की, यह न किया, तो अपना मुँह न दिखाऊँगा।।''
[समुद्र एवं लंका की दिशा को देखते हुए]

हनुमान- ''यदि आप कहें तो अभी अरि की
उस लंकापुरी को उखाड़ के लाऊँ।
कहिये, तो अभी उस दुष्ट के प्राण मैं
पाप-भरा तन फाड़ के लाऊँ।
'मधुरेश' न चैन मिले मुझको,
यदि लंक को मैं न उजाड़ के आऊँ।
रघुवीर का दास कहाऊँ न मैं, यदि-
शत्रु को शीघ्र पछाड़ न आऊँ।''

जाम्बवन्त- हे महावीर! बस, इतना करो कि माता जानकी का पता लगा कर रघुनाथ जी को शुभ समाचार दे दो। वे स्वयं राक्षसों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का संहार करके माता जानकी को लायेंगे।

हनुमान- बहुत अच्छा ऋक्षराज जी! ऐसा ही करूँगा। (सभी की ओर देखते हुए) हे कपिगण! मैं आप सभी का वन्दन करता हूँ। आप सभी मुझे आशीर्वाद दें और मेरे लौट आने तक यहीं मेरी प्रतीक्षा करें।

सभी लोग-(एक साथ) हाँ-हाँ, अवश्य जायें आप। हम लोग यहीं बैठ कर आपके लौटने की प्रतीक्षा करेंगे।

(हनुमान का उठकर 'जयश्रीराम'! कहते हुए सबको गले लगाकर मिलना तथा 'जय श्रीराम'! का उद्घोष कर वहाँ से छलाँग लगाना)

(यवनिका-पात)

(नेपथ्य से गायन)

माता सीता की खोज-हेतु
उत्साह भरे हनुमान चले।
निज लक्ष्य बना कर लंका को,
भर करके त्वरित उड़ान-चले।
गति उनकी अम्बर-सागर में
जैसे राघव का बान चले।
कह करके 'जय श्रीराम'! अहा;
देखो वह पवन-समान चले।
गिरि डोल उठा, नभ बोल उठा-
हनुमान चले, हनुमान चले।।

(स्वर धीरे-धीरे मन्द पड़ता है)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : दशम

(परदा खुलता है)

(समुद्र के ऊपर आकाश पथ, हनुमान की गर्जना सुनाई पड़ती है, आकाश में देवताओं का दिखाई पड़ना)

देवता-१- (आश्चर्यपूर्वक) अरे, यह कौन है? जो घोर गर्जन करता हुआ वायु-वेग से आकाश में उड़ रहा है!

देवता-२- अरे हाँ, इसकी उड़ान से तो ऐसा लगता है कि यह कोई अतुलित बलधारी है।

देवता-१- तब तो नागमाता सुरसा को भेज कर यह पता लगाया जाय कि यह कौन है; कोई देव है, दानव है-या कोई वर-प्राप्त मानव है।

देवता-२- हाँ, सुरसा को शीघ्र भेजा जाय।

(हनुमान का गरजते हुए आना, सुरसा का दूसरी ओर से आगमन, सुरसा को देखकर हनुमान का रुक जाना)

सुरसा- (स्वगत) मुझको देवताओं ने आज इसकी परीक्षा लेने के लिये भेजा है। देंखूँ-यह कितना बलशाली है?

(हनुमान को तरजते हुए)

सुरसा- बस! बस!! अपने स्थान पर ही ठहर। आज देवताओं ने मेरे लिये आहार बनाकर तुझे भेजा है। इधर कई दिनों से मैं भूखी और रक्त की प्यासी हूँ। अभी तुझको कच्चा ही खाकर अपनी भूख मिटाऊँगी।

हनुमान- (हाथ जोड़कर) हे माता! इस समय मैं श्री रघुनाथ जी के कार्य में नियुक्त हूँ। उनका कार्य सम्पन्न करने के बाद मैं फिर आपसे मिलूँगा। तब आप मुझको खाकर अपनी क्षुधा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्त कर लेना।

सुरसा- (दृढ़तापूर्वक) नहीं .... नहीं, यह कदापि नहीं होगा। मैं तो तुझे इसी समय खाऊँगी। तू उसी ठौर पर ठहर।

(सुरसा का विकराल रूप धारण करना, हनुमान का महा विकराल होना। पुनः हनुमान का लघु रूपधारण करके सुरसा के मुख में घुसकर बाहर आना और हाथ जोड़कर खड़ा होना)

हनुमान- माता! आपकी अब क्या इच्छा है? मुझे अब जाने की आज्ञा और आशीर्वाद दें।

सुरसा- (हाथ जोड़कर) हे महावीर! आप मुझे क्षमा करें। मैं तो केवल देवताओं की प्रार्थना पर आपके बल एवं बुद्धि की परीक्षा लेने आयी थी, सो अब मैं सब कुछ समझ गयी हूँ-

"राम-काज होंगे सभी, तुम बल-बुद्धि-निधान।
शुभाशीष है, अब करो महावीर! प्रस्थान।।"

(आकाशवाणी होना) महावीर हनुमान की जय!

(आकाश से पुष्प-वर्षा)

हनुमान- (उल्लासपूर्वक) जय श्रीराम!

(दोनों का दो ओर प्रस्थान)

(यवनिका-पात)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : एकादश

(पर्दा खुलता है)

(लंका का तटवर्ती समुद्र, आकाश से लंका को देखते हुए)

हनुमान- (स्वगत) अच्छा, तो यही लंका है। यहाँ की छटा भी विचित्र है.......यह राक्षसों की माया नगरी है, यहाँ मुझे बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता है। यहाँ किसी से कुछ भी पूछना उचित नहीं है।....... अच्छा-अब मैं स्वयं को छिपा कर माता जानकी का पता लगाऊँ।

(भूमि पर उतर कर और एक ओर देखकर)

अरे! यह तो कोई राक्षसी प्रतीत होती है। यह मेरी ही ओर झपटी आ रही है। लगता है, कि इसने मुझे देख लिया है। अभी तो रात का प्रथम प्रहर है।...... यह कहाँ से आ धमकी?

(निकट पहुँचकर हनुमान और लंकिनी का एक दूसरे को देखना और लंकिनी का हनुमान पर क्रोध करना)

राक्षसी- (आँखों में रोष भर कर) अरे चोर! रात में तू इस लंका नगरी में क्यों प्रवेश करना चाहता है? क्या तू नहीं जानता कि लंका का चोर ही मेरा भोजन है? मैं तुझको अभी खाये जाती हूँ। ठहर जा...... अब तू कहीं भाग नहीं सकता।

(राक्षसी मुँह फैलाकर आगे बढ़ती है)

हनुमान- (हँसकर) हाँ-हाँ, तुम्हारे खाने के लिये ही मैं आज तुम्हारे पास आया हूँ। मैं तो तुम्हें बहुत देर से ढूँढ़ रहा था। लो-अब मैं तुम्हारे औरं निकट आ जाता हूँ। जिससे तुम्हें मुझको खाने में कोई कठिनाई न हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(बिल्कुल निकट आकर हनुमान द्वारा राक्षसी पर एक मुष्टि-प्रहार, रक्त-वमन करते हुए राक्षसी का भूमिपात, राक्षसी का हाथ जोड़े हुए उठना)

राक्षसी- हे महावीर! आप मुझे क्षमा करें। मेरा कोई दोष नहीं है। मैं लंका की अधिष्ठात्री हूँ। मुझे 'लंकिनी' कहते हैं। (कुछ सोचकर) जब रावण को ब्रह्मा ने वर दिया था तब मुझको पहचान कर उन्होंने कहा था, कि मैं जब किसी वानर के प्रहार से व्याकुल हो जाऊँ तब राक्षसों का विनाश निश्चित समझूँ। हे तात! यह मेरा परम पुण्य है-जो आज मैंने तुम रामदूत को अपनी आँखों से देखा। तुम्हारे दर्शन से मेरा सम्पूर्ण भव-भय-भंग हुआ। अब तुम हृदय में रघुवीर राम का ध्यान कर लंका में निर्भय प्रवेश करो-तुम्हारे सभी कार्य सिद्ध होंगे। तुम्हारे मुष्टि-प्रहार से मैं जान गयी हूँ कि अब रावण का विनाश निश्चित है। जाओ-तुम्हारा आना सफल हो।

हनुमान- जय श्रीराम! (हनुमान का लंका में प्रवेश)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वादश

(परदा खुलता है)

(विभीषण का भवन, दीवारों पर राम-नाम अंकित है, धनुष-बाण के चित्र बने हैं, सामने तुलसी के पौधे लहलहा रहे हैं। विभीषण अभी सो रहा है) [हनुमान एक वृक्ष पर चिन्तित मुद्रा में बैठे हैं]

हनुमान- (स्वगत) अभी तक लंका के राजभवन में भी माँ सीता को न देख सका। एक-एक भवन-उद्यान वापी-सरोवर देख डाला, कहीं भी वैदेही का पता न लगा पाया, अब क्या करूँ?............

हनुमान- (चारों ओर निहारते हुए एक भवन को देख कर, स्वगत) अरे, यह भवन तो किसी भक्त का प्रतीत हो रहा है। जहाँ देखो-वहीं प्रभु का नाम अंकित है और सामने ये तुलसी के पौधे हैं।. ....राक्षस-समाज में भक्त कहाँ से आया?

"यह लंका तो निशिचरों का ही नित्य निवास।
कैसे सज्जन को कभी होगा यहाँ सुपास।।"

(भवन में विभीषण का राम-राम करते हुए उठ बैठना)

विभीषण- श्रीराम! जय राम! जय - जय राम!
राम ! राम ! जय राम ! जय-जय राम।।

हनुमान- (स्वगत) अहाहा-अब तो यह निश्चय है कि यह प्रभु का भक्त है-

"अब तो इससे परिचय करना है मुझको अनिवार्य।
साधु जनों से नहीं बिगड़ता कभी किसी का कार्य।।"

(भवन के निकट जाकर)

हनुमान- (प्रकट) जय श्रीराम!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभीषण- (सुनते ही पर्यंक से उठकर) जय श्रीराम! (द्वार खोलकर) महाराज! प्रणाम। आइये-विराजिये। आज मेरा अहोभाग्य है कि प्रातः काल ही प्रभु-भक्त का दर्शन मिला। कहिये-भक्तवर! आप कौन है? कहाँ से आपका आगमन हुआ?

हनुमान- (सविनय) मैं अयोध्यापति महाराज राघवेन्द्र राम का एक तुच्छ दास हनुमान हूँ। माता सीता का पता लगाने के लिये प्रभु के पास से आया हूँ।

विभीषण- (उल्लसित होकर)-(साञ्जलि) हे भक्तराज! आज मैं आपके दर्शन से सचमुच बड़भागी हो गया-

''मैं धन्य हो गया आज अहो, अब मेरा यह उपकार करें।
हे भक्तराज श्रीचरणों से पावन मेरा घर-द्वार करें।''

हनुमान- हे सन्तप्रवर! आप राक्षसों के बीच किस प्रकार रह पाते हैं? यहाँ तो राक्षसों की माया बड़ी प्रबल है-

(विस्मयपूर्वक)

''कागों के दल में अहो हुआ भोले मराल का वास कहाँ,
काँटों में, क्रूर करीलों में चन्दन को भला सुपास कहाँ?
हे राम-भक्त! तुम रावण के पुर में कैसे रह पाते हो,
असुरों में अपने जीवन का, तुम कैसे धर्म निभाते हो??''

विभीषण- (हाथ जोड़कर) स्वामी! यह न पूछिये। यहाँ तो-

''जैसे दाँतों में दबी-दबी जिह्वा बेचारी रहती है।
मेरी जीवन-गति वैसी ही कुछ कठिन कहानी कहती है।।''

हनुमान- (दृढ़ स्वर में) भक्तराज! आप चिन्ता न करें-

''यदि असुरावलि बत्तीसी है तो टूट-टूट गिर जायेगी।
लेकिन जिह्वा तो जीवन भर श्रीराम-नाम-गुण गायेगी।।''

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभीषण- (साञ्जलि) किन्तु महाराज! मैं तो राक्षस समुदाय का अत्यन्त पापी और दशानन रावण का अनुज विभीषण हूँ। क्या मुझ दीन को प्रभु अपनायेंगे?

हनुमान- अवश्य, भक्तराज! अवश्य। राघवेन्द्र प्रभु तो शरणागत-वत्सल हैं। उनके करुणा-कलित कोमल हृदय का उदार द्वार सदैव खुला रहता है। वे सदैव सेवक पर प्रीति करते हैं। हे भाई! मुझे ही देखो-चंचल स्वभाव वाले वानरकुल का हूँ मैं। सब प्रकार के सद्गुणों से हीन हूँ। लोग प्रातःकाल मेरा नाम लेना भी अशुभ मानते हैं। इस प्रकार के मुझ अधम पर भी प्रभु ने अनुग्रह किया-मुझको अपनाया। (कुछ सोचकर) हे बन्धुवर! अब बिलम्ब न करो। शीघ्र मुझे माता जानकी का पता बताओ; जिससे मै यथाशीघ्र प्रभु का कार्य सम्पन्न कर सकूँ। मुझे अबिलम्ब लौटना है।

विभीषण- (चारों ओर देखकर) हे महावीर! तुम यहाँ से सीधा अशोक वन को प्रस्थान करो। यह (अँगुली से निर्देश करते हुए) मार्ग वहीं ले जायगा। वहाँ माता जानकी क्रूर राक्षसियों के पहरे में रखी गयी हैं।

हनुमान- (आकुलतापूर्वक) अच्छा, अब आज्ञा दें-मैं चलूँ।

विभीषण- (साञ्जलि शीश झुकाकर) श्रीराम भक्त हनुमान को विभीषण का प्रणाम।

हनुमान- आनन्द बढ़े। जय श्रीराम! (प्रस्थान)

(यवनिका-पात)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : त्रयोदश

(परदा खुलता है)

(स्थान-अशोकवाटिका)

(अशोक वृक्ष के नीचे दो राक्षसियों के घेरे में जानकी बैठी हैं, हनुमान का चुपचाप आकर दूर से प्रणाम करना)

हनुमान- (स्वगत) हे ईश्वर, मैं यह क्या देख रहा हूँ? लीलाधारी की लीला बड़ी अद्‌भुत है। जगज्जननी माता जानकी और उनकी ऐसी दयनीय दशा?......धन्य हैं माता जानकी, जो कि आप प्रभु के वियोग में अपने को सुखा रही हैं। (कुछ सोचकर) अब मैं यहीं कहीं छिपकर बैठ जाऊँ और यहाँ की स्थिति का कुछ समय तक अध्ययन कर लूँ। यह माया नगरी है।

(हनुमान का एक वृक्ष पर छिप कर बैठना)

एक राक्षसी- अरी सीता, मैं तुझे कई बार समझा चुकी कि तू राजा रावण की बात मान ले-इसी में तेरी भलाई है।

त्रिजटा- नहीं-ऐसा नहीं। तुम लोग भयंकर भूल कर रही हो जो कि इन्हें साधारण नारी समझ रही हो। तुम लोग इनसे डरो, इनकी सेवा और सहायता करो। आज की रात मैंने एक भीषण स्वप्न देखा है।

राक्षसी- स्वप्न देखा है? तो बताओ, उस स्वप्न में क्या देखा है?

त्रिजटा- अच्छा, तो सुनो-मैंने देखा कि लंका में एक बहुत बड़ा बन्दर आया है।

राक्षसी- (हँसकर) अहाहा! अरे, बन्दर तो बन्दर। उसमें छोटे और बड़े की क्या बात है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिजटा- (गम्भीर होकर) बात? अरे, बात तो निश्चय ही बड़ी है। मैंने देखा कि उस बन्दर ने अनेक राक्षसों को मार डाला, पूरी अशोकबाटिका को उजाड़ डाला और जाते-जाते सोने की लंका को भी जला डाला। उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सका।

राक्षसी- (भयभीत होकर) हाय! हाय!! तब तो उस बन्दर ने प्रलय ही ढा दिया। अच्छा बहन! बताओ वह बन्दर फिर कहाँ चला गया?

त्रिजटा- अरे, चला कहाँ गया। मैंने देखा कि वह फिर माता जानकी के पास चला आया। उसने कई बार इन्हें प्रणाम किया और शिर झुकाया।

राक्षसी- (भयान्वित होकर सीता के चरणों में गिरती हुई) माँ! मुझे क्षमा कर दो।

सीता- नहीं, बहन! नहीं, तुम लोग मुझसे न डरो। मैं तुम लोगों का कुछ न बिगाड़ूँगी। तुम्हारे अत्याचारी राजा रावण के अत्याचारों से मैं दुःखी हूँ। मैं अब जीवित नहीं रहना चाहती। (कुछ सोचकर) आप लोग मेरी बस इतनी सहायता कर दें कि कहीं से अग्नि की व्यवस्था कर दें। मैं अपने को उसी से भस्म कर देना चाहती हूँ। क्योंकि अब मुझसे रघुनाथ का वियोग नहीं सहा जा रहा है।

राक्षसी- नहीं, माँ! नहीं। घबरायें नहीं। हम लोग आपकी सेवा करेंगी और अन्यायी राजा रावण से डरती भी रहेंगी। क्योंकि वह बड़ा अत्याचारी-अहंकारी है।

त्रिजटा- (अधीरतापूर्वक साञ्जलि) बहन! यह शरीर ईश्वर का कृपा-फल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसको भस्म करने का अधिकर आप न लें। मैं आपके पैरों में गिरती हूँ। (सीता के चरणों में शिर झुकाकर) अब आप विश्राम करें। कहिये, बहन! कहिये-मेरी बात आप मान रही हैं? नहीं तो हम लोग आपके लिये अपने प्राण दे देंगी। हम भी जीवित नहीं रहेंगी।

सीता- अच्छा, बहन! अच्छा। तुम लोग इतना अधीर न होओ और अब तुम लोग भी विश्राम करो।

राक्षसी- अच्छा बहन! अपनी बात पर हठ न करना, हमारी विनय अवश्य मानना।

(दोनों उठकर कुछ दूरी पर दूसरे वृक्ष के नीचे जाकर विश्राम करने लगती हैं)

सीता- (ऊपर की ओर देखकर) (स्वगत)- हे वृक्ष अशोक! तुम्हारा नाम तो शोक-निवारक है। तुम मेरे शोक का निवारण कर अपने अशोक नाम को सत्य करो।........तुम्हारे लाल-लाल पत्ते अग्नि के समान हैं। तुम अग्नि देकर शरीरान्त करने में मेरी सहायता करो।

(हनुमान का राम की दी हुई मुद्रिका गिराना, अँगूठी की आभा से सीता का आश्चर्य में डूबना, मुद्रिका को ध्यानर्पूवक देखकर)

सीता- (स्वगत)- यह अँगूठी तो प्राणनाथ की प्रतीत हो रही है। (कुछ सोचकर) अरे हाँ, इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं कि यह मेरे स्वामी की ही अँगूठी है। किन्तु; यह यहाँ कैसे आयी? इसको यहाँ कौन ले आया है? इसमें प्रभु की ही लीला है या फिर राक्षसों की माया है। (अँगूठी को उठाकर सीता देखने लगती हैं, उसी समय ऊपर की ओर से ध्वनि सुन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ती है)

ध्वनि- “धन्य-धन्य रघुवंशमणि भक्तों के आधार।
पार न कोई पा सका, महिमा अगम अपार।।”

सीता- (सुनकर-स्वगत) यह ध्वनि कहाँ से आ रही है? कौन है- जो मेरे प्राणनाथ का गुणानुवाद कर रहा है? (ऊपर की ओर देखकर) मेरे प्राणनाथ रघुनाथ का गुणानुवाद करने वाले आप कौन हैं? कृपा करके सामने आयें और सब सत्य बतायें।

हनुमान- (वृक्ष से उतर कर सीता को साञ्जलि नमन करते हुए) माता! प्रणाम।

सीता- (भयभीत होकर शंकापूर्वक) आप कौन हैं? कहाँ से आये हैं? मेरे प्राणनाथ की यह मुद्रिका (दिखाकर) आपके पास कैसे आयी?

हनुमान- (हाथ जोड़कर) हे माता! आप शंका और भय का परित्याग कर दें।

“माता! मुझसे भय-शंका आप न मानें,
मुझको बस, छोटा रामदूत ही जानें।
हे अम्ब! सुनो-हनुमान नाम है मेरा,
करुणानिधान के चरणों का हूँ चेरा।
उनकी आज्ञा से चला यहाँ तक आया,
विश्वास-हेतु मैं राम-मुद्रिका लाया।
सौगन्ध सत्य की-मृषा न मेरी वाणी,
मैंने ही गायी प्रभु-गाथा कल्याणी।”

सीता- (उत्सुक होकर) कहो हनुमान! कहो-मेरे प्राणनाथ और लक्ष्मण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे हैं?......क्या मेरे प्रभु कभी मेरी चर्चा करते हैं? प्रिय हनुमान! यहाँ राक्षस बहुत प्रबल हैं,......तुम्हारे लिये मुझे भय लगता है।

हनुमान- हाँ अम्ब! हाँ, लक्ष्मण-सहित स्वामी आपकी ही चर्चा करते रहते हैं। उन्होने ही मुझको आपका पता करने के लिये भेजा है। आपके वियोग में मेरे स्वामी दिन-रात उसी प्रकार विकल हैं जैसे जल के बिना धान। आपके बिना प्रभु का मुखमण्डल उसी प्रकार मलिन है जैसे प्रभा के बिना प्रभाकर। हे अम्ब! आप चिन्ता न करें। आपका संकट कट जायेगा।

"अब तो रघुकुल का डंका ही लंका में बजने वाला है।
वह नौका डूब नहीं सकती, जिसका प्रभु ही रखवाला है।।
यदि मुझे मिली अनुमति होती तो कुछ सेवा कर पाता मैं।
बिठला स्व-पीठ पर माता को प्रभु के समीप ले जाता मैं।।
हे अम्ब! आप अब धैर्य धरें, प्रभु यथाशीघ्र ही आयेंगे।
रावण-समेत उसके कुल को बाणों से धूल चटायेंगे।।
माता! दुख के दिन बीत चले, अब सुख की बेला आयेगी।
जब पूर्ण प्रभाकर को फिर से परिपूर्ण प्रभा मिल जायेगी।।
मैं तो शाखामृग हूँ, मेरा बल-बुद्धि से नहीं नाता है।
प्रभु के प्रताप से ही कोई लघु ब्याल गरुण को खाता है।"

(हनुमान का सीता के चरणों में शीश झुका लेना, सीता का उनके शिर पर हाथ रखना।)

सीता- पुत्र हनुमान! अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया-तुम स्वामी के अनन्य भक्त हो। उनके सच्चे सेवक हो। वत्स! मैं तुम पर परम प्रसन्न हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[आशीर्मुद्रा में]

"आशीष यही है- पुत्र! तुम्हारा अजर-अमर अवतार रहे।
रघुनाथ तुम्हारे साथ रहें, उनका तुम पर चिर प्यार रहे।।
श्रीरामचरितमणिमाला के सुन्दर सुमेरु बन जाओ तुम।
श्री राघवेन्द्र के भक्तों से भी नित्य समादर पाओ तुम।।"

(हनुमान का सीता के चरणों में शीश झुकाना)

हनुमान- माँ! आप धन्य हैं। आज मेरा जन्म सफल हुआ।

(हाथ जोड़कर)

"पा अमोघ आशीष अहा, कृतकृत्य हुआ मैं माता!

(वृक्षों की ओर संकेत करके)

फल-तरुओं को देख-भूख का वेग सहा नहीं जाता।।"

हे माता! यदि आपकी आज्ञा पाऊँ तो (फलों की ओर संकेत करते हुए) इन फलों को खाकर अपनी भूख शान्त कर लूँ।

सीता- वत्स! इन फलों की रखवाली लंका के बड़े-बड़े दुर्दान्त राक्षस करते हैं।

हनुमान- (हाथ जोड़कर) माता! आपके आशीर्वाद और प्रभु की कृपा से मुझे किसी का भय नहीं है।

सीता- जाओ-मेरा आशीर्वाद है कि इन मधुर फलों को खाकर अपनी भूख मिटा लो।

हनुमान- (शीश नवाकर) प्रणाम!

सीता- प्रसन्न रहो। विजयी बनो।

हनुमान- (जाने को उद्यत होकर) जय श्रीराम!

(हनुमान का फल खाना, वृक्ष आदि तोड़कर गरजना, गर्जन सुनकर प्रहरियों का आना, हनुमान को रोकना, हनुमान का राक्षसों को मार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगाना, सैनिकों सहित अक्षयकुमार का आगमन)

हनुमान- (स्वगत) जय श्रीराम! अहा-हा! सम्भवतः यह रावण का छोटा पुत्र अक्षयकुमार है जो कि मुझसे युद्ध करने आ रहा है। यह वही अक्षय है जिससे मेरे युवराज अंगद डरते हैं। आज इसका भी समय पूरा हो गया है। इसे अभी ठण्ढा किये देता हूँ। (प्रकट) जय श्रीराम! आओ, आओ-शीघ्र आओ। मैं बहुत देर से तुम्हारे आने की प्रतीक्षा में हूँ।

अक्षयकुमार-(तरजते हुए) बस, रे बन्दर! बस। तूने मेरे अशोकवन को क्यों उजाड़ डाला? फल खाये, डालियाँ तोड़ी और पूरी बाटिका ही उजाड़ कर दी। तेरा ऐसा साहस, कि मेरे पहरेदारों को भी मार भगाया! बोल, बोल, तूने ऐसा क्यों किया? तेरे सम्मुख तेरा काल खड़ा है। बोल- तू क्या कहना चाहता है?

हनुमान- (अक्षय पर मुष्टि तान कर) अरे, मैं क्या कहूँ? तू ही सब कुछ कह डाल और ले-इसको सँभाल।

(अक्षय पर मुष्टि-प्रहार, अक्षय का औंधे मुँह गिरना, सहायक सैनिकों का पलायन)

हनुमान- (स्वगत) अक्षयकुमार तो मारा गया। अब देखूँ-कौन आता हैं? मैं रावण के पास तक जाना चाहता हूँ। उसे भी देखना चाहता हूँ कि-कितना पानीदार है। परन्तु; मेरे सोचने से क्या होता हैं? वही होता है-जो प्रभु को स्वीकार होता है। (उसी समय आवाज सुनायी पड़ती है)-घेर लो। पकड़ लो। भागने न पाये। यह उत्पाती बन्दर लंका का अक्षम्य अपराधी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (सामने देखकर-स्वगत) अरे! यह तो रावण का पुत्र मेघनाद है, जो सेना-सहित बढ़ा आ रहा है। अभी इसका भी घमण्ड चूर करता हूँ।

(मेघनाद का आना, हनुमान का उछल कर एक घूँसा मारना, मेघनाद का मूर्च्छित होना, हनुमान का खड़े होकर मुस्कराना)

(कुछ देर बाद मेघनाद मूर्च्छा से जागता है)

मेघनाद- (उठकर-स्वगत)-अरे! मैं तो मूर्च्छित हो गया था। आखिर यह है कौन, जिसने मुझे एक मुष्टि-प्रहार से ही मूर्च्छित कर दिया। क्षण भर में मेरे मान-सम्मान को मिट्टी में मिला दिया। आज तक मेरा अपमान करने का साहस कोई न कर सका।

मेघनाद- (हनुमान से प्रकट)-

"अरे दुष्ट वानर! अब तेरी चाल न चलने पायेगी,
बहुत हुआ, अब मुझसे तेरी दाल न गलने पायेगी।
मेघनाद हूँ-मैंने अरि को रण में सदा हराया है,
इन्द्रलोक तक हाथ बढ़ाकर 'इन्द्रजीत' पद पाया है।
किन्तु; तुझे मैं अपने बल का कटु रस नहीं चखाऊँगा,
मात्र बाँधकर नागपाश में सभा-मध्य ले जाऊँगा। "

(कुछ क्षण रुककर)

"था पिताश्री ने कहा-कपि को करो अधिकार में,
जिस किसी विधि बाँधकर लाओ उसे दरबार में।"

हनुमान- (हँसकर) अच्छा! तो तू मुझसे युद्ध नहीं करेगा? अपने भाई का प्रतिशोध मुझसे नहीं लेगा? केवल अपने बाप के पास ही ले जायेगा? अरे मेघनाद! मैं तो चाहता हूँ कि आ-जा, पहले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-चार हाथ हो जायें जिससे तेरी भी अभिलाषा पूरी हो जाये।

मेघनाद- (स्वगत) हे महावीर जी, आप अतुलित बलधारी हैं, आपसे युद्ध क्या करना है। (प्रकट) अरे वीर बानर! यहाँ नहीं,-दरबार में चलकर तू अपने हाथ दिखाना; देखूँगा-तू कितना बलवान बनता है। यहाँ तो तुझसे युद्ध करना युद्ध का अपमान है।

''देखूँगा तेरी शक्ति वहीं-तू तब कुछ क्या कर पायेगा?
यह नागपाश जब जकड़न से तुझको तिल-तिल तड़पायेगा।''

(मेघनाद का हनुमान पर नागपाश छोड़ना)

हनुमान- (बन्धनयुक्त होकर-स्वगत)

''तेरा-मेरा हो भला अब कैसे संग्राम?
बन्धन हो जब धर्म का, तब बल का क्या काम??''

(अपनी ओर संकेत करते हुए)

यह नागपाश है ब्रह्मपाश, यह दिव्य दान है ब्रह्मा का।
यदि इसे काट दूँ मैं, तब तो श्रद्धापमान है ब्रह्मा का।।

[मेघनाद का हनुमान को बाँधकर ले जाना]

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्दश

(परदा खुलता है)

(स्थान- रावण का दरबार)

(रावण अपने दरबारियों के साथ बैठा है)

रावण- (अधीरतापूर्वक) मंत्रिवर! मेघनाद अभी तक नहीं लौटा?

मंत्री- महाराज! कुमार तो अभी तक नहीं लौटे। हाँ कुछ समय पहले एक दूत अवश्य आया था।

रावण- (उत्सुक होकर) तो दूत ने कैसा सन्देश दिया?

मंत्री- उसने कहा कि उस बन्दर ने कुमार को एक घूँसा मारा और वे अचेत होकर गिर पड़े।

रावण- (साश्चर्य) क्या कहा? मेघनाद, और; एक बन्दर के एक ही घूँसा से अचेत होकर गिर पड़े?

मंत्री- हाँ महाराज! हाँ, वह बन्दर साधारण नहीं है। दूत ने भी यही बताया है।

रावण- उसने इसके आगे का क्या वृत्तान्त दिया?

मंत्री- कुछ नहीं। कुमार के अचेत होते ही वह यहीं भागता चला आया।

(आतुरतापूर्वक द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल- (शिर नवा कर) अन्नदाता की जय हो। सरकार! कुमार मेघनाद ने बन्दर को बाँध लिया है और उसको दरबार में ही ला रहे हैं।

रावण- (आश्चर्यपूर्ण उल्लास से) क्या सचमुच मेघनाद ने उस बन्दर को बन्दी बना लिया है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारपाल- हाँ-हाँ महाराज! कुमार ने उसे अच्छी तरह अपने चंगुल में कर लिया है और यहीं ला रहे हैं।

(मेघनाद दो राक्षसों के सहयोग से बन्दी हनुमान को दरबार में लेकर प्रवेश करता है। रावण और हनुमान एक दूसरे को एकटक देखते हैं।)

मेघनाद- (सिर झुकाकर) पिताश्री के चरणों में पुत्र का प्रणाम।

रावण- चिरञ्जीव वत्स! चिरञ्जीव।

मेघनाद- पूज्य पिताश्री! इस बन्दर ने अशोकवाटिका के फल ही नहीं खाये-उसे उजाड़ा भी है। पहरेदारों को मारा और भाई अक्षयकुमार का संहार कर डाला है। अब आप जो उचित समझें-वहीं करें।

रावण- (हनुमान से आक्रोश सहित)

"रे वानर, तू कौन है? तेरा कहाँ निवास?
लंकानगरी में अरे, आया किसके पास??
क्यों अशोकवन का किया तूने बंटाढार?
क्यों रे, अछयकुमार का किया क्रूर संहार??
सुना नहीं क्या रे! कभी लंकापति का नाम?
जिसके भय से मनुज क्या, करते देव प्रणाम।।
रे कपि! तू आकर यहाँ बनता है बरिबण्ड?
तू ही कह-तेरे लिये मै दूँ कैसा दण्ड??"

हनुमान- (निर्भयता पूर्वक)

"जिनका लेशमात्र बल पा तुम फूले नहीं समाते हो,
और चराचर पर तुम जिससे अपनी धाक जमाते हो।
जिनकी प्रिय पत्नी को रे! तू यहाँ चुराकर लाया है,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन सर्वेश्वर राघवेन्द्र का दूत यहाँ यह आया है।
(हाथ से अपनी ओर संकेत)
आया हूँ मैं लंका में माता का पता लगाने को,
भूख लगी तो विवश हो गया मैं मीठे फल खाने को।
निज स्वभाव-वश ही मैने तरु-शाखाओं को तोड़ा है,
जिसने मुझ पर घात किया, उसको यमपुर से जोड़ा है।
(रावण का रोषपूर्वक आँखे तरेरना)
दशकंठ! तुम्हारे सुत द्वारा जो बन्दी गया बनाया मैं,
परवाह नहीं इस बन्धन की, प्रभु का हित करने आया मैं।"
(हनुमान का अपने आप बन्धन-मुक्त होना, सभी लोगों का विस्मय में पड़ना)

हनुमान- (दृढ़तापूर्वक) -
"है यही सिखावन पथ्य तुम्हें, यदि तुम न इसे अपनाओगे,
पाओगे अपयश और हाथ दोनों मलते रह जाओगे।
उन परमेश्वर प्रभु राघव का यदि कोप बाण बन आयेगा,
तो लंका का तृण-तृण क्षण में बस नाम शेष रह जायेगा।
कल्याण चाहते हो यदि तो तुम नहीं भूल से हठ ठानो,
लौटा दो सीता को सविनय, सर्वेश्वर प्रभु को पहचानो।
उन कृपासिंधु करुणानिधान की शरण तुम्हें यदि मिल जाये,
तो समझो जीवन धन्य हुआ, सौभाग्य तुम्हारा खिल जाये।"

रावण- (गर्व से अट्टहास करता हुआ)
"वाह! वाह रे वानर! तू तो बातें बहुत बनाता,
छोटे मुँह से बात बड़ी करते क्यों नहीं लजाता?
तीनों लोकों में प्रभाव-रवि चमक रहा है मेरा,
मैं चाहूँ तो साँझ करूँ चाहूँ तो करूँ सबेरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[चारों ओर हाथ से संकेत करके]
लोकपाल, दिक्पाल, काल, धनपाल सभी हैं चेरे,
पवन बुहारें भवन, वरुण घर पानी भरते मेरे।
तूने मेरी महिमा को तिलमात्र नहीं रे! जाना,
इसीलिये उस अधम वनेचर के गुण बहुत बखाना।
हम सब हैं स्वच्छन्द सभी पर शासन करने वाले,
तब तेरे तापस से क्योंकर हम हों डरने वाले?"

हनुमान- (क्षुब्ध होकर) -
"सर्वेश्वर प्रभु को बस तू ही हुआ अधम कहने वाला,
अब तेरा सम्पूर्ण गर्व-गिरि है सत्वर ढहने वाला।
करता है परहेज पथ्य से-तू ऐसा बौराया है,
तेरा अहम्-ब्याल अब तेरा सर्वनाश बन आया है।
मेरा-मेरा जिसे कह रहा-कोई काम न आयेगा,
मुट्ठी बाँधे आया था तू हाथ पसारे जायेगा।"

रावण- (क्रोध सहित तमतमा कर)
"हो चुका बहुत, रे ढीठ! न कर अब साहस बात बढ़ाने का,
अधिकार न तेरा है मुझको यों बहु उपदेश सुनाने का।
(सभासदों की ओर देखते हुए सेनापति से)
ओ सेनापति! यह वानर तो उद्दण्ड अतीव विवादी है,
यह कहने को ही वानर है, पर नर से अधिक फसादी है।
यह जिसके बल पर फूल रहा-वह तापस भी क्या जानेगा,
काट लो शीश सत्वर इसका, यह ऐसे बात न मानेगा।"
(सेनापति सिपाही को संकेत से आदेश करता है)

सिपाही- (तलवार उठाकर) बस खबरदार! अब मरने को हो जा तैयार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(विभीषण का तीव्रता से सामने आना)

विभीषण- (हाथ जोड़कर) ज्येष्ठ भ्राता! नमस्कार।

"हे भाई! दूत क्षम्य होता है-इस पर आप विचार करें।
हो लांक्षित जिससे राजनीति-वैसा न आप व्यवहार करें।
राजन! इस राजसभा में ही हो जाय न यों अन्याय खरा,
यदि दण्ड इसे देना ही है-तो करें अन्य समुपाय खरा।"

सभी सभासद- (एक साथ) हाँ-हाँ, महाराज ठीक कहते हैं।

रावण- यदि यही ठीक है-तो सुनो-

"पूछा न किसी से-लंका में चुपचाप चोर-सा घुस आया,
वानर को पूँछ बहुत प्यारी, है रहता उस पर बौराया।
इसलिये जला दो पूँछ अभी, अंतिम आदेश हमारा है,
इसका स्वामी क्या कर लेगा-वह स्वयं वन्य बेचारा है।"

(अट्टहास करता है)

हनुमान- (हँसकर)-(स्वगत)-धन्य हो प्रभो! 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः'।

"दण्ड-नीति का वाह, क्या हुआ अपूर्व विधान,
यही पूँछ सब दुष्ट का हर लेगी अभिमान।
करना था सो कर चुकी वाणी निज कर्तव्य,
अग्निदेव को आज मैं दूँ लंका का हव्य।"

(सिपाहियों द्वारा हनुमान को भण्डार-गृह में ले जाना)

हनुमान- (पूँछ को उठाकर उछालते हुए) जय श्रीराम!

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : पञ्चदश

(परदा खुलता है)

(लंका-दहन)

(पूरी लंका जल रही है, लोग हाय-हाय कर रहे हैं)

समवेत स्वर- लंका जल रही है। हाय, बचाओ-बचाओ।

हनुमान- जय श्रीराम! (अधीरता से एक ओर देखकर)-(स्वगत)- अरे, यह तो भक्त विभीषण का भवन है, प्रभु के भक्त का घर है। इसे नहीं जलाऊँगा। (सामने देखकर) और; यह त्रिजटा का घर है। यह भी माता की सेवा करती है। इसका भी घर नहीं जलाऊँगा।

(दूसरी ओर कुछ दूरी पर देखकर)

हनुमान- (आश्चर्य से) अरे, जब सारी लंका जल रही है तब यह कौन है-जो पड़ा सो रहा है?

(सहसा एक ओर से एक स्त्री घबड़ाई हुई आती है)

स्त्री- (आकर हनुमान को हाथ जोड़ती हुई) स्वामी! क्षमा करें, दया करें। मैं कुम्भकरण की पत्नी हूँ। हे नाथ! मेरा पति छह मास सोता है और केवल एक दिन के लिये जागता है, तो स्वामी! वह दिन भी उसके भोजन में ही बीत जाता है। नाथ! मेरा पति अन्यायी नहीं है। उसने श्रीराम का कोई अपराध नहीं किया है। वह सोता ही रहता है। रावण के अत्याचारों में उसका हाथ नहीं है। स्वामी! उसे क्षमा करें। मेरे सुहाग की रक्षा करें। मैं आपसे अपने सुहाग की भीख माँगती हूँ। स्वामी! मेरे सुहाग की रक्षा करें। मेरी रक्षा करें नाथ!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (हँसकर) जय श्रीराम! अच्छा, सोता है, तो सोने दे। मैं तेरा भी घर नहीं जलाऊँगा। तू चिन्ता न कर।

(हनुमान का प्रस्थान)

(घबड़ाये हुए रावण का धनुष बाण के साथ प्रवेश)

रावण- (अधीरतापूर्वक) अरे, यह कैसा अनर्थ हो रहा है? एक छोटा-सा बानर सारी लंका जला रहा है!

(धनुष से बाण छोड़ता है)- (बाण की आवाज होना)

रावण- वरुण देव! तुम चुपचाप क्या देख रहे हो? मैं आज्ञा करता हूँ। तुम शीघ्र घनघोर वृष्टि करके लंका में लगी आग को शांत कर दो।

(आकाश में बाण चलाना, लाल प्रकाश से हरा होना, जल देखकर हनुमान का विस्मित होना, पुनः 'जय श्रीराम' कहते ही ज्वालाओं का दो गुना बढ़ना)

रावण- (चारों ओर देखकर- आश्चर्य!) अरे यह क्या? अग्नि तो वरुणास्त्र से शांत हो गयी थी किन्तु जल तो घी के समान जलने लगा। सैनिक!............ सैनिक!........... शीघ्र आओ सैनिक!

सैनिक- (हाथ जोड़े आकर) आज्ञा स्वामी!

रावण- सैनिक! तुरन्त बन्दीगृह जाकर कालदेव को मेरे सम्मुख उपस्थित करो।

सैनिक- नाथ! जो आज्ञा। (प्रस्थान)

(काल देव का हाथ जोड़ते हुये प्रवेश)

काल- लंकापति महाराज की जय हो! जय हो!!

रावण- (आक्रोशपूर्वक)-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अरे काल! तू यहाँ खड़ा क्यों मेरी जय-जय करता है?
क्यों न झपट कर इस बानर के प्राणों को तू हरता है?
कहीं दुष्ट वानर यह पूरी लंका ही न जला डाले।
दौड़-दौड़ रे काल! त्वरित तू इसको अभी चबा डाले।।"

काल- (हाथ जोड़े हुए सिर झुकाकर) नाथ! जो आज्ञा। मैं अभी जाकर उस बानर को खा लेता हूँ।

रावण- मैं तब-तक लंकावासियों को भूगर्भ में छिपाकर उनके प्राणों की रक्षा करता हूँ।

(एक ओर से रावण का प्रस्थान), (दूसरी ओर से हनुमान का प्रवेश)

हनुमान- (सामने काल को देखकर) कौन? काल, तुम? तुम यहाँ इस समय क्यों आये हो?

"अरे काल! तू लोकजीत, जगजीत बखाना जाता है,
(अपनी ओर लक्ष्य करके)
यह शरीर है रामदास, जो कालजीत कहलाता है।।
रावण का सहयोगी होकर आज यहाँ तू आया रे!
लेकिन मुझ पर पड़ न सकेगी तेरी कुछ भी छाया रे!!
तुझे यहाँ पर आने का मैं मजा चखाये देता हूँ।
अरे, ठहर-मैं तुझे गाल में अभी दबाये लेता हूँ।"

(हनुमान का काल को मुँह में रखना)

(घबड़ाये हुये इन्द्र का प्रवेश)

इन्द्र- (साञ्जलि) पवनपुत्र हनुमान को देवराज इन्द्र का प्रणाम!

हनुमान- (आश्चर्य पूर्वक देखकर) प्रसन्न रहें देवेन्द्र! आप, और इस समय लंका में? कहिये देवराज!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिये- आप क्या कहना चाहते हैं? मुझसे आपका क्या कार्य है?

इन्द्र- (हाथ जोड़कर)

"हे महावीर! होकर प्रशन्न हम देवों का उपकार करें,
इस मृत्युलोक के नियमों का विच्छिन्न नहीं यों तार करें।
सोने की लंक जला करके प्रभु! क्षार भले सौ बार करें,
लेकिन निकाल दें अभी काल को-यही विनय स्वीकार करें।।"

हनुमान- (हँस कर)- बस, इतनी-सी बात है? अच्छा मैं आपके कहने पर काल को छोड़ देता हूँ।

(काल को मुँह से निकालकर)

जाओ काल! अब मेरे पास मत आना अन्यथा; तुम मेरे दण्ड से नहीं बच पाओगे। लो- मैं तुम्हें मुक्त करता हूँ। भाग जाओ यहाँ से।

काल- (सिर झुकाकर हाथ जोड़े हुये) उपकार, नाथ! उपकार। (इन्द्र की ओर देखकर)

देवराज! आपने महान कृपा की जो आज मुझे आपने महावीर से मुक्त कराया है।

इन्द्र-काल- (एक साथ) महावीर हनुमान की जय!

(हनुमान का माता जानकी के पास सत्वर प्रस्थान)

(यवनिका - पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षोडश

(परदा खुलता है)

(स्थान-अशोक वाटिका)

(जानकी राक्षसियों के पहरे में बैठी हैं)

हनुमान- (सामने पहुँचकर हाथ जोड़े हुये) माता के चरणों में हनुमान का प्रणाम।

सीता- चिरंजीव रहो। पुत्र, फल खा चुके?

हनुमान- हाँ माता! आज भरपेट फल खाये।

(साञ्जलि)- "हे माता! रघुनाथ में लगा हुआ है ध्यान।
कृपा-हस्त शिर फेरिये, कर दूँ मैं प्रस्थान।।
जैसे प्रभु से मुद्रिका मुझे मिली सविशेष।
वैसे ही निज चिह्न दें मुझे सहित सन्देश।।"

सीता- (चूड़ामणि निकाल कर हनुमान को देते हुए)
"हे पवनपुत्र! चूड़ामणि लो, प्रभु के चरणों में धर देना,
सविनीत निवेदन यह मेरा, उनके चरणों में कर देना।
यदि मास-अवधि में ही न यहाँ प्रभु किसी भाँति आ जायेंगे,
तो वे अपनी इस सीता को फिर कभी न जीवित पायेंगे।
प्रभु को जयन्त की याद दिला उनकी शर-शक्ति जगा देना।
करुणानिधान के चरणों में मेरी अरदास लगा देना।।"

हनुमान- माता! आप चिन्ता न करें। प्रभु अब शीघ्र ही आकर राक्षसों का संहार करेंगे और आपको यहाँ से ले चलेंगे। अच्छा माँ! प्रणाम। (हनुमान का सीता के चरणों में सिर रखना)

सीता- (हनुमान के सिर पर हाथ फेरते हुए) प्रसन्न रहो पुत्र!

हनुमान- (उठकर) जय श्रीराम! (प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तदश

(परदा खुलता है)

(समुद्र तट पर जाम्बवन्त आदि प्रतीक्षा कर रहे हैं)

हनुमान- (आकर स्वगत) ज़य श्रीराम!......... जय श्रीराम!!
(सामने सभी को दूर से देखते हुए) (स्वगत) देखो ...... सारी वानर सेना मेरे आने की प्रतीक्षा कर रही है। सभी की आँखें लंका की ओर ही लगी हुई हैं।
(सत्वर पहुँच कर) जय श्रीराम!

(हनुमान को सामने आया देखकर)

सभी- (एक साथ हर्षातिरेक से) महावीर हनुमान की जय!
संकटमोचन महावीर की जय!

जाम्बवन्त- धन्य हो महावीर हनुमान! आपने हम लोगों के संकट का निवारण किया है। आओ- अब हम लोग अविलम्ब प्रभु के पास चलें............... रघुनाथ हम सबकी प्रतीक्षा में आतुर-अधीर होंगे।

हनुमान- (कुछ सोचकर, अधीरता से)-
हाँ, शीघ्र चलें और प्रभु को माता जानकी का समाचार सुनायें।

(सभी शीघ्रतापूर्वक प्रस्थान करते हुए)

हनुमान- (जोर से) जय श्रीराम!

सभी एक साथ- जय श्रीराम!

(यवनिका पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमन्महानाटक

अंक तृतीय

दृश्य : प्रथम

(पट- उन्मीलन)

(प्रवर्षण गिरि की स्वच्छ शिला पर राम-लक्ष्मण आसीन हैं)

राम- भाई लक्ष्मण! अभी तक सीता का पता नहीं लगा?

लक्ष्मण- हाँ स्वामी! अभी तक वानर सेना लौटकर नहीं आयी।

(दूर सामने की ओर लक्ष्मण देखते हैं)

(उसी समय हनुमान के साथ पूरे दल का आकर राम के चरणों में गिरना)

राम- (उत्सुकता पूर्वक) कहिये जाम्बवन्त! सीता का कुछ पता लगा? किसी ने मैथिली को देखा?

जाम्बवन्त- (साञ्जलि) -

"हे नाथ! आपके चरणों का हम दासों को आधार मिला,
कृतकार्य नहीं वह क्या होगा-जिसको प्रभु का हो प्यार मिला।
सौ योजन सागर को लाँघा, लंका में जाकर नाम किया,
इन महावीर ने प्रभो! आपका इच्छित पूरा काम किया।"

राम- (हनुमान से) धन्य हो महावीर हनुमान! तुम धन्य हो।

(हनुमान को विह्वलता पूर्वक देखते हुए)

"महावीर हनुमान! हूँ तुमसे तुष्ट अपार।
करूँ तुम्हारा मैं कहो - कैसे प्रत्युपकार??"

(हाथ से अपनी ओर संकेत करते हुए)

"वत्स! राम यह ऋणी रहेगा सदा तुम्हारा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने यह उपकार किया है सब से न्यारा।।

(दोनों भुजायें पसार कर)

आओ-आओ, वत्स! हृदय से तुम लग जाओ।

लंका में सीता की देखी दशा बताओ।।''

(हनुमान राम के चरणों में पुनः गिरते हैं, राम उनको उठाकर वक्षस्थल से लगा लेते हैं)

हनुमान- (धीरे-धीरे अलग हटकर-साञ्जलि)- प्रभो!

''जैसे पिँजड़े में पड़ी हुई सिंहनी महा दुख पाती है,
जैसे दाँतों के बीच दबी रसना प्रतिपल अकुलाती है।
पद्मिनी सरोवर से बाहर पड़कर जैसे मुरझाती है,
जैसी गति मछली की मरुथल में पड़ करके हो जाती है।
वैसे ही माता वैदेही लंका नगरी में रहती हैं,
उत्पात राक्षसों के अनेक वे नित्य-निरन्तर सहती हैं।

(कुछ सोचते हुए गंभीर होकर)

है कहा उन्होनें-क्या जयन्त की याद न प्रभु को आती है,
अपराध हो गया क्या मुझसे? जो मेरी सुध न सताती है।
वे करुणासागर मास-दिवस में ही न यहाँ यदि आयेंगे,
तो शपथ सत्य की वे मुझको बस; नामशेष ही पायेंगे।''

(चूड़ामणि राम के हाथ में देते हुये)

''चूड़ामणि दी है माता ने, प्रभो! इसे स्वीकार करें।
उनके दीन-दुःखी जीवन का यथाशीघ्र उपचार करें।।''

(राम चूड़ामणि लेकर हृदय से लगा लेते हैं)

राम- हाँ हनुमान, हाँ। वहाँ प्राणप्रिया जानकी को अवश्य महान कष्ट होता होगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (हाथ जोड़कर)- प्रभो!

"नहीं मैथिली को कभी मिलता है विश्राम,
रटती रहती हैं सदा नाथ! आपका नाम।
मन-मन्दिर में छवि बसी, नयनों में शुचि ध्यान,
इसीलिए तो प्राण भी कर न सके प्रस्थान।"

(कुछ रुक कर)

"हे नाथ! न माता के हित में अब आगे और करें देरी,
लंका को सेना कूच करे-हम अभी बजा दें रणभेरी।।"

(राम का हनुमान के शिर पर हाथ रखना)

राम- "धन्य - धन्य तुम धन्य हो वीर भक्त हनुमान!
मति - गति-धृति का मैं करूँ कैसे वत्स! बखान??"

(कुछ सोचकर)

"उपकार किया तुमने, तुमको, पर; रंच हुआ अभिमान नहीं।
प्रिय अन्य अनेक भले हैं मुझे, प्रिय किन्तु तुम्हारे समान नहीं।।
'मधुरेश' चराचर में तुम-सा परिपूर्ण कहीं उपमान नहीं।
यह राम-कथा रसहीन रहे यदि साथ रहें हनुमान नहीं।।"

(हनुमान का राम के चरणों में शिर झुकाना, राम उनको उठाते हैं)

जाम्बवन्त- (उल्लासपूर्वक)-

"पवनपुत्र! तुम धन्य हो, धन्य वीर हनुमान!
किया तुम्हीं ने साथियों को जीवन का दान।।"

(सुग्रीव की ओर देखकर)

"कपिराज! तुम्हें यदि राघव से हनुमान मिलाते नहीं कभी।
तो बालिराज से तुम अपना यों जीवन पाते नहीं कभी।।
मैं इसीलिए तो कहता हूँ-ये दुखीजनों के त्राता हैं।
कपियों के जीवनदाता हैं, जीवों के भाग्यविधाता हैं।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुग्रीव- (साञ्जलि)-

"इसमें सन्देह नहीं, सबके बजरंगी ही उपकारी हैं।
नर-वानर क्या? सुर भी इन पर बलिहारी हैं, बलिहारी हैं।।"

(राम की ओर हाथ जोड़कर)

सुग्रीव- स्वामी! अब यदि आज्ञा पाऊँ तो सेना को युद्ध के लिये उद्यत करूँ।

राम- (सोत्साह) हाँ-हाँ, अब आप लोग युद्ध की तैयारी करें। पूरी वानर-सेना को लंका पर चढ़ाई करने की आज्ञा सुना दें।

हनुमान- (उत्साहाधिक्यपूर्वक) जय श्रीराम! बस, अब आज्ञा मिल गयी। आप लोग युद्ध की तैयारी करें।

राम- (सुग्रीवादि से) आओ, हम लोग मिल कर महावीर हनुमान का गुणानुवाद करें।

सभी- (एक साथ) हाँ-हाँ स्वामी! अवश्य करना चाहिये।

(सब एक साथ गाते हैं)

"आओ हम मिलकर जय बोलें महावीर हनुमान की।
तैयारी करते जायें अब लंका पर अभियान की।।"

(धीरे-धीरे स्वर मन्द पड़ता है)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वितीय

(पर्दा खुलता है)

(स्थान- समुद्र तट पर राम का सैन्य-शिविर)

(समय- संध्या का पूर्व काल)

(राम, लक्ष्मण, जाम्बवन्त, हनुमान, सुग्रीव इत्यादि लंका पहुँचने हेतु विमर्श कर रहे हैं, चारो ओर वानर सैनिक शिविर-व्यवस्था में लगे हुए हैं। सहसा आकाश मार्ग से आते हुए किसी को देखने लगते हैं।)

(आगन्तुक समुद्र-तट पर उतरता है, वानर उसको घेर लेते हैं।)

अंगद- (आगे बढ़कर)- आप कौन हैं? और, यहाँ क्यों आये हैं?

आगन्तुक- (विनत भाव से)- मैं लंकापति रावण का अनुज विभीषण हूँ। मुझे अयोध्यापति श्रीराम से मिलना है।

अंगद- वानर सैनिको! इसको पकड़कर बन्दी बना लो, यहाँ से भागने न पाये। मैं अभी प्रभु श्रीराम को इसकी सूचना देता हूँ। (अनेक वानर सैनिक विभीषण को अपने पूँछ-जाल में जकड़ लेते हैं और पीड़ित करने की चेष्टा करते हैं)

विभीषण- (हाथ जोड़कर)- देखो भाई! मुझे मारो नहीं। मैं तो परमप्रभु रघुवीर श्रीराम की शरण में आया हूँ।

अंगद- (तरजते हुए)- तुम ऐसे ही चुपचाप खड़े रहो। किसी भी प्रकार के माया-बल से भागने की चेष्टा करने पर प्राणदण्ड मिलेगा।

विभीषण- (विनम्र होकर)- मैं तो स्वयं लंका से भागकर यहाँ आया हूँ। अब यहाँ से भागकर कहाँ जाऊँगा, मुझे प्रभु श्रीराम से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिलवा दो, वे ही मेरे लिए एक मात्र शरण हैं।

अंगद- तुम बहुत सफाई मत दो। अभी मैं अयोध्यापति को सूचित करता हूँ, उनकी आज्ञानुसार ही तुम्हारे प्रति दण्ड-विधान किया जायेगा। (सैनिकों से)- देखो, सावधानीपूर्वक इनको पकड़े-जकड़े रहना।

सैनिक- आप शीघ्र ही रघुनाथ जी को सूचित करके उनका आदेश आकर बताइये।

अंगद- ठीक है- मैं अभी आता हूँ (प्रस्थान)

(श्रीराम के सम्मुख पहुँचकर)

अंगद- (करबद्ध)- प्रभो! सिन्धु-तट पर आकाश-मार्ग से एक आगन्तुक आया है। वह स्वयं को लंकापति रावण का अनुज विभीषण कहता है। आपसे मिलना चाहता है। नाथ! अब उसके विषय में आप ही प्रमाण हैं।

श्रीराम- (सबकी ओर देखकर)- आगन्तुक के विषय में आप सबका क्या मत है?

जाम्बवन्त- हे रघुनाथ! मेरे विचार से आगन्तुक चाहे जो हो, है तो वह लंका का राक्षस ही। उसको बन्दी बनाकर रखना ही उचित रहेगा।

लक्ष्मण- नहीं प्रभो! उस राक्षस का अंग-भंग कर देने से वह कुछ भी अन्यथा करने में असमर्थ हो जायेगा, भाग भी नहीं पायेगा। अवश्य ही वह हमारा भेद लेने आया है।

राम- हाँ, लक्ष्मण! तुम्हारा कथन भी ठीक लगता है किन्तु......

(कुछ क्षण सोचकर सुग्रीव को देखते हुए)

राम- किष्किन्धापति! आपका क्या अभिमत है इस संदर्भ में?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुग्रीव- (हाथ जोड़कर)- प्रभो! मेरा तो निश्चित मत है कि आगन्तुक रावण का भाई है। तब तो निश्चय ही वह कोई न कोई घात एवं छल कर सकता है, इसलिए उस पर विश्वास करना हितकर नहीं है। असुरों की माया सहजता से समझी नहीं जा सकती, इसीलिए मेरे विचार से तो उसका वध कर देना ही उचित है।

राम- वानरेन्द्र! आप ठीक ही कह रहे हैं, किन्तु..........किन्तु मेरे विचार से बिना भली-भाँति जाने, आँख मूँदकर वध कर देना उचित नहीं होगा। वह भेद लेने भी आया होगा तो लक्ष्मण के बाण से भाग कर कहाँ जायेगा? भाग नहीं पायेगा। यह भी संभव है कि वह रावण के अत्याचार-अन्याय से पीड़ित-व्यथित होकर ही मेरी शरण में आया हो, और. ...... यदि वह शरण में आया है, तब तो उस शरणागत की रक्षा करना मेरे लिए प्राणों से भी अधिक प्रिय कर्तव्य है। (हनुमान की ओर देखकर)-और...... केशरीनन्दन! तुम्हारा इस संदर्भ में क्या अनुमान है?

हनुमान- (हाथ जोड़कर) हाँ, प्रभो! आपका अभिमत ही अधिकाधिक श्रेयष्कर है। आगन्तुक यदि रावण का अनुज है, तो वह अवश्य ही आपकी शरण पाने के लिए ही आया है क्योंकि मैंने लंका में माँ मैथिली का पता लगा-पाने में विभीषण की साधुता और आपके प्रति पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा का लगाव-चाव स्वयं अनुभव किया है।

राम- हाँ, हनुमान! तुम समुचित कह रहे हो। किष्किन्धापति और अंगद को साथ लेकर तुम जाओ और आगन्तुक को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आदरपूर्वक ले आओ।

"शरणागत को जो सुजन देते रक्षा-दान।
मानव वही महान हैं, वे ही देव समान।।"

हनुमान- (हाथ जोड़कर)- आपकी जो आज्ञा स्वामी!

(सुग्रीव, अंगद के साथ हनुमान का प्रस्थान)

हनुमान- (आगन्तुक के निकट पहुँचकर वानर सैनिकों से)- आप सभी लोग आगन्तुक को बन्धन-मुक्त कर दें।

(सभी आगन्तुक के बन्धन शिथिल कर देते हैं)

विभीषण- (बन्धनमुक्त होकर)- कृपासागर श्री रघुवीर राम की जय! पवनपुत्र हनुमान की जय!

हनुमान- मेरी जय नहीं बोलो भक्तराज! आप परम प्रभु श्रीराम के सम्मुख शीघ्र उपस्थित हों। (विभीषण को लेकर हनुमान आदि का श्रीराम के सम्मुख पहुँचना) (हाथ जोड़े हुए विभीषण अत्यन्त आतुर भाव से श्रीराम के चरणों में दण्डवत गिर पड़ता है और कहता है-) प्रभो! मेरे अग्रज दशानन ने पद-प्रहार करके मुझे लंका से निकाल दिया है। मैं विभीषण सब कुछ त्यागकर आपकी शरण में आया हूँ-

"त्राहि - त्राहि दे दीन दयाल।
मेटहु नाथ! सकल जंजाल।।
मोरे हित दूसर नहिं कोउ।
शरण जानि परिपालक होउ।।
व्यथा-कथा कुछु कही न जाय।
स्वामी! सब विधि तुम्हीं सहाय।।
जय-जय-जय समर्थ रघुवीर!
प्रभो! हरउ शणागत-पीर।।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम- (आसन से उठकर आगन्तुक को उठाकर गले लगाते हुए)- तुम मेरे लिये परम आत्मीय हो गये हो। मैं तुमको अभयदान देता हूँ। तुम सारी चिन्ताएं-शंकाएं एवं भय त्याग दो। तुम्हारा इस दशरथपुत्र राम के परिवार में स्वागत है। तुमने अभी तक जिस मानवधर्म का आचरण एवं रक्षा की है, तुम्हारा वही धर्माचरण तुम्हारा रक्षक रहेगा। श्रेय-प्रेय एवं सुयश के साथ आनन्द तुम्हारा जीवन-संबल बने। मेरे लिये तो तुम लंका के भावी अधिपति हो। लो- मैं लंका के राजपद पर अभी से तुम्हारा अभिषेक-तिलक करता हूँ। (हनुमान की ओर देखते हैं, हनुमान समुद्र-जल लाकर देते हैं, श्रीराम जल विभीषण पर छिड़क कर सिन्धुरज से उसके मस्तक पर राजतिलक कर देते हैं।)

विभीषण- (आनन्दित होकर कृतार्थता पूर्वक)- शरणागतवत्सल करुणावरुणालय परमात्मा श्रीराम की जय!

हनुमान- (अत्यधिक उल्लासपूर्वक)-सर्वेश्वर परमप्रभु श्रीरघुनाथ की जय! (जाम्बवन्त-सुग्रीव एक साथ)-शरणागतवत्सल अयोध्यानाथ की जय! (सभी बारंबार जय-जयकार करते हैं)

(यवनिका पतन)

(नेपथ्य से)

जो निर्मल मन जन अनाथ हैं, उनको राम सनाथ करें।
चाहे जो हो, शरणागत की रक्षा श्रीरघुनाथ करें।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : तृतीय

(पट - उन्मीलन)

(स्थान-समुद्र-तट)

(राम सम्पूर्ण वानरसेना के साथ विचारमग्न बैठे हैं)

लक्ष्मण- (हाथ जोड़ कर) आर्य! आज्ञा करें। मैं सागर को अभी अग्निबाण से सुखा डालूँ, जिससे हमारी सेना शीघ्र लंका पहुँच सके।

राम- (गम्भीरतापूर्वक)- नहीं लक्ष्मण! ऐसा करना ठीक नहीं। अग्निबाण के प्रयोग से असंख्य निरपराध जीव मारे जायेंगे। प्रकृति की व्यवस्था भी भंग होगी। अतः अन्य उपाय ही सोचना होगा।

जाम्बवन्त-(सविनय)- रघुनाथ! आप चिन्तित न हों। हमारी सेना सागर को सरलता से पार कर सकती हैं।

राम- (विस्मयपूर्वक सोत्सुक) वह कैसे ऋक्षराज!

जाम्बवन्त- प्रभो! वानरसेना में नल-नील नाम के दो वानर हैं। इनके बाल्यकाल में एक ऋषि ने इन्हें शाप दिया था कि ये दोनों जो भी वस्तु अपने हाथ से जल में डालेंगे, वह डूबेगी नहीं- तैरती रहेगी। इनका वह शाप इस समय वरदान सिद्ध होगा। आप इनके द्वारा सागर पर सेतु का निर्माण करवायें।

राम- (सुग्रीव से)- वानरराज! दोनों शिल्पिवरों को बुलवाइये।

(सुग्रीव के आदेश से नल-नील का आगमन)

नल-नील- (राम को साभिवादन)- आज्ञा करें स्वामी!

राम- (सस्मिति)- शिल्पिवरो! सेतु के बिना समुद्र को कैसे पार किया जाये? तुम दोनों का इस कार्य में सहयोग आवश्यक है।

नल-नील- (नम्रतापूर्वक)- आज्ञा शिरोधार्य है स्वामी!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुग्रीव- इस कार्य में सारी वानरसेना तुम्हारा हाथ बँटायेगी। सभी वानर प्रस्तर-खण्डों का आनयन करेंगे। तुम दोनों यथाशीघ्र सेतु-निर्माण सम्पन्न कर दो।

नल-नील- (हाथ जोड़कर) ठीक है स्वामी, ऐसा ही होगा।

सुग्रीव- (हनुमान से) पवनपुत्र! सेतु-रचना के लिये प्रस्तरों का समाधान कराया जाय।

हनुमान- (सविनय) जय श्रीराम! (पत्थर-आनयन हेतु प्रस्थान)

(सभी वानर दूर-दूर से प्रस्तर खण्ड लाते हैं, नल-नील द्वारा पत्थरों को समुद्र में छोड़ना, पत्थर-खण्ड तैरते हुए बहने लगते हैं, नल-नील खिन्न होकर सुग्रीव से समस्या-निवेदन करते हैं।)

सुग्रीव- (जाम्बवन्त से) ऋक्षराज! अब क्या हो?

जाम्बवन्त- इसका समाधान तो महावीर हनुमान ही कर सकते हैं।

सुग्रीव- (उल्लासपूर्वक) पवनपुत्र को बुलाया जाय।

हनुमान- (आकर हाथ जोड़ते हुए) जय श्रीराम!

सुग्रीव- महावीर! नल-नील द्वारा छोड़े हुए पत्थर पानी पर तैरते तो हैं किन्तु एक दूसरे से जुटते नहीं-बह जाते हैं।

हनुमान- इस समस्या का समाधान तो प्रभु का नाम ही कर सकता है।

सुग्रीव- (कौतूहलपूर्वक) वह कैसे? शीघ्र बताइये-क्या किया जाय?

हनुमान- मैं एक पत्थर पर 'रा' और दूसरे पर 'म' लिखकर देता जाऊँगा। नल-नील दोनों को एक साथ सटाकर पानी में छोड़ें।

सुग्रीव- (प्रसन्न होकर) अच्छा, पवनपुत्र! शीघ्रता करो।

(हनुमान का पत्थरों पर 'रा' और 'म' लिखकर देना, नल-नील द्वारा पत्थरों को जोड़कर सेतु-निर्माण को आगे बढ़ाना, सभी वानर दूर-दूर से पत्थर लाते हुए गाते हैं)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी वानर- (एक साथ)-

राघव-दल को आतुरता है लंका पर अभियान की।
जय बोलो हनुमान की, जय बोलो हनुमान की।।
बड़े-बड़े ज्ञानी-विज्ञानी काम न जो कर पाते,
उसे बजाते ही चुटकी हनुमान त्वरित कर लाते।
किन्तु नहीं छू पायी इनको गन्ध कभी अभिमान की।
जय बोलो हनुमान की, जय बोलो हनुमान की।।
राम-भक्ति जो करता मन से, उसकी महिमा भारी,
उसे सहज ही मिल जाती हैं ऋद्धि-सिद्धियाँ सारी।
ऐसी न्यारी महिमा जग में सदा भक्त-भगवान की।
जय बोलो हनुमान की! जय बोलो हनुमान की।।
यही, वही हनुमान-जिन्होंने फूँक दिया गढ़ लंका,
घूम-घूम कर राम-सुयश का वहाँ बजाया डंका।
राम-कार्य के मतवाले हैं, थाह नहीं बल-ज्ञान की।
जय बोलो हनुमान की! जय बोलो हनुमान की।।
राम-नाम की सारी महिमा महावीर ने जानी,
राम-भक्ति में परमेश्वर की शक्ति स्वयं पहचानी।
आओ, हम पद-रीति गहें इन मूर्तिमान कल्यान की।
जय बोलो हनुमान की! जय बोलो हनुमान की।।
सेतु-बन्ध पूरा करने में जुटे हुए बजरंगी,
हैं नल-नील और हम सब भी इनके साथी-संगी।
दूर नहीं अब अवधि रह गयी लंका पर संधान की।
जय बोलो हनुमान की, जय बोलो हनुमान की।।

(धीरे-धीरे स्वर मन्द पड़ता जाता है)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्थ

(पर्दा खुलता है)

(स्थान- दक्षिणी समुद्र-तट)

(लंका के लिये सेतु-निर्माण में नल-नील लगे हुए हैं। अन्य वानर-रीछ दूर-दूर से शिलायें लाकर दे रहे हैं। एक गिलहरी समुद्र में स्नान करके बालुका में लोटकर निर्माणाधीन सेतु पर चढ़कर बालुका झाड़ता है और बार-बार यही क्रिया दुहराता है जिससे सभी को आने-जाने में अड़चन-असुविधा हो रही है।)

हनुमान- (गिलहरी को देखकर दयाभाव से)- अरे क्षुद्र जीव! तुम यहाँ सेतु पर क्यों आ-जा रहे हो? देखते नहीं, असंख्य रीछ-वानर शिलायें ला रहे हैं। तुम्हारे यहाँ आने-जाने से हम सबको बाधा-व्यवधान हो रहा है। किसी के पैर से कुचल गये, तो तुम्हारे मरने से यह सेतु अपावन हो जायेगा। यहाँ से दूर भाग जाओ। अब मत आना। यहाँ तुम्हारा कोई कार्य नहीं है।

गिलहरी- (निर्भीकता पूर्वक)- अरे वानर! तुम लोग यह सेतु किसके लिये बना रहे हो?

हनुमान- ओह, बहुत ढीठ हो तुम? तुमको यह भी पता नहीं कि यह सेतु परम पुरुष महात्मा राम के लिये बनाया जा रहा है। वे और उनकी यह वानर सेना समुद्र पार लंका जायेगी। वे ही हमारे स्वामी हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिलहरी- तो क्या परम पुरुष राम तुम्हारे ही स्वामी हैं? मेरे नहीं? बताओ किस-किस के स्वामी हैं और किसके नहीं हैं वे? क्या तुमको ही उनकी सेवा करने का अधिकार है?

हनुमान- (खीझते हुये)-अरे, भगवान राम तो सभी के स्वामी हैं।...... सर्वेश्वर हैं।....किन्तु, तुम यह बकवास क्यों कर रहे हो? ......शीघ्र भाग जाओ यहाँ से।

गिलहरी- तो, जब भगवान राम सर्वेश्वर हैं, सबके स्वामी हैं, तो वे मेरे भी स्वामी हैं, मेरा भी उनकी सेवा करने का उतना ही अधिकार है, जितना तुम सभी का। ...मैं यों तुम्हारे कहने से यह सेवा नहीं छोड़ सकता। तुम मेरा क्या कर लोगे? मैं तो स्वामी की यह सेवा अवश्य करूँगा। तुम मेरे इस अधिकार को नहीं छीन सकते।

हनुमान- (साश्चर्य) क्या कहा? सेवा करोगे। अरे लघुगात! तुम क्या सेवा करोगे? यहाँ से भाग जाने में ही तुम्हारी भलाई है। अब व्यर्थ बकवास बन्द करो।

गिलहरी- तुम यह क्या कहते हो? मैं लघुगात हूँ, तो क्या परमात्मा राम की कुछ भी सेवा नहीं कर सकता? तुमको सेतु का यह विसम तल दीख नहीं पड़ता? परम प्रभु राम के कुसुम-कोमल चरण इस ऊबड़-खाबड़ सेतु पर दुखेंगे नहीं क्या? इस उच्चावच्च तल को मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार बालुका बिछाकर सम व कोमल बना रहा हूँ जिससे मेरे प्रभु को इस पर चलने में कष्ट कम हो। तुम मुझे भाग जाने को कहते हो? मैं यह सेवा नहीं छोडूँगा। जाओ-कह दो अपने स्वामी से।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(हनुमान का प्रस्थान)

हनुमान- (राम के सम्मुख जाकर साञ्जलि)-प्रभो! एक लघुगात हठी जीव से सेतु-निर्माण में विघ्न पड़ने वाला है।

राम- (सविस्मय)- विघ्न पड़ने वाला है? ......वह कैसे? कौन है सेतु-बन्धन में विघ्न करने वाला?

हनुमान- स्वामी! एक गिलहरी समुद्र में डुबकी लगाकर पुलिन की सिकता में लोटता है और इस प्रकार रोमों में चिपकी हुई बालुका को सेतु पर जाकर झाड़ देता है। यही क्रिया वह बार-बार करता है, जिससे शिलावाहक वानर-रीछों को आने-जाने में असुविधा होती है। कहीं किसी के पैर से वह कुचल कर मर गया तो सेतु भी अपावन हो जायगा।

राम- (सस्मिति)-तुमने उसको रोका नहीं! उसको नम्रतापूर्वक कहो कि वह वहाँ से हट जाये।

हनुमान- बहुत मना किया; किन्तु वह मानता ही नहीं। बड़ा हठी लगता है।

राम- क्या कहता है वह?

हनुमान- नाथ! क्या कहूँ उसे? .....वह कहता है कि जब प्रभु राम सर्वेश्वर हैं, सभी के स्वामी हैं, तो वे मेरे भी स्वामी हैं। सभी के साथ मुझे भी उनकी सेवा करने का अधिकार है। लघुगात हूँ तो क्या? मैं पुलिन की बालुका से सेतु-तल की विसमता को यथासामर्थ्य कम करने का प्रयास कर रहा हूँ जिससे सर्वेश्वर राम को चलने में अधिक कष्ट न हो। उसने यह भी कहा कि मैं तुम्हारे कहने से अपना कर्तव्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं छोड़ूँगा। तुम मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। जाओ-कह दो अपने स्वामी से।

राम- (साश्चर्य)- अच्छा......! जाओ। आदर और प्रेम सहित उठा लाओ उसको।

(हनुमान का प्रस्थान, गिलहरी को उठा लेना)

गिलहरी- छोड़ दो, मुझे छोड़ दो।........।

हनुमान- (राम के सम्मुख जाकर)-प्रभो! यही है वह गिलहरी।

राम- (सोल्लास)- लाओ- इसे मुझे दो।

(हनुमान का राम के हाथ में गिलहरी को देना)

राम- (बायें हाथ पर गिलहरी को बैठाकर दायाँ हाथ उसकी पीठ पर फेरते हुए सस्नेह)- प्रिय! मैं तुम्हारे स्नेह का सम्मान करता हूँ। तुम्हारी सेवा से मैं तुष्ट हूँ। अब तुम यह सेवा बन्द कर दो। मुझे तो हनुमान अपने स्कन्ध पर बिठाकर ही सेतु पर ले जायेंगे। तुम साकेत में मेरे स्नेह-भाजन रहोगे। तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हूँ मैं। तुम्हारी यहाँ की सेवा पूरी हो गयी। अब तुम जाओ।

(राम के कर-स्पर्श से पीठ पर बने हुए अँगुलियों के निशान देखकर गिलहरी आनन्द विभोर होता हुआ चल देता है। उसके मुख से 'जय भगवान', 'जय हनुमान' बार-बार उच्चरित होता है।)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : पञ्चम

(परदा खुलता है)

(स्थान- लंका में त्रिकूट पर्वत का सुबेल शिखर)

(समय-रात का द्वितीय प्रहर)

(सुबेल शिखर पर राम अपनी वानर वाहिनी के मध्य स्वच्छ शिला पर पत्तों एवं मृगचर्म के आसन पर आसीन हैं। हनुमान और अंगद चरण पलोट रहे हैं। राम के एक ओर विभीषण तथा सुग्रीव एवं दूसरी ओर जाम्बवन्त तथा लक्ष्मण आसीन हैं।)

राम- (विभीषण की ओर देखकर)- लंकेश! आज यहाँ लंका में हम लोगों की प्रथम रात्रि है। आपने समस्त ऋक्ष-वानर वाहिनी को सुव्यवस्थित ठहरा दिया है न? किसी को कोई असुविधा तो नहीं? यहाँ तो आप ही हमारे अगुआ हैं। आपका बहुत भरोसा है हमें।

विभीषण- (साञ्जलि)- आपकी अनुकम्पा से सारी सेना सुव्यवस्थित है। इस शिखर की उपत्यका में चारों ओर फलों से सम्पन्न वृक्ष एवं स्वच्छ जलाशय हैं। किसी को कोई असुविधा न होगी। मैं तो आपका अनुचर मात्र हूँ। अनुचर को अपना अगुआ कहकर इस प्रकार गौरव प्रदान करना तो आपका सहज स्वभाव है प्रभो!

राम- नहीं विभीषण! ऐसा नहीं! इसमें गौरव प्रदान करने जैसी कोई बात नहीं। मेरे लिये तो यही सच्चाई है।

हनुमान- (चरण पलोटते हुए सविनय)-प्रभो! बीच में बोलने के लिये मुझे क्षमा करें। गौरव के प्रसंग पर मैं कुछ कहने की अनुमति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता हूँ। आपकी अनुमति मिले, तो दास कुछ कहे।

राम- कहो, हनुमान! निःसंकोच कहो।

हनुमान- स्वामी! समुद्र तट पर सेतु-बन्धन के पूर्व आपने बालुका-निर्मित शिवलिंग की अर्चा-आराधना कर चुकने पर भी मेरे द्वारा कैलाश शिखर से लाये गये शिवलिंग की स्थापना-अर्चा की और उसका नाम भी आपने 'हनुमदीश्वर' रख दिया। इससे मैं संकोच में हूँ। प्रभो! यह दास तो इस गौरव के योग्य नहीं।

राम- आञ्जनेय! यह बात तो तुम्हारी विनम्रता का विलास है। मैंनें तो तुम्हारे शिवलिंग लेकर लौटने में विलम्ब देखकर शुभ-मुहूर्त न टल जाय, यही सोचकर बालुका का लिंग बनाकर पूजन कर दिया और उसकी 'रामेश्वर' नाम से ख्याति भी कर दी। किन्तु तुम्हारे अतिश्रम पूर्वक लाये गये शिवलिंग का अनादर कैसे कर सकता था? अतः मैंने तुम्हारे द्वारा आनीत शिवलिंग की भी स्थापना-अर्चा की और रामेश्वर लिंग से पूर्व 'हनुमदीश्वर' को पूजनीय घोषित किया। यह तो मेरा परम कर्तव्य था। मैंने यह कार्य अपनी इच्छा और प्रेमवश ही किया है।

(सहसा आकाश में उदित चन्द्रमा को देखते हुए)

राम- (उल्लसित होकर)-अहा! आकाश-सरोवर में उज्ज्वल धवल हंस के सदृश यह चन्द्रमा कितना मोहक है। (विभीषण, सुग्रीव, अंगद, हनुमान की ओर सापेक्ष दृष्टिपात करते हुए) किन्तु .... इस शशि के मध्य में श्यामता क्यों हैं? आप लोग ही कुछ बतायें।

(विभीषण की ओर देखने लगते हैं)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभीषण- (सविनय)-स्वामी! शशि को सुधाकर कहा जाता है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि समुद्र-मंथन से पूर्व नागलोक के नागों ने इसके मध्य का अमृत चूस लिया है, जिससे सुधारिक्त स्थान श्याम हो गया है।

अंगद- मेरी मति में तो चन्द्रमा के सुन्दर रूप पर किसी की नजर न लग जाय। अतः विधाता ने मानो उसके गाल पर काजल का टीका लगा दिया है।

सुग्रीव- मैं तो ऐसा समझता हूँ कि चन्द्रमा विरही जनों को दारुण दुःख देता है। अतः उनकी आहों के अग्नि-धूम से इसका मुख काला हो गया है।

(राम हनुमान की ओर देखने लगते हैं।)

हनुमान- प्रभो! चन्द्रमा तो आपका प्रेमी भक्त है। आपकी श्याम सुन्दर मूर्ति को उसने अपने अन्तःकरण में बसा रखा है। इसीलिये उसमें यह श्यामलता दीख रही है।

सभी- (एक साथ)- हाँ, महावीर जी! आपका कथन ही सबसे अधिक सुखद-सुन्दर है। हम आपके इस कथन पर मंत्र-मुग्ध हैं।

राम- अच्छा, अब रात का द्वितीय प्रहर समाप्ति की ओर है। अब सभी लोग विश्राम करें। प्रातः शीघ्र उठना भी तो होगा।
(सभी विश्राम की मुद्रा में हो जाते हैं)

(यवनिका - पतन)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षष्ठ

(परदा खुलता है)

(स्थान-लंका में राम का सैन्यशिविर)

(समय-रात्रि का प्रथम प्रहर)

(मेघनाद की वीरघातिनी शक्ति से संज्ञाशून्य लक्ष्मण को अपनी गोद में लिये हुए राम का विलाप, हनुमान, सुग्रीव, अंगद, जाम्बवन्त आदि प्रमुख उन्हें घेरे बैठे हैं। चारों ओर वानरसेना का फैलाव, दीपक के आलोक में बार-बार लक्ष्मण को देखकर राम फफक पड़ते हैं।)

जाम्बवन्त- (करुणार्द्र स्वर से)- स्वामी! धैर्य धारण करें। रावण के राजवैद्य सुषेण को यदि यहाँ बुलाया जाय, तो वे कुमार लक्ष्मण को बचा सकते हैं; किन्तु रावण को इसका कुछ भी पता न चले।

राम- (कुछ आश्वस्त होकर) किन्तु; ऋक्षराज! सुषेण को यहाँ कौन ला सकता है? (कुछ सोचने लगते हैं)

सुग्रीव- (सविनय) स्वामी! इस कार्य को हमारे महावीर ही कर सकते हैं। (जाम्बवन्त से) आप पवनपुत्र को सुषेण का पता बता दें। जिससे महावीर शीघ्र ही वहाँ पहुँचकर राजवैद्य को ले आवें।

जाम्बवन्त- (हनुमान से) रावण के राजभवन से दक्षिण समुद्रतट पर सुषेण का भवन हैं। तुम जाकर उन्हें अभी ले आओ।

हनुमान- (राम के चरणों में सिर झुकाकर) जय श्रीराम! (प्रस्थान)

(दक्षिण समुद्र तट पर हनुमान का पहुँचना, सुषेण अपने एकान्त भवन में विश्राम करते हुए दीख पड़ता है)

हनुमान- (स्वगत) अच्छा, राजवैद्य तो निद्रा में डूबा है। इसको जगाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक नहीं। (कुछ सोचकर) ठीक है, इसे भवन सहित ही उठा ले चलता हूँ।

(सुषेण को भवन सहित उठाकर हनुमान का प्रस्थान)

हनुमान– (राम के शिविर में पहुँचकर)– जय श्रीराम!

(हनुमान का भवन को भूमि पर रखना, सुषेण का जागकर भवन से बाहर निकलना)

सुषेण– (अचकचाकर)– अरे! मैं यहाँ कैसे?

हनुमान– (सविनय)– वैद्यप्रवर! राघवेन्द्र के शिविर में आपका स्वागत है। आप निर्भय होकर श्रेष्ठ वैद्य-धर्म का पालन करें। कुमार लक्ष्मण का आप अविलम्ब उपचार करें। यही आपका वर्तमान परम धर्म है।

सुषेण– (लक्ष्मण की नाड़ी देखकर व हृदय-गति को सुनकर गम्भीरतापूर्वक) कुमार का जीवन बच सकता है, किन्तु मेरे पास उपयोगी औषधि नहीं है।

हनुमान– (आतुरतापूर्वक)– कहाँ मिलेगी वह औषधि?

सुषेण– यहाँ से उत्तर द्रोणशिखर पर अनेक औषधियाँ रात्रि में स्वयं चमकती हैं। तुम उनमें से संजीवनी लता को समूल ले आओ; किन्तु ध्यान रहे-औषधि सूर्योदय से पूर्व आ जाय। उसके पश्चात् संजीवनी काम नहीं करेगी।

हनुमान– (राम के चरणों में शिर नवाकर) जय श्रीराम!

(प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तम

(परदा खुलता है)

(स्थान-रावण का भवन)

(अपने पुत्र मेघनाद की विजय पर रावण हर्षोल्लास मना रहा है।)

(प्रहरी का प्रवेश)

प्रहरी- स्वामी! गुप्तचर आपसे अविलम्ब मिलना चाहता है।

रावण- (चिन्तित होकर) प्रवेश कराओ।

(प्रहरी का प्रस्थान। गुप्तचर का प्रवेश)

गुप्तचर- (अभिवादनपूर्वक) महाराज! मैंने वैद्यराज सुषेण को राम के शिविर में देखा है। उन्होनें लक्ष्मण के उपचारार्थ हनुमान को संजीवनी लाने के लिये द्रोणशिखर पर भेजा है। सूर्योदय से पूर्व यदि संजीवनी आ गयी, तो लक्ष्मण बच जायगा। (कुछ सोचकर) हनुमान को विलम्बित करने का कोई उपाय अविलम्ब करें स्वामी!

रावण- (गम्भीर होकर सोचते हुए) अच्छा, तुम जाओ। सावधानी पूर्वक अपना कार्य करो और आगे की किसी भी घटना को बिना विलम्ब सूचित करो।

गुप्तचर- (हाथ जोड़कर) जो आज्ञा महराज! (प्रस्थान करता है)

रावण- (सोचता हुआ निश्चयपूर्वक)-(स्वगत) अब मैं अपने मायापटु मित्र कालनेमि के पास चलूँ।

(प्रस्थान करता है)

(रावण कालनेमि के भवन पहुँचता है। रावण को अकस्मात् आया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर कालनेमि आश्चर्य में पड़ता है)

कालनेमि- (साश्चर्य) महाराज! आप;और इस समय?

रावण- हाँ, कालनेमि! मैं इस समय तुम्हारे पास अति आवश्यक कार्यवश आया हूँ। तुम अविलम्ब जाकर हनुमान को विलम्बित करो। वह संजीवनी लाने द्रोण-शिखर को जा रहा है। मेरे शत्रु राम का भाई लक्ष्मण मेघनाद की शक्ति से मुमूर्ष है-कल सूर्योदय होते ही वह मर जायगा। अतः तुम तुरन्त जाकर अपने माया-जाल से हनुमान को बाधित कर दो जिससे हनुमान द्रोण-शिखर पर न पहुँच पावे और सूर्योदय हो जाये।

कालनेमि- (भयभीत होकर)- राजन्! राम से सन्धि करने में ही आपका कल्याण है। सीता को लौटाकर आप सदा-सदा के लिये सुखी हो जायेंगे।

रावण- (क्षुब्ध होकर)- तुम इस समय मुझे उपदेश मत दो। मेरी आज्ञा का त्वरित पालन करो। कालनेमि! मेरे आदेश का अविलम्ब पालन करके अपने प्राण बचाओ। अथवा.... तुम जानते हो कि....... तुम्हारा वध होगा।

(रावण का प्रस्थान)

कालनेमि- (स्वगत)- अब तो मुझे मरना ही पड़ेगा। (कुछ सोचकर) ठीक है, जब मरना ही है तो रामदूत के हाथ से ही क्यों न मरूँ। मेरे लिये यही श्रेयष्कर है। (निकल जाता है)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : अष्टम

(परदा खुलता है)

(कालनेमि हनुमान के मार्ग में माया से एक रम्य आश्रम की रचना करके बैठ जाता है, सामने कुछ दूर पर एक सरोवर है। सन्यासी के वेष मे बैठा हुआ कालनेमि करताल बजाता हुआ कीर्तन करता है।)

कालनेमि- (उच्च स्वर से) हरे राम, हरे राम, राम-राम, हरे-हरे!

(बार-बार दुहराता है। आकाश मार्ग से आते हुए हनुमान का प्रवेश)

हनुमान- (कीर्तन की आवाज सुनकर) (स्वगत) अहा! यहाँ तो मेरे प्रभु का नाम-कीर्तन हो रहा है? मेरे स्वामी का यह बड़भागी भक्त कौन है? जरा देखूँ तो.........।

(हनुमान का नीचे उतरकर कालनेमि के सम्मुख जाना)

हनुमान- (सविनय) जय श्रीराम!

कालनेमि- (आँखें खोलकर सामने देखता हुआ) ओह! आप? आप कौन हैं?

हनुमान- (सविनय) श्रीराम-भक्त को रामदूत हनुमान का प्रणाम।

कालनेमि- (कुटिल मुस्कान पूर्वक) कालनेमि के आश्रम में रामदूत का स्वागत है। आइये, आसन लीजिए। आपके पधारने से मैं धन्य हुआ।

हनुमान- नहीं मुनिवर! नहीं। मैं इस समय अधिक रुक नहीं सकता। मुझे अभी आगे जाना है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालनेमि- हाँ हनुमान! तुम्हें आगे जाना तो है किन्तु तुम संजीवनी को पहचान नहीं सकोगे।

हनुमान- (आश्यर्च पूर्वक)-यह.......आप मेरा लक्ष्य कैसे जानते हैं?

कालनेमि- (हँसकर)- अरे, यही नहीं-मुझे सब कुछ हस्तामलक के समान दीखता है।.........लंका के रणाङ्गण में राम-रावण-युद्ध हो रहा है। इस युद्ध में विजयश्री श्रीराम का ही वरण करेगी। मैं अपनी दिव्य दृष्टि से यहीं बैठा हुआ सब कुछ देखता रहता हूँ। अभी तो मेघनाद की घातिनी-शक्ति से लक्ष्मण.......।

हनुमान- हाँ, मुनिवर! मैं इस समय कुमार लक्ष्मण के लिये ही संजीवनी लेने जा रहा हूँ।

कालनेमि- किन्तु; पहले तुम संजीवनी को पहचानने की दृष्टि प्राप्त करो। जाओ-सामने (हाथ से इंगित करते हुए) के सरोवर में स्नान करके मुझसे ज्ञान-दीक्षा प्राप्त करो। तब तुम संजीवनी को पहचान सकोगे।

हनुमान- (प्रसन्नतापूर्वक) आपने ठीक कहा। मुझे तृषा भी बाध्य कर रही है। (प्रस्थान)

(हनुमान सरोवर में जाकर जल ग्रहण करते हैं, स्नान के लिए जल में प्रवेश करते ही मकरी उनका पैर जकड़ लेती है, हनुमान उसको मुष्टि-प्रहार से मार देते हैं, शरीर छोड़कर मकरी की आत्मा एक अप्सरा के रूप में बदल जाती है, हनुमान साश्चर्य देखते हैं)

अप्सरा- (सविनय)- हे रामदूत! तुमने आज मुझको शाप से उद्धार कर दिया। अब मैं अपने लोक जा रही हूँ। तुम जिसको श्रीराम का भक्त साधु समझ रहे हो, वह साधु नहीं-भयंकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायावी कालनेमि है। वह तुम्हें विलम्बित करना चाहता है। तुम उसका विश्वास न करो।

(अप्सरा अन्तर्हित हो जाती है)

(हनुमान का कपटी मुनि के पास पहुँचना)

कालनेमि- (हनुमान को देखकर प्रसन्नतापूर्वक)-स्नान हो गया? आओ-अब ज्ञान-दीक्षा प्राप्त करो।

हनुमान- (हुंकारते हुए)-पहले गुरुदक्षिणा तो दे दूँ।

(हनुमान अपने पैर से प्रहार करते हैं)

कालनेमि- (ढनमनी खाता हुआ)-अरे, यह क्या? रामदूत! तुम क्यों मुझ पर प्रहार कर रहे हो?

हनुमान- (रोषपूर्वक)-यही तो है गुरुदक्षिणा।

(हनुमान के बार-बार पाद-प्रहार व मुष्टि-प्रहार से कालनेमि का गतप्राण होकर गिरना)

हनुमान- (आतुरता पूर्वक)- जय श्रीराम! (प्रस्थान)

(द्रोण-शिखर पर पहुँचकर)

हनुमान- (स्वगत)- अरे, यहाँ तो अनेक वनस्पतियाँ हैं, जिनमें विविध रंगों की चमक है। (कई वनस्पतियों को छूकर) न जाने, वहाँ किस-किस औषधि की आवश्यकता पड़ जाय। (कुछ सोचकर) क्यों न पूरा शिखर ही उखाड़ ले चलूँ?

(हनुमान का द्रोण शिखर को उखाड़ कर अपनी हथेली पर लिए हुए परावर्तन) जय श्रीराम! (प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : नवम

(परदा खुलता है)

(स्थान-अयोध्या के बाहर भरत का आश्रम)

(राम के विरह में भरत अपनी कुटी के सामने विचार-मग्न बैठे हैं, सहसा आकाश में आती हुई विशाल आकृति को देखकर आशंकित हो उठते हैं)

भरत- (आकाशगत आकृति को देखते हुए खड़े होकर) (स्वगत)- अरे, यह कौन……?आर्य राम को अयोध्या से दूर जानकर कोई निशाचर अयोध्या में अनिष्ट करना चाहता है क्या……? अहो, इसका यह दुःसाहस……?(कुछ सोचकर) नहीं…… नहीं। मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। मैं इसका अभी भूमिपात करता हूँ। (धनुष पर बिना फर का बाण चढ़ाकर संधान करते हैं। बाण लगते ही आकाश से लड़खड़ाकर गिरती हुई आकृति- श्रीराम! जय राम!! जय-जय राम!!! बोलती हुई भूमि पर आ जाती है)

भरत- (अपराध की आशंका से आकुल दौड़कर समीप पहुँचते हुए)- हा- g U r & ; g……क्या मैंने किसी श्रीराम- भक्त को आहत कर दिया? यह तो मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया। अरे विधाता! मुझसे यह क्या कराया तूने? (भूमि पर पड़े हुए मूर्च्छित हनुमान के शरीर पर हाथ फेरने लगते हैं।)

हनुमान- (स्वस्थ होकर)-अरे..... यह मैं कहाँ आ गिरा? मेरे शरीर पर हाथ फेरने वाले आप कौन हैं?

भरत- (आश्वस्त होकर)-(अपराधी भाव से)-आप इस समय रघुवंश की नगरी अयोध्या की सीमा पर हैं। आर्य श्रीराम के अनुज भरत से न जानकारी में आपके प्रति अपराध हो गया है।…… आप तो आर्य के भक्त प्रतीत हो रहे हैं। भरत का यह अपराध क्षमा करें श्रीराम भक्त! ……….।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (सविनय)-श्रीरघुनाथ के तुच्छ दूत हनुमान का प्रणाम स्वीकार करें आप। मुझे रघुनाथ जी के चरणों में शीघ्र पहुँचना है। अब आप जाने की अनुमति करें। विलम्ब होने पर अनर्थ हो जायेगा।

भरत- (अधीरता पूर्वक)-कहिये हनुमान! मेरे स्वामी रघुनाथ आर्या सीता एवं प्रिय लक्ष्मण के साथ सकुशल तो हैं?......संप्रति वे कहाँ हैं?

हनुमान- (गंभीर होकर) लंकापति रावण द्वारा माता जानकी का अपहरण किये जाने से रघुनाथ जी ने लंका पर चढ़ाई कर दी। रावण-पुत्र मेघनाद की वीरघातिनी शक्ति से कुमार लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये हैं। राजवैद्य सुषेण के कहने से मैं द्रोणाचल से संजीवनी लता लेकर लौट रहा था कि आपने मुझे अपने बाण का लक्ष्य बनाया........ किन्तु, अब आप मुझे......।

भरत- (मर्माहत होकर)-हा-हन्त रे दुर्भाग्य! तू बड़ा क्रूर निकला। (अश्रु बहाते हुए)-हे हनुमान! आप अविलम्ब आर्य के पास पहुँचें। मेरे कारण हुए विलम्ब के लिए क्षमा करें। (कुछ सोचकर)-मेरे बाण पर चढ़कर आप अतिशीघ्र आर्य के पास पहुँच सकेंगे। (बाण लेने के लिए तूणीर की ओर हाथ बढ़ाना)

हनुमान- (दर्प पूर्वक)-किन्तु आपका बाण मेरे भार को कैसे वहन कर सकता हैं? फिर यह पर्वत-शिखर भी तो मेरे हाथ में है। (कुछ सोचकर)- आर्य वीर! आपका प्रताप एवं प्रभु का नाम- स्मरण मुझको अतिशीघ्र लंका में पहुँचा देगा। आप चिन्ता न करें (चरण-वन्दना करते हुए)- अच्छा, अब मैं चलूँ। आज्ञा दें- जय श्रीराम!

(प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : दशम

(परदा खुलता है)

(स्थान-लंका मे राम का शिविर)

(लक्ष्मण को भुजाओं में भरे हुए श्रीराम बैठे हैं। चारों ओर स्तब्धता। राम की आँखों से अविरल अश्रुपात हो रहा है।)

राम- (अधीरता पूर्वक आकाश की ओर देखते हुए)- अरे, अभी तक हनुमान नहीं लौटे। रात अन्तिम साँसें गिन रही है- हनुमान के आने से पूर्व कहीं प्रभात न हो जाय। ऐसा होने पर तो मेरा सारा जीवन ही अंधकारमय हो जायेगा।
(उच्छ्वास भरकर) हाय रे विधाता! तूने मेरे साथ बड़ी विडम्बना की है। अब मैं अपनी माता सुमित्रा को क्या मुँह दिखाऊँगा, जिन्होनें सौमित्र को मुझे सौंपा था। सूर्योदय होते ही मेरे जीवन में रात घिर जायेगी। हाय! तब मैं क्या करूँगा? कहाँ जाऊँगा?
(लक्ष्मण के मुख की ओर देखकर)
प्रिय लक्ष्मण! तुम तो हनुमान के भी बहुत प्रिय हो, फिर अभी तक हनुमान क्यों नहीं आये? "हा-हाय............।
(सहसा "जय श्रीराम" के उच्च्व घोष का सुनाई पड़ना, सभी लोग ऊपर की ओर दृष्टि करके देखने लगते हैं। क्षणान्तर में द्रोणशिखर लिए हनुमान का भूमि पर अवतरण)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- जय श्रीराम!

(द्रोणशिखर को भूमि पर रखकर राम के चरणों में शिर झुकाना) राजवैद्य! संजीवनी को न पहचानने से पूरा शिखर ही ले आया। अब आप शीघ्रता करें।

सुषेण- ठीक है वानर श्रेष्ठ!

(संजीवनी को समूल निचोड़ कर रस लक्ष्मण के मुख में डालता है। कुछ क्षणों में लक्ष्मण चैतन्य होकर आँखें खोल देते हैं। सभी हर्षविभोर हो जाते हैं।)

राम- (आनन्दाश्रु बहाते हुए उठकर हनुमान को गले लगाकर)- मेरे प्रिय हनुमान!

जाम्बवन्त- बोलो-संकटमोचन महावीर हनुमान की जय!

(सभी एक स्वर से हनुमान की जय-जयकार करते हैं।)

बोलो-बजरंगबली हनुमान की जय।

सुषेण- (चिन्तित होकर)- सूर्योदय होने वाला है। अब मुझे शीघ्र पहुँचा दें।

हनुमान- हाँ, राजवैद्य, आप ठीक कहते हैं। जय श्रीराम!

(सुषेण को लेकर हनुमान का प्रस्थान)

(यवनिका - पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : एकादश

Central Library
185363
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

(परदा खुलता है)

(नारद का चेतनदास के साथ बात करते हुए आना)

नारद- (वीणा के तार को एक बार झंकृत करके)- नारायण! नारायण!! देखा- चेतनदास! प्रभु ने रण में राक्षसों को कैसे ललकारा। बड़े-बड़ें योद्धाओं को एक ही बाण से संहारा।

चेतनदास- (चमत्कृत होकर)- हाँ, देवर्षि! प्रभु ने राक्षसों को खूब हँसा-खेला कर मारा।

नारद- (स्मिति पूर्वक)-

"देखो-लीलाधारी की माया है अपरंपार।
खेल-खेल में किया राक्षसों के कुल का संहार।।
वै जैसा चाहें, वैसे ही होते सारे काम।
उन लीलाधारी को मेरा बारंबार प्रणाम।।"

नारायण! नारायण!! अब तो रावण के सभी योद्धा मारे जा चुके हैं। जिन पर रावण को विशेष गर्व था- वे कुम्भकरण मेघनाद आदि संहारे जा चुके हैं।

चेतनदास- (कुछ सोचते हुए)-ऋषिवर! अब तो मेरी जानकारी में केवल दशानन रावण ही बचा है। आपका इस विषम में क्या कथन है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद- नहीं, चेतन! नहीं। अभी उसका अत्याचारी पुत्र अहिरावण पाताललोक में बचा हुआ है।

चेतनदास- (कौतूहल पूर्वक)-तब तो वह बच जायेगा?

नारद- नहीं-ऐसी बात नहीं है चेतनदास! रावण बड़ा हठयोगी है। वह अपने अभिमानी हठ के कारण परिवार में किसी को भी जीवित न रहने देगा। सबको मरवाकर ही वह मरेगा।

चेतनदास- नहीं महाराज! अब रावण हार चुका है। जब उसके इतने बड़े बली योद्धा मारे गये तो वह अब अहिरावण को मारने के लिये नहीं बुलायेगा। फिर, उसने तो प्रभु का कोई अहित-अपराध नहीं किया है तो फिर अहिरावण के मारे जाने का कोई भी कारण मुझे तो नहीं दीखता है।

नारद- (स्मिति पूर्वक)-नारायण! नारायण!! बच्चा, तुम क्या जानो। अभी देखते चलो-आगे-आगे क्या होता हैं?......... होता तो वही है, जो मेरे प्रभु को स्वीकार होता है। नारायण! नारायण!! आओ मेरे साथ और प्रभु की अवशिष्ट लीला देखो। मुझे तो प्रभु की लीला देखने में ही आनन्द मिलता है।

चेतनदास- (हाथ जोड़कर)-अच्छा स्वामी! मैं भी अवश्य देखूँगा कि आगे प्रभु की क्या लीला होती है?

नारद- नारायण! नारायण!!

(दोनों का प्रस्थान)

(यवनिका पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वादश

(परदा खुलता है)

(स्थान - लंका मे रावण का राजभवन)

(रावण की पत्नी मंदोदरी केश खोले पृथ्वी पर पड़ी विलाप कर रही है।)

मंदोदरी- (स्वगत)-कहाँ हो मेरे पुत्र मेघनाद-कहाँ हो? आओ मेरे लाल-आओ, मेरे गले से लग जाओ। मैं तुम्हारे बिना जीवित न रह सकूँगी। मेरे लाल! कहाँ हो? कहाँ हो?? (कुछ पल रुककर) हाय-हाय, मैंने बहुत समझाया लंकेश को- प्राणनाथ! उन वनवासियों से शत्रुता छोड़ दो। उनसे युद्ध मत करो। (हाथ पटकती हुई) हाय-हाय, अब मैं क्या करूँ? कुम्भकरण भी नहीं रहा-किससे कहूँ? अब मेरा कौन है, कोई नहीं। हाय, सभी मारे गये। उन्हीं माता जानकी के कारण मेरा सर्वनाश हुआ। हाय, अब मैं कहाँ जाऊँ? क्या करूँ?

(दबे पाँव रावण का प्रवेश, मंदोदरी को देखता है)

रावण- (दुःखपूर्वक स्वगत)- ओह! मैं यह सब क्या देख रहा हूँ। मेरी प्राणप्रिया रानी-जो रेशमी गलीचों पर रहती थी- आज पृथ्वी पर पड़ी रो रही है। मेरे पुत्र मेघनाद और भाई कुम्भकरण के लिये गला फाड़ कर चिग्घाड़ रही है?.........हा, मेरे परिवार की आज ऐसी दुर्दशा है?.........इस सबका कारण मैं हूँ, (अपनी ओर संकेत) मेरे ही कारण मेरे परिवार का सर्वनाश हो गया। मेरी ही हठता के कारण आज पूरे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशाचर वंश का संहार हो गया। सारा दोष मेरा है-

"अभिमानी बनकर मैंने ही अपने को सर्वेश्वर माना।
जो अग-जग का परम सत्य, उसको न कभी मैंने जाना।।
मैनें ही अपने कर्मों से धरती पर अत्याचार किया।
नारायण ने अवतार लिया, मेरे कुल का संहार किया।।"

(सोचने लगता है) (स्वगत)- अरे, मैं यह सब क्या सोचने लगा? मुझे तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी चाहिये। अब इन बातों को सोचने से क्या होगा?.......अभी तक जिस मार्ग पर चला हूँ-उसी पर चलना होगा।

(मंदोदरी के निकट पहुँचकर-प्रकट)

रावण- "ओ रानी, क्यों तुम रोती हो? क्यों ऐसा दुर्दिन आया है?
मेरे रहते मेरे घर में दुःख का सागर लहराया है।।

(कुछ सोचकर निश्चय पूर्वक)

रोना-धोना सब बन्द करो, मैं अद्भुत शौर्य दिखाऊँगा।
मैं अपने सुत-वध का रिपु से सारा प्रतिशोध चुकाऊँगा।।"

(दूसरी ओर मुँह घुमाकर सोचने लगता है।)

रावण- (स्वगत)-इसके लिये कोई उपाय करना चाहिये।

(कुछ स्मरण करके प्रसन्न होता है)

रावण- (प्रकट)-

"हाँ, मुझको स्मरण हुआ-मेरा बेटा अहिरावण प्यारा है।
"पाताल लोक में जा जिसने अधिकार पा लिया सारा है।।
देवी का परम उपासक वह अरि से न कभी भय खायेगा।
वरदान मिला उसको, रण में वह तो अवश्य जय पायेगा।।
इसलिये मंत्रबल से उसको मैं यहाँ तुरन्त बुलाता हूँ।
अहिरावण के हाथों रिपु की दुर्गति मैं अभी कराता हूँ।।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(रावण एकान्त में बैठकर ध्यानमग्न होता है। आकाश में अहिरावण आता है।)

अहिरावण- (शिर झुकाकर साञ्जलि)-आदरणीय पितृदेव! प्रणाम।

रावण- (आँखें खोलकर)-पुत्र! चिरंजीव रहो। वत्स! मैं बहुत दुःखी हूँ।

अहिरावण- पिताश्री! अब आप अपनी चिन्ता का परित्याग कर दें। मैं आज ही रात को यह सारा कष्ट-कंटक नष्ट कर दूँगा।

रावण- (प्रसन्न होकर)-धन्य हो पुत्र! धन्य हो। मुझे तुमसे यही भरोसा था।

अहिरावण- (गर्व पूर्वक)- हाँ पिताश्री! हाँ-आप चिन्ता न करें।

"मैंने रिपु का वध करने की नव युक्ति अचूक निकाली है,
कोई भी समझ न पायेगा-वह कुंजी मैंने पा ली है।
जाकर दोनों अरि युवकों को निशि में ही अभी हरूँगा मैं,
अपनी आराध्या देवी को यह नरबलि भेंट करूँगा मैं।।"

(चारों ओर देखकर)-

"चन्द्रिका चन्द्र की बाधक है-पहले इसको ही हरना है,
माया-बल से अब अंधकार रिपु के शिविरों में करना है।"

(हाथ जोड़कर)-

पिताश्री! अब आप मुझें आज्ञा और आशीर्वाद दें- जिससे मैं सारा कार्य सम्पन्न कर सकूँ।

रावण- (आशीर्वाद की मुद्रा में)-अच्छा जाओ बेटा! तुम्हारा कल्याण हो।

(अहिरावण का शिर नवाकर प्रस्थान)

[यवनिका पतन]

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : त्रयोदश

(परदा खुलता है)

(राम के शिविर की ओर जाता हुआ अहिरावण)

अहिरावण- (स्वगत)-हाँ, अब मुझे अपना पूरा कार्यक्रम बना लेना चाहिये। (चारों ओर चौकन्ना होकर देखता हुआ) शत्रु की सारी सेना सावधान और सुसज्जित है। राम और लक्ष्मण उसी विशाल सेना के मध्य भली भाँति सुरक्षित हैं। (ध्यान से देखकर) मुख्य द्वार पर ही महावीर हनुमान का पहरा है? क्या करूँ? कैसे करूँ? कुछ समझ में नहीं आता है। (कुछ सोचकर)

हाँ, याद आया-मैं तो चाचा विभीषण का वेश बना सकता हूँ और अपने चाचा के वेश में यहाँ सभी को धोखे में डाल सकता हूँ। (चारों ओर दृष्टि डालकर)

अच्छा, अब पहले चन्द्रदेव के प्रकाश को तिरोहित कर दूँ, तभी अंधेरे में सारा कार्य निर्विघ्न पूरा हो सकेगा।

(मन्त्र चलाने का अभिनय करते हुए अहिरावण का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

(नेपथ्य से)

मायावी ने कर लिया मायाबल का ध्यान।
हरि इच्छा, भावी प्रबल, विधि का अटल विधान।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्दश

(समय-रात का द्वितीय प्रहर)

(परदा खुलता है)

(स्थान-लंका में राम का सैनिक शिविर क्षेत्र)

(राम, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, जाम्बवन्त इत्यादि एक साथ बैठे हुए है। सहसा प्रकाश में कालिमा का प्रभाव)

राम- (गंभीर होकर)-भाइयो! आज अचानक चन्द्रदेव भी अपनी लीला दिखाने लगे। जरा देखो तो- प्रकाश में अब अंधकार बसाने लगे।

हनुमान- (चारों ओर सजगता पूर्वक देखकर)-हाँ प्रभो! इस समय निश्चय पूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। रावण की माया बड़ी ही प्रबल है। मैं सावधान हूँ प्रभो! (सभी की और संकेत करते हुए)- साथियो! आज हम लोगों को सजग रहने की आवश्यकता है। रावण के कुल का संहार हो चुका है, इसलिये वह अब कुछ भी कर सकता है। आप लोग अपने-अपने पहरे पर डट जायें।

जाम्बवन्त- (सजग होते हुए)-हाँ महावीर जी! आप ठीक कह रहे हैं। (चारों ओर देखकर)-रात अधिक बीत चली है। अब शेष सभी लोग विश्राम करें।

(अहिरावण का विभीषण के रूप में दिखाई पड़ना और सबको सोने के लिए हाथ से संकेत करना) (अहिरावण मंत्र पढ़ते हुए सबकी ओर हाथ घुमाता है। सबका जमुहाते हुए सोने लगना। हनुमान का पहरे पर दिखाई पड़ना।)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिरावण- (सामने देखकर) (स्वगत)-अरे, महावीर जी तो सामने ही डटे हैं।

हनुमान- (उपालम्भ के स्वर में)-क्यों भाई विभीषण! आज आप इतने समय तक कहाँ रह गये थे?

विभीषण के वेश में अहिरावण- (हाथ जोड़कर)-हे पवनपुत्र! आज मुझको क्षमा कर दो। संध्योपासन में आज मुझे विलम्ब हो गया।

हनुमान- (हँसकर)-तो इसमें क्षमा की क्या बात है? देर और सबेर लगा ही रहता है। जाओ विश्राम करो।

विभीषण के वेश में अहिरावण- अच्छा, महावीर! जाता हूँ। (स्वगत)-जान बची तो लाखों पाये। अब संकट दूर हो गया।....जब मैं महावीर हनुमान से बच गया तो सबसे बच गया।

(अहिरावण भीतर जा करके सबके सोने हेतु मंत्र चलाता है सब सोने लगते हैं।)-(स्वगत) -अब मुझे किसी का भय नहीं है। मैं यहीं पृथ्वी को दबा कर पाताल लोक का मार्ग बनाऊँ तथा राम लक्ष्मण को लेकर अपने राज्य पाताल लोक में पैठ जाऊँ।

(राम-लक्ष्मण के पास बैठकर अहिरावण पृथ्वी को पैर से दबाकर रास्ता बनाता है तथा राम व लक्ष्मण सहित पाताल में चला जाता है। सहसा शिविर में सुग्रीव का जागना। राम व लक्ष्मण को अपनी भूमि-शय्या पर न देखकर सुग्रीव चारों ओर ढूँढ़ता है। राम व लक्ष्मण को न पाकर सुग्रीव व्याकुल होता है।)

सुग्रीव- (हनुमान के पास जाकर)-हे महावीर जी! श्रीरघुनाथ जी लक्ष्मण सहित कहाँ चले गये? उनका कुछ पता नहीं चल रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में सभी लोग साथ सोये थे। प्रातः काल देखा तो उन दोनों भाइयों का पता नहीं है।

हनुमान- (आश्चर्य पूर्वक)-क्या कहा? प्रभु अपने शिविर में नहीं है?

जाम्बवन्त- (समीप पहुँचकर)-हाँ-हाँ, रघुनाथ जी और कुमार लक्ष्मण अपने दल में नहीं हैं, न जाने कहाँ चले गये?.....मैं तो सोचता हूँ कि इसमें दुष्ट रावण की ही कोई चाल है।

सभी लोग- (एक साथ)-हे विधाता! यह तूने क्या किया? अब हम लोग कैसे जीवित रहेंगे?

हनुमान- (चिन्तित होते हुए)-आज रात तो यहाँ कोई आया भी नहीं कि जिस पर विचार किया जाय। (कुछ सोचकर, रोष पूर्वक)

हनुमान- (स्वगत)-

"अगर चाल है रावण की, तो चाल न चलने पायेगी,
बहुत हुआ, अब निशाचरों की दाल न गलने पायेगी।
मैं मथ डालूँगा सिन्धु और लंका को तोड़ बहाऊँगा,
गीधो-श्वानों को मैं रावण के टुकड़े काट खिलाऊँगा।
देखूँगा मैं कौन-यहाँ पर प्रभु को हरने वाला है,
यह दुःसाहस करने वाला निश्चय ही मरने वाला है।"

हनुमान- (विभीषण से)-

"हे भाई! जब शिविर द्वार पर मैं था पहरेदार।
आये थे तब तुम बाहर से ले निद्रा का भार।।
मैंने कहा-शिविर में जाकर बन्धु! करो विश्राम।
और स्वयं तल्लीन हुआ मैं पहरे पर अविराम।।
तुम सोये होगे जा करके शिविर मध्य तत्काल।
तुम्हीं बताओ-हो सकती है यह किस खल की चाल??"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभीषण- (चौंककर)-अरे महावीर जी! आप यह क्या कह गये?

"मैं आया ही कब बाहर से जब थी आधी रात।
देखा होगा स्वप्न या कि फिर होगी भ्रम की बात।।"

(हाथ जोड़कर)-स्वामी! मैं तो सांयकाल से ही प्रभु श्रीराम के पास सोया था। प्रातः जागकर देखा, तो प्रभु का स्थान खाली था।

(कुछ सोचकर)-हाँ, मुझे स्मरण आया-

"रावण का बेटा अहिरावण है अति मायाचारी,
मुझको लगता है-उसने ही चाल चली यह न्यारी।
है पातालपुरी में उसका शासन और बसेरा,
वही रूप धारण कर सकता है धरती पर मेरा।
महावीर! वह ही लगता है प्रभु को हरने वाला,
हमें अनाथ-अभागा यों वह ही है करने वाला।
उसको छोड़ और पर मेरा ध्यान नहीं है जाता।
मायाचार विविध विधि करना अहिरावण को आता।।"

जाम्बवन्त- (सभी को आश्वस्त करते हुए)-अच्छा, अब घबड़ाने या चिन्ता करने से हम लोगों का दुःख दूर नहीं होगा। हमें अविलम्ब इस संकट-समस्या का समाधान करना है। अहिरावण की इस चाल का उत्तर तो महावीर हनुमान ही देंगे।

(हनुमान को विनत भाव से सम्बोधित करते हुए)-

"राघवेन्द्र के वीर दूत हनुमान! न साहस हारो,
उठो-उठो बजरंगी! फिर तुम बिगड़ा कार्य सँवारो।
करके प्रभु का ध्यान अभी पातालपुरी को जाओ,
जैसे भी हो-अनुज सहित रघुनायक को ले आओ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल तुम ही हो सकते अब हम सबके उपकारी,
तीनों लोकों में अकुण्ठ मति-गति है सदा तुम्हारी।
एक तुम्हीं हो राघवेन्द्र के वीर भक्त मतवाले,
महावीर! तुम ही अब नौका पार लगाने वाले।''

हनुमान- (सोत्साह गदा उठाकर)-
''अच्छा, अब तो करो साथियो! शीघ्र सहित विश्वास विदा।
चाह रहा है राम-कार्य के लिए राम का दास विदा।।''

जाम्बवन्त- (आतुरता पूर्वक)-हाँ-हाँ, अब देर करना व्यर्थ है। अब आप अविलम्ब प्रस्थान करें।
(हनुमान के कन्धे पर हाथ रखकर)
''हे पवनतनय! न विलम्ब करो,
दुख-सिंधु अपार हमारा है।
आओ होकर कृतकार्य शीघ्र,
हमको बल बड़ा तुम्हारा है।।''

हनुमान- (आश्वासन की मुद्रा में)-आप लोग चिन्ता न करें। मैं यथाशीघ्र प्रभु के सहित लौट आऊँगा।
(सभी से गले मिलते हैं।)

हनुमान- जय श्रीराम! जय श्रीराम!! (प्रस्थान)

[यवनिका-पतन]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : पञ्चदश

(परदा खुलता है)

(स्थान- पाताल का मुख्य द्वार)

(मकरध्वज द्वार पर पहरा दे रहा है)

मकरध्वज- (स्वगत)-आज महाराज अहिरावण का विशेष आदेश है कि नगर में कोई भी जीव प्रवेश न करने पाये। (सामने देखता हुआ)-अरे, यह कौन है? जो कि भयंकर तूफान के समान राजभवन की ओर बढ़ा चला आ रहा है!

हनुमान- (निकट आकर)-जय श्रीराम! जय श्रीराम!!

मकरध्वज- (हाथ से तरजते हुए)-ठहर। तू कौन है?

"वहीं ठहर रे बूढ़े वानर! सुन मेरे प्रभु का आदेश।
आज नगर में बहिरागत का हो सकता है नहीं प्रवेश।।
यदि आज्ञा स्वीकार नहीं तो अपनी मृत्यु अभी तू जान।
(अपनी ओर संकेत)
मैं बालक हूँ, पर; कर दूँगा चूर्ण अभी तेरा अभिमान।।
लौट, अन्यथा अभी करूँगा मैं ही तेरा काम तमाम।
मैं बेटा हनुमान वीर का, मकरध्वज है मेरा नाम।।"

हनुमान- (साश्चर्य देखते हुए)-क्या कहा; हनुमान का बेटा?

"रे बालक! तू झूठ बोलता, नहीं सत्यता की पहचान।
पुत्र हुआ तू कैसे? जब है बाल ब्रह्मचारी हनुमान।।
नैष्ठिक ब्रह्मचर्य है जिसका-वह हनुमान राम का दास।
बता-भला तेरी बातों पर कैसे, कौन करे विश्वास??"

मकरध्वज- (दृढ़तापूर्वक)-

"अरे, वही हनुमान कि जिसने फूँका था गढ़ लंका को।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (बरजते हुए)-

"चुप झूठे! क्यों बढ़ा रहा है यों कह अपनी शंका को??"

(अपनी ओर संकेत करते हुए)

"देख इधर-हनुमान वही मैं, प्रभु का आज्ञाकारी हूँ।
बाल्यकाल से ही तो मैं बस, ब्रह्मचर्य व्रतधारी हूँ।।"

(मकरध्वज हनुमान के चरणों में शिर झुकाता है)

मकरध्वज- (साञ्जलि)-

"हे पिता! आपने जली पूँछ जब सागर-बीच बुझायी थी।
बस, तभी श्वेद-धारा तन से बहकर सागर में आयी थी।।
मछली ने उसका पान किया, रह गया गर्भ तत्काल उसे।
मिल गया विधाता की गति से तब यह मकरध्वज लाल उसे।।"

हनुमान- (हँसते हुए)-अच्छा! यह बात है? तब तो तू अवश्य ही मेरा पुत्र हुआ। अब तुम मुझे प्रवेश करने दो।

मकरध्वज- (स्वगत)-क्या करूँ? कुछ समझ में नहीं आता। एक ओर स्वामी की आज्ञा का पालन है तो दूसरी ओर पिता की आज्ञा और उनके मान-सम्मान का प्रश्न है-

"मैं पथ पर ऐसे ठौर खड़ा-कुछ पड़ता नहीं दिखाई है।
है एक ओर तो कूप, दूसरी ओर भयंकर खाँई है।

(कुछ सोचकर, हनुमान की ओर हाथ जोड़े हुए)

हे पिता! आप ही बतलायें-कर्तव्य कर्म क्या मेरा है?
हे पूज्य! कृपा कर बतलायें-कर्तव्य धर्म क्या मेरा है??"

हनुमान- (हँस कर)-तुम ठीक कह रहे हो। जीवन में वर्तमान कर्तव्य ही सर्वोपरि होता है।-

"कर्तव्य पूछते हो मुझसे, मैं हूँ तुमसे संतुष्ट हुआ।
तुम निश्चय ही मेरे सुत हो, यह तथ्य तुम्हीं से पुष्ट हुआ।।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं महावीर कहलाता हूँ, तुम वीर युवक बलशाली हो।
मैं अपने प्रभु का सेवक, तुम पातालपुरी के माली हो।।
मेरा निर्णय है-अहिरावण को अब मैं मार गिराऊँगा।
यह राज्य तुम्हें दे करके मैं अपने प्रभु को ले जाऊँगा।।
मैं पहुँचूँ नगरी के अंदर-कर्तव्य यही अब मेरा है।
तू मुझे द्वार पर ही रोके-कर्तव्य यही अब तेरा है।।
जब लक्ष्य भिन्न हों दोनों के-'कर्तव्य न कुछ कर पायेगा,
कर द्वन्द्व-युद्ध मुझसे-तब तू कर्तव्य-सिंधु तर पायेगा।"

मकरध्वज- (उत्तेजित होकर)-
"यदि उत्तम है यही कर्म तो मैं भी हूँ तैयार।

हनुमान- (मुष्टि तानते हुए)
अरे सँभल जा मकरध्वज! तू ले यह मुष्टि-प्रहार।।"
(जय श्रीराम! जय श्रीराम!! कहते हुए हनुमान का मुष्टि-प्रहार करना। मकरध्वज का प्रत्याघात करना)

(हनुमान द्वारा मकरध्वज का बाँधा जाना)

हनुमान- (मकरध्वज को द्वार के खम्भे से बाँधकर)-बस, अब तुम यहीं बंदी बने रहो। जब तक मैं तेरे स्वामी को मारकर न लौटूँ-यहीं खड़ा रह। (द्वार की ओर देखकर)- (स्वगत)-
"मिट गया यह विघ्न भी, अब तो खुला पुर-द्वार है।
राजमंदिर में चलूँ-देखूँ वहाँ क्या सार है??"
(मकरध्वज से)
घबड़ाना मत बेटा! लौटकर तुम्हें बन्धन-मुक्त करूँगा।
जय श्रीराम! (प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षोडश

(परदा खुलता है)

(स्थान-पातालपुरी में अहिरावण के देवी मन्दिर का भीतरी भाग।)

(मन्दिर के भीतर अन्धकार का वातावरण है। मन्द दीपज्योति जल रही है, अहिरावण यज्ञ वेदी पर आँखे मूँदकर बैठा ध्यान कर रहा है। राम और लक्ष्मण भी वहीं पर बन्दी रूप में खड़े हैं। हनुमान का दबे पैर आगमन)

हनुमान- (चुपचाप चारों ओर देखकर)-(स्वगत)-यहाँ की माया तो कुछ और भी विचित्र है। लीलाधारी प्रभु यहाँ बन्दी रूप में हैं, (शिर झुकाकर) हे स्वामी! सेवक का प्रणाम स्वीकार हो। (हाथ जोड़कर)-इस लीला में आप मुझे क्षमा करना। आज मैं देवी का भोग-प्रसाद खाना चाहता हूँ। (देवी की मूर्ति को देखते हुए) मातेश्वरी! क्षमा करना। आज तेरा यह बालक तेरी गोद में बैठकर तेरा भोग प्रसाद खायेगा।

(हनुमान का मूर्ति के पीछे से छिपकर देवी के स्थान पर बैठना, देवी की मूर्ति को गिराकर उसके स्थान पर बैठ जाना और भोग-प्रसाद खाने लगना, सहसा अहिरावण का ध्यान तोड़ना, सामने का दृश्य देखकर अहिरावण का आश्चर्यचकित होना)

अहिरावण- (हाथ जोड़कर-स्वगत)-अहा-हा! आज महाप्रसादी पाने को स्वयं देवी जी प्रकट हो गयीं। धन्य हो गया-आज मैं धन्य हो गया; जो आज माता ने मुझ पर इतनी कृपा की। हे माता! आपके इस भक्त ने जो कुछ नैवेद्य-अर्पण किया है;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे आप बड़े प्रेम से ग्रहण कर रही हैं। आज तक तुम्हारा ऐसा चमत्कार नहीं देखा माँ! (कुछ सोचकर)हे दयामयि! इन दोनों (राम लक्ष्मण की ओर संकेत करते हुए) तापसों ने मेरे पूज्य पिता रावण से नाहक ही बैर बढ़ाया। सेना का संहार किया और मेरे परिवार को भी मार गिराया। मैं आज उसका सारा प्रतिशोध चुकाऊँगा। इन दोनों को तुम्हारे लिये बलि देकर पिता की आज्ञा का पालन करूँगा।

अहिरावण- (राम और लक्ष्मण से प्रकट)-

''तुम दोनों की बलि देने को मैं तुम्हें यहाँ पर लाया हूँ।
दे करके वचन पिताश्री को मैं उसे निभाने आया हूँ।।
तुम रार बढ़ाकर रावण से शिर बहुत उठाये फिरते हो?
मैं अभी काट दूँगा शिर को, तुम क्यों इतराये फिरते हो??
अभिमान तुम्हारा अभी तुम्हें अब भारी दण्ड यहीं देगा।
रावण से लड़ने का बदला अहिरावण आज यहीं लेगा।।''

लक्ष्मण- (रोषपूर्वक)-

''बस, खबरदार रे! सावधान हो जा रावण के लाल!
बिना विचारे अरे दुष्ट! क्यों व्यर्थ बजाता गाल??
माता सीता के कारण ही हम रण करते घनघोर।
हर लाया है रावण उनको, है अतः वध्य वह चोर।।
यों तू भी हमें चुराकर ही लाया है रे, इस रात।
'चोरों का साथी चोर', सदा जग में प्रसिद्ध यह बात।।''

अहिरावण- (क्षुब्ध होकर)-सत्य है-रस्सी जल जाती है, परन्तु उसकी ऐंठन नहीं जाती है-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बलिबेदी पर है खड़ा हुआ, फिर भी भय तनिक न खाता है।
ज्यों बलि का बकरा बार-बार 'मैं'-'मैं' बकवास लगाता है।।
है बलि की बेला आ पहुँची, अंतिम अभिलाषा बतलाओ।
अब समय गँवाना ठीक नहीं, सच्चाई को मत झुठलाओ।।
बलिदान अभी कर दूँगा मैं, अपनी इन देवी के आगे।
जिसका करना हो ध्यान-करो, फिर आओ देवी के आगे।।"

राम- (उपहासपूर्वक)-
"व्यंग बोलकर रे अहिरावण! क्यों करता अभिमान?
अभी प्रकट होगा वह-जिसका मैं करता हूँ- ध्यान।।
जो सीता का परम दुलारा, मेरा प्रिय हनुमान।
ध्यान उसी का करता हूँ अब, वह है प्राण-समान।।"

(राम नेत्र बन्द कर ध्यान का अभिनय करते हैं)

अहिरावण- (अट्टहासपूर्वक)-हाँ-हाँ, तुम दोनों अपने प्यारे हनुमान का ध्यान कर लो और बलि बेदी पर चढ़ने को प्रस्तुत हो जाओ। (चारों ओर देखते हुए) यहाँ तुम्हारा कोई भी प्यारा नहीं है। (हनुमान की ओर संकेत कर) देखो-इधर देखो, आज देवी जी कितनी प्रसन्न हैं। ये अब शीघ्र बलिदान चाहती हैं।

राम- अरे राक्षस अहिरावण! देवी बलिदान नहीं, कल्याण चाहती हैं। (ऊपर की ओर दृष्टि करके)-हे महावीर हनुमान! अब तुम ही मेरे सहायक हो। मैं तुम्हारी आराधना करता हूँ।

(स्वगत)

"हनुमत के होते राघव को कोई भी सता न पायेगा।
रावण-अहिरावण तो क्या हैं? यम भी उनसे भय खायेगा।।"

अहिरावण- (हँसता हुआ उपहास पूर्वक)- हनुमान-हनुमान, क्या बकवास

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा रखी है। अरे, वह बेचारा वानर तो कपिदल में सो रहा होगा। (तमक कर) बस, बहुत हो चुका। अब सँभल जाओ और मरने के लिये तैयार हो जाओ।.........यहाँ कोई हनुमान नहीं आ सकता।

(हनुमान का उछल कर अहिरावण को गला दबाकर गिरा देना और उसके ऊपर पैर रखकर)

हनुमान- बस! बस!! ठहर रे दुष्ट राक्षस!

(अहिरावण को पैर से दबाते हुए)

"अब सिद्धि दिखा, माया दिखला, दिखला कितना बल रखता है।
हनुमत के हाथों करनी का तू आज कटुक फल चखता है।।
है धन्य हुआ तेरा शरीर जो देवी का बलि-भोग बना।
मिल रही सहज ही मुक्ति तुझे, ऐसा दुर्लभ संयोग बना।।"

(हनुमान का राम-लक्ष्मण को शीश झुकाना)

हनुमान- (हाथ जोड़कर)

"लंका-दहन करते समय लंकेश को मारा नहीं।
प्रभु ही सँहारेंगे उसे-यह सोच, संहारा नहीं।।
था बच गया रावण अगर उस काल मेरे हाथ से।
तो आज अहिरावण मरे हे नाथ! मेरे हाथ से।।"

राम- अच्छा, यदि तुम्हारी यही इच्छा है, तो पूरी कर लो।

(हनुमान का एक पैर से गला दबाकर दूसरे पैर से अहिरावण पर प्रहार करते हुए उसे मार डालना। अहिरावण को मरा हुआ जानकर हनुमान का राम-लक्ष्मण को बन्धन-मुक्त करना ओर कंधे पर बैठाकर प्रस्थान) जय श्रीराम!

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तदश

(परदा खुलता है)

स्थान-पाताल लोक का मुख्य द्वार

[मकरध्वज बन्दी रूप में द्वार पर खड़ा है। राम-लक्ष्मण को लिये हुए हनुमान का आगमन]

हनुमान- (निकट आकर, मकरध्वज के बन्धन खोलकर)-पुत्र मकरध्वज! मैं तुम्हें मुक्त करता हूँ। पाताल लोक का राज सिंहासन रिक्त है। इसलिये यहाँ का शासन-भार तुम्हें सौंपता हूँ। अब तुम निष्कण्टक यहाँ का राज्य सँभालो।

राम- हाँ मकरध्वज! अब तुम पाताल लोक के राजा हो।

(मकरध्वज सभी को शिर झुकाता है)

मकरध्वज- (हाथ जोड़कर)-मैं आप सभी की वन्दना करता हूँ। आज मेरा अहोभाग्य है जो कि आप सभी का यहाँ मुझे दर्शन मिला।

हनुमान- अब तुम यहाँ का शासन-कार्य सँभालो। हमें आज शीघ्रता है। फिर कभी मिलेंगे। तुम सदैव परम प्रभु श्रीराम की भक्ति करते रहना। तुम्हारा कल्याण हो।

(मकरध्वज सभी को पुनः शिर झुकाता है)

(सभी का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : अष्टादश

(परदा खुलता है)

(स्थान-राम का सैन्य-शिविर)

(चारो ओर निराशा का वातावरण छाया हुआ है।
सुग्रीव जाम्बवन्त आदि चिन्तामग्न बैठे हैं।)

जाम्बवन्त- (विभीषण से व्यग्रतापूर्वक)-भाई विभीषण! अभी तक महावीर हनुमान नहीं आये। अब तो मन बहुत अधीर हो रहा है।

विभीषण- (अधीरतापूर्वक)-हाँ, अब तक तो उन्हें आ जाना चाहिए। न जाने क्या हुआ?..........अहिरावण रावण से कम मायावी नहीं है। वह अपने मायाजाल से कुछ भी कर सकता है। मुझे तो बड़ी दुश्चिन्ता हो रही है।

सुग्रीव- हाँ, उस दुष्ट के लिये तो बस, महावीर ही महा वीर हैं। मुझे तो उन पर पूरा भरोसा है। (राम-लक्ष्मण सहित हनुमान का प्रवेश। सभी का एक साथ श्रीराम को शिर झुकाना)

सभी- (एक साथ उल्लासपूर्वक)-बोलो-महावीर हनुमान की जय!
भगवान श्रीराम की जय!!
सुमित्रानन्दन लक्ष्मण की जय!!!

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : उन्नीस

(पर्दा खुलता है)

(स्थान-लंका में राम का शिविर)

(राम, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि प्रमुख गंभीर विमर्श कर रहे हैं।)

जाम्बवन्त- (श्रीराम से- हाथ जोड़कर)- प्रभो! पवनपुत्र महावीर हनुमान रावण के सबल सहयोगी अहिरावण को मार कर आप दोनों को सकुशल लेकर आ गये। अब तो लंका की ओर से लड़ने वाला कोई असुर योद्धा शेष नहीं बचा। अब तो अकेला रावण ही युद्ध के लिये आयेगा। सैन्यबल से दुर्बल रावण को मारना अब कठिन नहीं है। शीघ्र ही देवी सीता को उसके बन्धन से मुक्ति मिल जायेगी।

राम- (विभीषण की ओर देखकर)- यह तो महाराज विभीषण ही बता सकते हैं, कि रावण का सहयोगी कोई महाभट अभी शेष है, कि नहीं। क्योंकि रावण की लौकिक-अलौकिक अनेक शक्तियाँ ही अभी तक हमारी विजय-सिद्धि में बाधक बनती रही हैं।

विभीषण- (हाथ जोड़कर, राम से)- स्वामी! दशानन का सहयोगी कोई और योद्धा तो अब मेरी दृष्टि में शेष नहीं है।...... किन्तु........

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम- (उत्सुकतापूर्वक)- किन्तु? ....किन्तु क्या? लंकेश!

विभीषण- हे रघुवीर! यद्यपि अब केवल रावण ही शेष बचा है युद्ध करने के लिये; किन्तु उसका संहार करना असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है; क्योंकि उसके नाभिकुण्ड में स्थित 'अमृत' को जब-तक जला-सुखा न दिया जाय और जब-तक उसके 'मृत्युबाण' को नष्ट न कर दिया जाय, तब-तक रावण मारे नहीं मरेगा।

राम- (जिज्ञासा पूर्वक)- यह मृत्युबाण क्या है लंकापति!

विभीषण- प्रभो! रावण ने ब्रह्मा की तपस्या करके जब अमरत्व का वरदान पाया था, तभी विधाता ने कहा था, कि- रावण, तुमको न मरने का वरदान देकर मैं प्रसन्न हूँ, किन्तु तुम्हारी मृत्यु अवश्य होगी। अतः जिस बाण से तुम्हारी मृत्यु होगी, वह बाण मैं तुम्हीं को सौंप रहा हूँ जिससे तुम्हारी मृत्यु तुम्हारी मुट्ठी में बन्दी बनी रहे।

राम- तो क्या रावण का मृत्युबाण विधाता ने दिया?

विभीषण- हाँ स्वामी! ब्रह्मा ने रावण का मृत्युबाण उसको तत्काल दे दिया था। वह बाण रावण के पास जब-तक सुरक्षित है, तब तक उसको मार पाना असंभव है।

राम- तो रावण का वह मृत्युबाण कहाँ पर है?

विभीषण- रावण के उस मृत्युबाण को महारानी मन्दोदरी ने अपने पास सुरक्षित कर लिया था, जिसको उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

जाम्बवन्त- हे रघुनाथ! रावण के उस मृत्युबाण का पता मन्दोदरी से ही मिल सकता है किन्तु इस कार्य को कौन सम्पन्न कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेगा?

हनुमान- (श्रीराम से- हाथ जोड़कर)- प्रभो! आपकी आज्ञा और आशीर्वाद मिले तो आपके प्रताप से यह सेवक इस कार्य को जाकर कर आये।

राम- हाँ, अंजनीनन्दन! तुमसे यही आशा है। तुम तो मेरे संकटमोचन हो।

विभीषण- स्वामी! किन्तु यह कार्य आज ही चतुर्थप्रहर में जब लंकेश अपनी नित्य उपासना के लिये एकान्त-गुफा में जाय, तभी करना संभव होगा, उस समय मन्दोदरी अपने भवन में ही रहती है। हाँ,....... एक बात और........., महारानी मंदोदरी ज्योतिष पर बहुत विश्वास करती हैं। पवनकुमार ज्योतिषी के ही रूप-वेष में उसके पास जाने पर कृतकार्य हो सकेंगे।

राम- (हनुमान से)- आंजनेय! समझ गये न!

हनुमान- (हाथ जोड़कर)- हाँ, प्रभो! सब समझ गया। आप सेवक को आशीर्वाद देकर कृतार्थ करें। (राम के चरणों में शिर नवा कर 'जयश्रीराम' कहते हुए हनुमान का प्रस्थान)

सभी लोग- (हनुमान को जाते हुए देखते हैं।)

(यवनिका पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : बीस

(पर्दा खुलता है)

(स्थान- लंका का अन्तःपुर)

(समय - संध्या का पूर्व काल)

(मन्दोदरी अपने कक्ष में चिन्तामग्न एकाकी बैठी है, कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी- (हाथ जोड़े हुए विनतभाव से)- महारानी जी! अन्तःपुर के बाह्यद्वार पर एक बृद्ध ज्योतिषी पधारे हैं। वे आपके सौभाग्य-रक्षा का कोई रहस्य बताना चाहते हैं।

मन्दोदरी- जाओ, आदरपूर्वक उनको ले आओ।

कंचुकी- महारानी की जो आज्ञा। (कंचुकी का प्रस्थान, कुछ पल में ज्योतिषी को लेकर कंचुकी का आगमन)

मन्दोदरी- कंचुकी! अब तुम अपने स्थान पर जाओ।
(कंचुकी का प्रस्थान)

मन्दोदरी- बृद्ध ज्योतिषी को अभिवादन पूर्वक आसन देती है।

ज्योतिषी- महारानी जी! मैं लंकेश के प्राण-संकट पर अत्यधिक व्यथित एवं चिन्तित हूँ। इसीलिये तुम्हारे कल्याण के लिए मैं कुछ तुमसे कहना चाहता हूँ।

मन्दोदरी- (व्यथापूर्वक)- महाराज! मैं तो दिनरात इसी चिन्ता एवं वेदना से घुलती रहती हूँ। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो रही हूँ। मेरा क्या भविष्य है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिषी- (ऊपर की ओर एक बार देखकर)- महारानी जी! आप निराश न हों! मेरी ज्योतिषीय गणना के अनुसार ग्रह-नक्षत्र बता रहे हैं कि आपके सौभाग्य की रक्षा होगी। मैंने योग-दृष्टि से जान लिया है, कि लंकेश को विधाता ने एक "मृत्युबाण" दिया था, जिसकी हर प्रकार से सुरक्षा में ही लंका एवं लंकेश की रक्षा निहित है। आपको चाहिये कि वह "मृत्युबाण" स्वयं अपनी ही अभिरक्षा में रखें। उसको अपने भवन के स्थान विशेष और दिशा विशेष में रखने पर ही वह प्रभाव शून्य रहेगा। (कुछ क्षण सोचकर) मैं "मृत्युबाण" को सुरक्षित रखने की दिशा और स्थान बता दूँगा।

मन्दोदरी- (अधीरतापूर्वक)- महाराज! मैंने तो उस बाण विशेष को रखते समय इस विन्दु पर विचार ही नहीं किया कि स्थान और दिशा विशेष में रखने से ही अनुकूल फल होगा और वह "मृत्युबाण" निष्फल होगा।

ज्योतिषी- तो...... इसी विन्दु पर विचार न करने से ही लंका में महानाश मचा हुआ है। आपको तत्समय कोई समुचित मार्गदर्शन कराने वाला नहीं मिला। तभी तो आप सबके जीवन में ऐसे दिन आ गये हैं। आखिर आपने किस अशुभ स्थान पर उस मृत्युबाण को रख दिया है?

मन्दोदरी- (व्याकुल होकर)- इसी अन्तःसभामण्डप के मध्य में वह (अंगुलि से संकेत करती हुई) जो स्फटिक स्तम्भ है, उसी के मध्य में मृत्युबाण को सुरक्षित रखा गया है।

हनुमान- (स्फटिक स्तम्भ को देखते हुए)- अच्छा! तो यही कारण है लंका में वज्रपात का।............ आप चिन्ता न करें। मैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी मंत्र-बल से 'मृत्युबाण' सहित इस स्तम्भ को बाँधे दे रहा हूँ। (झटिति उठकर हनुमान का स्तम्भ के पास जाकर जोर से पाद-प्रहार करना। पाद-प्रहार करते ही स्तम्भ टूट कर बिखर जाता है, मृत्यु-बाण को त्वरित लेकर ज्योतिषी "जयश्रीराम" कहते हुए आकाश मार्ग से निकल जाता है)

मन्दोदरी- (तड़पती हुई)- अरे-अरे...... यह क्या हुआ? हाय रे दुर्भाग्य.......

(माथा पीट कर विलाप करने लगती है)

(यवनिका - पतन)

(नेपथ्य से)

'मृत्युबाण' लेकर बजरंगी रामशिखर को धाये।
जो भी जग में जन्मा, उसकी मृत्यु कहाँ रुक पाये।।"

●



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : इक्कीश

(परदा खुलता है)

(स्थान- लंका का समर क्षेत्र)

(चेतन दास के साथ बात करते हुए
वीणापाणि नारद का आगमन)

नारद- (वीणा के तार को झंकारते हुए)-नारायण! नारायण!! देखा- बच्चा चेतनदास? राघवेन्द्र राम की लीला कुछ समझ में आयी?

चेतनदास- क्या? गुरुदेव! मैं नहीं समझा। आप कुछ साफ-साफ बताइये, तब तो समझूँ मैं।

नारद- (हँसते हुए)-वाह-भाई वाह! इतना बड़ा संहार हो गया और तुम कहते हो कि-'मैं नहीं समझा'। नारायण! नारायण!!
''क्षण भर में प्रभु ने किया रावण-कुल-संहार।
मृत्युलोक से हो गया दूर पाप का भार।।''

चेतनदास- हाँ प्रभो! रावण बड़ा ही बलवान और प्रतापी था, लेकिन प्रभु ने उसका सर्वनाश कर दिया। अब उसके कुल में कोई वीर योद्धा रोने वाला भी नहीं रह गया। प्रभु की लीला अपरम्पार है।

नारद- नारायण! नारायण!! वहीं तो कहता हूँ कि ईश्वर के यहाँ देर हो सकती है परन्तु अन्धेर नहीं हो सकता। और; सच कहूँ तो, मेरी भी दिनचर्या का झंझट दूर हो गया। अब तो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान राम अवधबिहारी हो गये। इसलिये अब मुझे लंका जाने से फुरसत मिल गयी। नारायण! नारायण!!

चेतनदास- स्वामी! अब आपका क्या विचार है?

नारद- नारायण! नारायण!! अरे, विचार क्या है। अब तो बन्दा अयोध्या को ही जाने के लिये तैयार है, क्योंकि अयोध्यावासी भगवान राम को राजा के रूप में पाकर फूले नहीं समायेंगे। वहाँ का उत्सव आर आनन्द तो देखते ही बनेगा। इस परम दुर्लभ और दिव्य अवसर पर मैं भी चलकर रामराज का आनन्द प्राप्त करूँगा।

चेतनदास- (मुस्कराते हुए)-स्वामी! तो क्या आप अयोध्या में भी अपना पुराना धन्धा चालू रखेंगे?

नारद- (कुछ न समझते हुए)-अरे, बच्चा! कौन-सा पुराना धन्धा?

चेतनदास- बस, स्वामी! यही चारो ओर जा-जाकर लोगों को लड़ाने का धन्धा।

नारद- (हँसते हुए)-हाँ बच्चा! इसमें मुझे बड़ा आनन्द आता है और इसी बहाने प्रभु का कार्य भी हो जाता है। अच्छा, चलो अब विलम्ब न करो। अयोध्या में आनन्द का उत्सव बढ़ रहा होगा।

चेतनदास- (उत्सुकतापूर्वक)-हाँ, स्वामी! चलो-चलें!

(दोनों का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : बाइस

(परदा खुलता है)

(स्थान-किष्किन्धा में सुग्रीव का राज-उद्यान)
(समय-मध्याह्न)

(पुष्पक विमान पर सीता, राम, लक्ष्मण, सुग्रीव, अंगद, विभीषण, हनुमान, जाम्बवन्त इत्यादि आरूढ़ होते हैं। तारा, रुमा इत्यादि राम-सीता को हाथ जोड़कर विदा करते हैं। पुष्पक आकाश में गतिमान हो जाता है।)

हनुमान- (साञ्जलि)-प्रभो! किष्किन्धा पहुँचकर अंगद ने अपनी माँ तारा, एवं देवी रुमा आदि का पद-वन्दन कर लिया। मुझे भी जननी को देखने की लालसा है।.........बहुत समय हो गया उनके पास से आये हुये। कांचनगिरि तो मार्ग में ही पड़ेगा, नाथ!

राम- (प्रसन्न मुद्रा में)-हनुमान! तुमने मेरे लिये बड़े सुख की बात कही। हमें भी तुम्हारी तपोमयी माँ का दर्शन-सुख मिलेगा। हमें अब वहीं चलना है। तुम्हारे कारण मेरी भी इच्छा सार्थक हो जायेगी।

(कुछ समय बाद पुष्पक कांचनगिरि के शिखर की ओर उतरता है, हनुमान शीघ्रता से उतरकर माँ के भवन की ओर दौड़ते हैं)

हनुमान- (भवन द्वार पर पहुँचकर)-माँ! ओ माँ!! देखो बाहर कौन पधारे हैं?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अंजना हनुमान की आवाज सुनकर द्वार पर आती है)

अंजना- (प्रसन्नता से)-अरे पुत्र! तू कब आया?

(हनुमान माँ के चरणों में प्रणाम करते हैं)

अंजना- (हनुमान के शिर पर हाथ फेरती हुई)-चिरंजीव वत्स! अधिक अवधि के बाद तुम्हें देख रही हूँ।

हनुमान- (खड़े होकर)-माँ! वहाँ शिखर पर अयोध्यानरेश श्री रघुनाथ जी अपने अनुज श्री लक्ष्मण लाल और अपनी अभिन्न शक्ति जानकी के साथ पधार चुके हैं। साथ में वानरेन्द्र सुग्रीव इत्यादि भी हैं।

अंजना- (हर्ष एवं अधीरता पूर्वक)-चलो बेटा, उनके लिये कुछ स्वागत-सामग्री ले लूँ। तुमने तो आज मेरा जीवन धन्य कर दिया श्री रघुनाथ जी को यहाँ लाकर।

(हनुमान को हृदय से लगा लेती हैं)

हनुमान- माँ! शीघ्र चलो। स्वागत-सामग्री कुछ भी न ले चलो। मेरे स्वामी तो बड़े संकोची हैं। इस सबसे उनको बड़ा संकोच होगा। वे तो तुम्हारा आशीर्वाद लेने आये हैं। उन्हें और कुछ नहीं चाहिए।

अंजना- तू उनको यहाँ भवन में क्यों नहीं लाया?

हनुमान- वे यहाँ अधिक रुकेगे नहीं। अतिशीघ्र अयोध्या पहुँचना है उनको।

अंजना- अच्छा चल। (दोनों का प्रस्थान)

राम- (निकट पहुँची हुई अंजना को देखकर अधीरता पूर्वक)- दाशरथि राम, अनुज लक्ष्मण और भार्या सीता के सहित प्रणाम करता है माँ अंजने!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(तीनों क्रमशः अंजना का पद वन्दन करते हैं।)

अंजना- (सीता को गले लगाती हुई)-सुहाग अमर रहे।

सीता- आपके पुत्र को मैंने अपना बना लिया है, माँ!

अंजना- वह तो तुम्हारा ही है बेटी। मैं तो उसकी मात्र धाय माँ हूँ। तुमने उसे स्वयं अपना लिया। यह मेरा भी सौभाग्य है। मैं दायित्व-मुक्त हो गयी।

हनुमान- (परिचय कराते हुए)-माँ! ये वानरेन्द्र सुग्रीव हैं, ये बालि-पुत्र अंगद, ये ऋक्षराज जाम्बवन्त।

(तीनों नमन करते हैं।)

अंजना- (दूर खड़े विभीषण को लक्षित करती हुई)-और ये धर्मात्मा कौन हैं सामने?

हनुमान- माँ? ये तो लंका-नरेश विभीषण हैं?

अंजना- लंका-नरेश तो रावण हैं?

हनुमान- माँ। रावण तो मेरे स्वामी रघुवीर के बाणों से सकुल समाप्त हो गया।

अंजना- (साश्चर्य)-वह क्यों?

हनुमान- पूज्य पिता दशरथ की आज्ञा मानकर मेरे स्वामी अनुज लक्ष्मण और जानकी जी के सहित वन में विचरते हुये पंचवटी में ठहरे, तो रावण ने अम्बा का अपहरण करके शत्रुता ठान ली। अतः वानरों की सेना ले जाकर प्रभु ने लंका पर चढ़ाई की और सकुल रावण को अपने बाणों से मुक्ति प्रदान की।

अंजना- और तू कहाँ रहा?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- माँ! मैं ही तो अम्बा सीता का पता लगाने लंका गया था। अम्बा का पता लगाकर स्वामी को किष्किन्धा से लंका ले गया था।

अंजना- धिक्कार है तुझको, धिक्कार है। तू मुझे माँ क्यों कहता है? तूने मेरा दूध लजाया है। आह! तूने वहाँ लंका में स्वयं ही सकुल रावण को क्यों नहीं मार डाला? तूने रघुनाथ जी को किष्किन्धा से लंका ले जाकर कष्ट क्यों दिया? तू मेरा पुत्र है? धिक्कार है तेरे बल को।

हनुमान- (सविनय)-किन्तु, माँ! मैं ऐसा नहीं कर सकता था। मैं स्वतन्त्र नहीं था। विश्वास न हो तो ऋक्षराज जाम्बवन्त जी से पूछ लो। इनको सब कुछ ज्ञात है। (जाम्बवन्त की ओर देखने लगते हैं)

जाम्बवन्त- (आगे आकर)-हाँ देवि! महावीर जी सत्य कह रहे हैं। सेवक की शोभा स्वामी का सुयश समृद्ध करने में हैं, स्वयं शौर्य-प्रदर्शन करने में नहीं। सेवक को फूँक-फूँककर कदम रखना होता है।

अंजना- आप ठीक ही कह रहे हैं ऋक्षराज! अन्यथा; यह हनुमान- इसे तो मैंने अपना दूध पिलाया है।

(सहसा लक्ष्मण के मुख पर उगी मुस्कान को देखकर)

अंजना- (लक्ष्मण से)-और कुमार तुम·······? तुम मुझ पर सन्देह कर सकते हो? तुम सोचते हो, मैं अपने दूध के सम्बन्ध में डींग हाँक रही हूँ? मैंने तुम्हारे मुख की भंगिमा को पढ़ लिया है। तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं होता, तो लो, देखो- मेरा यही दूध पिया है हनुमान ने।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(आवेश में आकर अंजना अपना वक्षस्थल खोलकर एक स्तन अपने हाथ से दबाती हैं। दूध की मोटी धारा सामने स्थित काँचनगिरि के उच्च शिखर पर वज्रपात के समान गिरती है। और धारा के गिरते ही गड़गड़ाहट के साथ पर्वत-शिखर बीच से विदीर्ण हो जाता है। सभी आश्चर्य में डूब जाते हैं।)

राम- (सम्मुख आकर सविनय)-माँ! लक्ष्मण बालक हैं। आप इन्हें इस अपराध के लिए क्षमा करें। (अंजना के चरण पकड़ लेते हैं।)

अंजना- (राम को उठाकर)-रघुनाथ जी! आपका शील आपके ही अनुरूप है। (कुछ समय तक आनन्द-विह्वल रहती है और राम की ओर देखती है।)

हनुमान- माँ? प्रभु को शीघ्र अयोध्या पहुँचना हैं। आप अब जाने को अनुमति दें।

अंजना- वत्स हनुमान! श्री राघवेन्द्र तुम्हारे पिता हैं और सीता तुम्हारी माँ। श्रद्धापूर्वक इनकी सेवा से अपना और मेरा भी जीवन सार्थक करना।

(सभी अंजना को नमन करके पुष्पक पर बैठते हैं। पुष्पक प्रयाग की ओर उड़ चलता है।)

(यवनिका - पतन)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : तेईस

(परदा खुलता है)

(स्थान-प्रयाग)

(समय-दिन का चतुर्थ प्रहर)

राम- (गंभीरतापूर्वक)-पवननन्दन! यहाँ प्रयाग में मुझे महर्षि भारद्वाज का आशीर्वाद लेना है। सम्भवतः रात्रिवास भी यहीं करना पड़े। तुम अभी अयोध्या चले जाओ। वहाँ भरत का भाव समझकर मुझे अविलम्ब सूचना दो। मैं आगे तदनुसार ही करूँगा।

हनुमान- (दूसरी ओर मुँह करके, अन्यभाषित)-क्या प्रभु भ्राता भरत पर आशंका करते हैं?

हनुमान- (राम से-प्रकट)-प्रभो! भरतलाल जी का भाव? मैं इस बात को समझा नहीं।

राम- हा हनुमान! मैं जब अयोध्या से वनवास के लिये निकला था तो कुछ कारणों से दिन का प्रथम प्रहर बीत गया था। तुम भरत को मेरे प्रयाग पहुँचने की सूचना देना और पूछना कि मैं अयोध्या में सूर्योदय के साथ ही आ जाऊँ या एक प्रहर दिन बीतने पर पहुँचूँ, क्योंकि मझली माँ ने मुझे सूर्योदय होते ही अयोध्या से प्रस्थान कर देने को कहा था।

हनुमान- (साञ्जलि)-ठीक है स्वामी! मैं अभी जा रहा हूँ और अविलम्ब यथास्थिति से अवगत करा रहा हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम- एक बात और ······· अयोध्या से लौटते समय शृंगवेर पुर में निषादराज गुह को कहना कि मैं सकुशल लौटकर आ गया हूँ।·········निषादराज मेरे मित्र हैं।

हनुमान- (साञ्जलि)-अच्छा प्रभो! मैं जाता हूँ। (प्रस्थान)

(नन्दि ग्राम में भरत की कुटी के सामने कौशल्या, सुमित्रा, कैकेई, वशिष्ठ, शत्रुघ्न, सुमन्त इत्यादि गुरुजन एवं अन्य विशिष्ट पुरजन एकत्रित हैं)

भरत- (अधीरता पूर्वक)- आज प्रभु के वनवास की अवधि की अंतिम रात होगी। यदि वे कल सूर्योदय होते ही न आ गये तो यह अधम शरीर कल माँ सरयू की गोद में समा जायेगा।········अभी तक कोई भी चर प्रभु के आने की गन्ध लेकर नहीं आया। आज तो अयोध्या के निकट ही प्रभु को होना चाहिये था।

सुमन्त- आपने ठीक कहा कुमार! कल सूर्योदय तक प्रभु के न आने पर मैं भी आपका ही अनुसरण करूँगा।

शेष सभी लोग- (एक साथ)-और हम भी कुमार भरत का अनुसरण करेंगे।

(सहसा आकाश से हनुमान का उतरना, हनुमान के कानों में सभी के शब्द टकराते हैं।)

हनुमान- (शीघ्रता से भूमि पर पैर रखते ही)-श्री जानकी जी एवं कुमार लक्ष्मण के साथ श्री रघुनाथ जी आ रहे हैं। (भरत के पैरों में शिर रखते हैं)

भरत- (हर्षावेग के साथ)-श्री रामदूत!

(हनुमान को उठाकर हृदय से लगा लेते हैं।)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (भरत के आलिंगन से छूटकर)-'प्रभु कल पुष्पक विमान से अयोध्या पहुँच रहे है' (वशिष्ठ, राजमाताओं, सुमन्तादि वृद्धजनों को प्रणाम करते हुए) प्रभु प्रातः कालीन कृत्य प्रयाग में संपन्न करेंगे। शृंगवेरपुर में निषादराज को सत्कार का अवसर देने में कुछ समय लग सकता है'।

भरत- (स्मरण करते हुए) 'वे, श्रीराम सखा! .... प्रभु जब अयोध्या से निर्वासित होकर निकले-निषादराज ही प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना सर्वस्व रघुनाथ जी की सेवा में समर्पित कर दिया।.......उन..........उनसे बराबरी का साहस नहीं किया जा सकता। प्रभु के स्वागत का सर्वप्रथम अधिकार उन्हें ही मिलना चाहिये। भरत प्रतीक्षा कर लेगा।

हनुमान- (साञ्जलि)-श्री निषादराज को भी प्रभु के आगमन का सन्देश मुझे अभी देना है। प्रभु कल प्रातः ही वहाँ पहुँचेंगे। आप लोग मुझे जाने की अनुमति दें।

(सभी को यथोचित प्रणाम, नमन करते हैं)

भरत- (हर्ष-विह्वल होकर)-हाँ, श्रीराम दूत! आप निषादराज जी को सन्देश अवश्य दें।

(हनुमान का प्रस्थान, शत्रुघ्न का शंखध्वनि करना, हनुमान को दूर तक शंखनाद सुनाई पड़ता है।)

(पटाक्षेप)

(नेपथ्य से)

समाचार सुन हो गये दुःख-द्वार सब बन्द।
पुरी अयोध्या में अमित उमड़ पड़ा आनन्द।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमन्महानाटक

अंक चतुर्थ

दृश्य : प्रथम

(परदा खुलता है)
(अयोध्या मे राम दरबार)
(भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण, सुमन्त आदि बैठे हैं)

हनुमान- (भरत से)-स्वामी! अभी तक प्रभु दरबार में नहीं पधारे हैं।

भरत- हाँ, आज कुछ विलम्ब अवश्य हो रहा है।

(नेपथ्य से आवाज)

सावधान! सावधान!! सावधान!!!

गौ-ब्राह्मण-रक्षक, प्रजावत्सल, समदर्शी, अयोध्या नरेश दशरथ नन्दन श्रीरामचन्द्र जी माता जनकनन्दिनी के साथ राज दरबार में पधार रहे हैं।

(सभी लोगों का खड़ा होना, राम और जानकी का आकर सिंहासन पर बैठ जाना, राम के संकेत पर सभी का बैठना)

राम- (सुमन्त से)-कहिये मंत्रिवर! प्रजा तो सुखी है? कहीं किसी को भी किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं हैं?-

"राजा यद्यपि जनता पर शासन करने का अधिकारी है।
लेकिन, सच्चा राजा तो जनता का, बस आज्ञाकारी है।।
जो राजा मनमानी करके जनता को दुख पहुँचाता है।
वह राजा नहीं, कसाई है, यह राजधर्म बतलाता है।।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन्त- (साञ्जलि)-महाराज! आपके राज्य में सिंह और मृग एक ही घाट पर पानी पीते हैं। हवन और यज्ञ निर्विघ्न हो रहे हैं। ऋषि-मुनि वनों में निश्चिन्त होकर अपनी चर्या कर रहे हैं। बच्चों के लिये पाठशालायें तथा व्यायाम-शालायें सुचारु रूप से चल रही हैं। रोगियों के लिये स्थान-स्थान पर औषधालयों-चिकित्सागृहों का भी पूरा प्रबन्ध किया गया है। सभी सुखी-सानन्द और सारोग्य हैं। जहाँ समदर्शी राजा होंगे-वहाँ दुखी कौन होगा नाथ?

राम- (सुग्रीव और विभीषण से)-भाई सुग्रीव! भाई विभीषण! आप लोगों को अयोध्या आये अधिक समय बीत गया है। राजा के बिना राज्य सूना एवं सिंहासन खाली रहता है। प्रजा में उपद्रव बढ़ते हैं। अतः; अब आप लोग अपने-अपने राज्यों में जाकर शासन-कार्य सँभालें और अपनी-अपनी प्रजा की सेवा करें।

सुग्रीव- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! आपका कथन समुचित है, किन्तु आत्मा आपके वियोग को स्वीकार नहीं करती।

विभीषण- हाँ स्वामी! भाई सुग्रीव ने यथार्थ कहा है। मेरा मन भी यही कह रहा है।

राम- हाँ भाई! मैं आप दोनों की बात को स्वीकार कर रहा हूँ; परन्तु, राजा को तो अपना धर्म-पालन करना ही चाहिये। क्योंकि राज्य एवं प्रजा का पालन-संरक्षण ही राजा का परम कर्त्तव्य धर्म है।

विभीषण- (साञ्जलि)-स्वामी! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, किन्तु प्रभो! मेरी भी एक अभिलाषा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम- (आश्वासन की भाव मुद्रा में)- भक्त विभीषण! तुम एक नहीं, अपनी अनेक अभिलाषायें पूरी कर सकते हो। निःसंकोच कहो-क्या कहना चाहते हो?

विभीषण- (माला दिखाते हुए)-स्वामी! यह सेवक आपको यह माला पहनाना चाहता है।

राम- भाई विभीषण! यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो पूरी कर लो। इस बहुमूल्य माला को मुझे पहना कर अपनी अभिलाषा पूरी कर लो।

विभीषण- (साञ्जलि)-धन्य हैं दीनबन्धो! आप धन्य हैं। अपने भक्तों की अभिलाषा पूरी करने वाले प्रभो! आप धन्य हैं! मेरी अभिलाषा पूरी होने से मेरा आनन्द बढ़ गया।

(श्रीराम को माला पहनाकर)-

बोलिये-मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र की जय!

सभी- (एक साथ) जय.......।

राम- (माला को देखते हुए)-वाह! कितनी सुन्दर माला है! (माला को उतारते हुए सीता से) प्रिये सीते! यह लंकेश्वर का दिया हुआ प्रेमोपहार है। अब यह उपहार तुम मेरी ओर से स्वीकार कर लो।

(राम का सीता को माला पहनाना)

सीता- (प्रसन्न मुद्रा में, हनुमान से)-प्रिय हनुमान! मैं तुमसे अत्यधिक प्रसन्न हूँ।

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-माता! यह आपकी मुझ पर असीम कृपा है। मैं तो आप दोनों का दास मात्र हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता- (गले से माला उतारकर हनुमान को पहनाते हुए)-लो-यह उपहार तुम मेरी ओर से स्वीकार करो।

हनुमान- (शिर नवाकर)-धन्य हैं माता! आप धन्य हैं।

(माला को देखकर दाँतों से दानों को काट-काट कर फेंकना)

विभीषण- (हनुमान को देखकर खिन्न होते हुए)-अरे महावीर जी! इस बहुमूल्य माला के दानों में आप गंभीरता से क्या देख रहे हैं? फिर बड़ी निर्ममता से आप दानों को दातों से काटकर क्यों फेंक देते हैं?

सुग्रीव- (हँसकर)-इसी को कहते हैं कि-'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद'। (इस प्रकार माला के कटे हुए बिखरे दानों को देखते हुए) इन बहुमूल्य दानों को ऐसे काटते हैं; मानों इन्हें भी मोदक या फल समझते है।

विभीषण- हाँ, आप ठीक कह रहे है। इन्होंने बाल्यकाल में सूर्यदेव को भी फल के धोके में निगल लिया था।

हनुमान- (अकुला कर)-नहीं भाई! आप सब लोग इस विषय में मेरी ऐसी हँसी न उड़ायें। मैं इन दानों को फल या मोदक नहीं समझ रहा हूँ।

विभीषण- अरे भाई! तब क्या समझ कर इन दानों को एक-एक कर काटते ही जा रहे हो?

हनुमान- (निराशा पूर्वक)-

''मैं दानों में इस माला के सच्चे महत्त्व को आँक रहा।
जिनकी आभा से आभासित हैं-उनकी छवि को झाँक रहा।।
जिन दानों में मेरे प्रभु की झाँकी या सुन्दर नाम नहीं।
वे दाने कंकड़-पत्थर हैं, उनसे मेरा कुछ काम नहीं।।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं यही सोचकर तोड़ रहा ये दाने बारम्बार सखे!
मैं इन दानों में खोज रहा हूँ जीवन का शृंगार सखे!!"

विभीषण– (विस्मय पूर्वक)–
"महावीर! क्यों काट रहे दानों को बारंबार?
ये तो पत्थर हैं, क्या तुमको इतना नहीं विचार??
खोज रहे क्यों इन दानों में प्रभु की छवि अभिराम?
अपने उर में भी क्या दिखला सकते प्रभु का नाम??"

हनुमान– (अत्यधिक उल्लास एवं विश्वासपूर्वक)–
हाँ–हाँ, क्यों नहीं?
"मेरे प्रभु इस देह में बसते हैं अविराम।
रमे हुए हैं दास के रोम–रोम में राम।।
अविश्वास कुछ मत करें, करें न व्यर्थ विचार।
राम–बिना मेरे लिये अर्थहीन संसार।।"
(हनुमान द्वारा अपना वक्षस्थल नाखूनों से चीरना, अभ्यन्तर में राम–सीता का दर्शन होना।)

सभी– (साश्चर्य देखकर एक साथ)–
बोलो महावीर हनुमान की जय!
भक्तराज हनुमान की जय!!

(यवनिका – पतन)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वितीय

(परदा खुलता है)

(स्थान-राजभवन का अन्तःपुर)

(माता जानकी अपने कक्ष में दर्पण के सम्मुख शृंगार कर रही हैं। हनुमान वहीं कुछ दूरी पर बैठे हैं।)

सीता- प्रिय पुत्र हनुमान! तुम कुछ समय तो विश्राम कर लिया करो। जब देखो, तब तुम कभी प्रभु की सेवा में उनके पास बैठे रहते हो या फिर मेरी सेवा में रमे रहते हो; आखिर तुम विश्राम कब करते हो?

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-आपकी सेवा या प्रभु की सेवा में रहकर विश्राम ही तो करता हूँ और इसी विश्राम में मुझे आनन्द मिलता है।

सीता- नहीं पुत्र! प्रत्येक जीव को कुछ समय विश्राम अवश्य करना चाहिये; अन्यथा........।

हनुमान- अन्यथा क्या माता? मैं नहीं समझ सका।

सीता- अन्यथा बीमार पड़ सकते हो।

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-हे माता! भला आपके रहते यह हनुमान बीमार कैसे पड़ सकता है?.......यदि यही बीमार पड़ जायेगा तो अच्छा कौन रहेगा?

सीता- (हँस कर)-मेरे कहने का अभिप्राय केवल तुम्हें आराम करने से था। (सीता माँग में सिन्दूर लगाने लगती हैं।)

(हनुमान का सीता को बार-बार सिन्दूर लगाते हुए देखना)

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-माता! यह क्या है, जिसे आप अपने मस्तक पर लगा रही हैं? और बार बार सँवार रही हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता- बेटा! यह सिन्दूर है, जिसे मैं मस्तक पर लगा रही हूँ।

हनुमान- माता जी! आप यह सिन्दूर क्यों लगाती हैं?

सीता- (हँस कर)-पुत्र, इसे लगाने से प्रभु बहुत प्रसन्न होते हैं।

हनुमान- (विस्मय पूर्वक)-तो क्या मेरे प्रभु सिन्दूर लगाने से बहुत प्रसन्न रहते हैं?

सीता- हाँ बेटा! इससे प्रभु बहुत प्रसन्न होते हैं।

हनुमान- माता जी! अब मैं समझ गया। मैं भी अपने प्रभु को प्रसन्न रखूँगा।

सीता- पुत्र! तुम इसकी चिन्ता छोड़ो। तुम्हारे प्रभु तुमसे सदैव प्रसन्न ही रहते हैं।

हनुमान- हाँ माता! यह तो आपकी और स्वयं प्रभु की मुझ पर महती कृपा है; किन्तु मुझे भी तो प्रभु को प्रसन्न रहने के लिये कुछ करना चाहिये।

सीता- पुत्र हनुमान! अब दरबार का समय हो रहा है। तुम्हें आज इन बातों में देर हो रही है।

हनुमान- (उठते हुए)-हाँ-हाँ माता श्री! अब मैं दरबार में ही जा रहा हूँ। आज तो प्रभु का जन्मदिवस भी है। आपके पास बैठ कर मैं यह भूल ही गया था।

(शीश नवाकर हनुमान का प्रस्थान)

सीता- (स्वगत)-हनुमान गये। मैं तो हनुमान को विश्राम के लिये कहती हूँ।.........स्वयं प्रभु भी हनुमान की अनुपस्थिति एक क्षण भी सहन नहीं कर पाते हैं। जब देखो, पूछा करते हैं- हनुमान कहाँ गये? हनुमान कहाँ गये??

[यवनिका-पतन]

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : तृतीय

(परदा खुलता है)

(स्थान-देवलोक से धरा पर आने का मार्ग)

(देवर्षि नारद का वीणा लिये प्रवेश)

नारद- (स्वगत)-नारायण!....... नारायण!! आजकल अयोध्या में आनन्द ही आनन्द है। जहाँ देखो-वहीं लोग पूजा-अर्चा में प्रसन्न हैं! हमारे पुरुषोत्तम भी राजधर्म में तत्पर हैं। अब तो राक्षसों का संहार हो चुका है। (कुछ सोचकर) तो अब भक्त और भगवान की लड़ाई देखनी चाहिये। भक्त और भगवान की लड़ाई देखने के लिये मुझे पहले कुछ करना चाहिये। (सामने देख कर) अरे, यह तो देवराज इन्द्र का महारथी सारथी मातलि है। अब......इसी से मिलता हूँ। भक्त और भगवान की लड़ाई में इसी को बलि का बकरा बनाता हूँ। चलकर अब इसी के द्वारा भक्त और भगवान को लड़ाता हूँ। नारायण!....... नारायण!!

मातलि- (नारद को सम्मुख देखकर सविनय)-देवर्षि! प्रणाम।

नारद- चिरंजीव वत्स! प्रसन्न रहो। कहो-मातलि! कहो, क्या तुम भी भगवान राम के वार्षिक जन्मोत्सव में ही जा रहे हो?

मातलि- (हाथ जोड़कर)-हाँ महाराज! हाँ, आप सत्य कह रहे हैं। मैं सीधा अयोध्या ही जा रहा हूँ।

नारद- नारायण! नारायण!! आज वहाँ देवताओं, मुनियों एवं राजाओं का जन्मोत्सव के अवसर पर बटोर हो रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातलि- अच्छा स्वामी! आज्ञा दीजिये। देर हो रही है। मुझे उचित समय पर वहाँ पहुँचना है।

नारद- अच्छा, तो सुनो, तुम तो भगवान श्रीराम के ही दरबार में जा रहे हो न?

मातलि- हाँ महाराज! हाँ, इसमें किसी प्रकार का कोई भी संशय-संदेह नहीं है।

नारद- तो तुम यह मत भूलना कि तुम एक सच्चे स्वाभिमानी क्षत्रिय हो।

मातलि- हाँ देवर्षि! मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ।

नारद- नारायण! नारायण!! तो सुनो-आज उस उत्सव-सभा के अध्यक्ष विश्वामित्र ही होंगे।

मातलि- (न समझने का अभिनय)-तो इससे क्या महाराज? विश्वामित्र ही श्रीराम के गुरु भी हैं।

नारद- (हँसते हुए)-नारायण! नारायण!! पूछते हो-इससे क्या? अरे, सुनो और समझो। विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय हैं और कर्म से ऋषि हैं। स्वयं तुम भी क्षत्रिय हो। विश्वामित्र अभिमानी क्षत्रिय हैं। तुम्हें उसका घमण्ड चूर-चूर करना है। वह अपने को ब्राह्मण मानता है। तुम ऐसे घमण्डी साधु को प्रणाम मत करना।

मातलि- इससे क्या होगा देवर्षि!

नारद- नारायण! नारायण!! अरे, इससे तो बहुत कुछ होगा; परन्तु यह बाद में देखा जायगा। यदि विश्वामित्र तुमसे पूछे कि-'तुमने मुझे प्रणाम क्यों नहीं किया'? तब जानते हो क्या उत्तर दोगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातलि- नहीं महाराज! आप ही बतायें कि मैं उन्हें क्या उत्तर दूँगा।

नारद- नारायण! नारायण!! इसका उत्तर तो बहुत सरल और स्पष्ट भी है। नारायण! नारायण!! उनसे कह देना कि- 'तुम भी क्षत्रिय हो और मैं भी क्षत्रिय हूँ। क्या मैं तुम्हारा दिया हुआ खाता हूँ या तुमसे डरता हूँ; जो तुमको प्रणाम करूँ। पूजा के योग्य तो ब्राह्मण ही हैं'।
समझे मातलि! मेरी बात भूलना मत।

मातलि- (उपकृत भाव से)-हाँ महाराज! आप ठीक कह रहे है। मैं वैसा ही करूँगा। आज भरी सभा में विश्वामित्र का सारा घमण्ड चूर-चूर कर दूँगा। उनको भी पता चलेगा कि किसी से पाला पड़ा है।

नारद- (मुस्कराते हुए)-तो, हाँ मातलि! तुम्हें तो वहाँ जाने की देर हो रही थी। अब शीघ्र जाओ। विलम्ब न करो।
नारायण!..... नारायण!!

मातलि- (हाथ जोड़कर)-हाँ-हाँ, महाराज! मैं चलता हूँ। प्रणाम।

नारद- आयुष्मान् भव। नारायण! नारायण!!

(मातलि का प्रस्थान)

नारद- (स्वगत)-नारायण! नारायण!! अब प्रभु की लीला देखने में बड़ा आनन्द आयेगा।......तो अब मैं भी चलूँ और वहाँ का आनन्द-उत्सव देखूँ। नारायण! नारायण!!

(नारद का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्थ

(परदा खुलता है)

(स्थान-राम का दरबार)

(राम, जानकी, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न, सुमन्त, विश्वामित्र आदि बैठे हैं)

राम- (सुमन्त से)-सुमन्त जी! अभी तक महावीर हनुमान नहीं दिखाई पड़े। वैसे प्रतिदिन हनुमान जी सबसे पहले दरबार में आ जाते थे।

सुमन्त- हाँ, स्वामी! दरबार के पहले महावीर जी आये थे; परन्तु तब से वापस नहीं लौटे हैं।

सीता- हाँ, आज प्रातः अधिक समय तक वे मेरे ही पास बैठे रहे। जैसे ही मैंने उन्हें दरबार के समय का ध्यान दिलाया, वे बिना कुछ कहे ही तुरन्त चल पड़े। परन्तु न जाने कहाँ रुके हैं।

(हनुमान का पूरे शरीर में सिन्दूर लगाये हुए दरबार में प्रवेश, राम आदि सभी का साश्चर्य देखना)

हनुमान- (शिर झुकाकर हाथ जोड़े हुए)-स्वामी तथा मातेश्वरी को सेवक हनुमान का प्रणाम।

राम- प्रसन्न रहो-भक्तवर हनुमान! प्रसन्न रहो। (विस्मय पूर्ण कौतूहल पूर्वक)-प्रिय हनुमान! आज तो तुमने पूरे शरीर में ही सिन्दूर लगा डाला है। क्या यह सिन्दूर मेरे जन्मोत्सव की प्रसन्नता में लगाया है?

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-हाँ, स्वामी! अब तो यह सेवक प्रतिदिन ही सिन्दूर लगायेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम- बजरंगी! यह तो बताओ कि तुम प्रतिदिन सिन्दूर क्यों लगाना चाहते हो?

हनुमान- (भोलेपन से भावुकता पूर्वक)-इसलिये, कि मेरे स्वामी मुझसे सदैव पूर्ण प्रसन्न रहें।

राम- (आश्चर्य पूर्वक)-आश्चर्य है कि आज महावीर जी को सिन्दूर लगाने की क्यों धुन सवार हो गई है?

सीता- (राम से)-आज प्रातः मुझको सिन्दूर लगाते देखकर हनुमान ने मुझसे प्रश्न किया था।

राम- (उत्कंठा पूर्वक)-प्रश्न किया था?.......वह कौन-सा प्रश्न था, जिसका उत्तर सिन्दूर लगाना हो गया?

सीता- यही कि-'माता जी! आप मस्तक पर सिन्दूर क्यों लगाती हैं' मैंने कहा-'सिन्दूर लगाने से प्रभु बहुत प्रसन्न रहते हैं'।

राम- (हँसकर)-बस, बस। मैं समझ गया। जब महावीर जी को यह पता चल गया कि मैं सिन्दूर लगाने से प्रसन्न रहता हूँ, तो इन्होंने अपने पूरे शरीर में ही सिन्दूर लेप लिया है। (हनुमान की ओर अभिमुख होकर) धन्य हो हनुमान! तुम धन्य हो, जो कि अपने स्वामी को प्रसन्न करने में लगे रहते हो।

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-नहीं, स्वामी! मुझे जितनी सेवा करनी चाहिये-उतनी नहीं कर पा रहा हूँ। आखिर मैं सेवा के ही लिये तो हूँ स्वामी!

राम- (उल्लसित होकर)-हे हनुमान! तुम्हारी यह भक्ति-भावना संसार में सदैव अमर रहेगी। मंगलवार तथा शनिवार को जो भक्त आपको सिन्दूर-लेपन करेगा-उस भक्त का कलिकाल में भी सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(हनुमान का प्रभु के चरणों के पास बैठकर शीश झुकाना)

(कुछ क्षण के पश्चात्)

विश्वामित्र- सभा में समुपस्थित समस्त सुजनवृन्द! आज भगवान राम का जन्मोत्सव है। इस अवसर पर मुझे सर्वसम्मति से आज का सभापति बनाया गया है। इस पावन दिवस पर हम सब श्रीराम का अभिनन्दन करते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि अयोध्यानरेश की कीर्ति संपूर्ण विश्व में फैले।

सभी- (एक साथ)-बोलिये-मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की जय।

(सभी राजा भगवान राम को बधाई तथा उपहार भेंट करते हैं)

राम- (सभी की ओर देखते हुए)-साथियो! उपस्थित नरेशवृन्द, नागरिको तथा पुरवासियो! आप सभी की शुभकामनाओं के लिये मैं हृदय से आभारी हूँ। आप सभी का स्नेहपूर्ण साथ और सहयोग ही मुझे सदैव न्यायपूर्ण सेवा करने के लिये तत्पर रखेगा। मैं आप सभी को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं कभी भी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होऊँगा। यह मेरा दृढ़ संकल्प है।

सभी- (एक साथ)-बोलो-भगवान श्रीराम की जय!

अयोध्यापति राघवेन्द्र की जय!!

(राम-सीता का अन्तःपुर में प्रस्थान। मातलि का प्रवेश)

मातलि- (हाथ जोड़कर सविनय)-बिलम्ब से आने के लिये मैं सभी सभाजनों का क्षमा प्रार्थी हूँ। श्रीरामचन्द्र जी के जन्मोत्सव की सभी को बहुत-बहुत बधाइयाँ। (एक ओर देखकर)-अहा! लंकापति विभीषण भी पधारे हैं। (सविनय) महाराज विभीषण को मातलि का प्रणाम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभीषण- प्रसन्न रहो मातले!

(मातलि सब ओर देखता है और विश्वामित्र के अतिरिक सभी से प्रणाम-आशीर्वाद करके बैठ जाता हैं। विश्वामित्र का मातलि को क्रोधपूर्वक देखना)

विश्वामित्र- (रोष पूर्वक)-मातलि! ओ मातलि! तुमने हमारा अपमान करके हमारे क्रोध को ललकारा है। तुमने इस भरी सभा में मुझको प्रणाम न करके मुझे अपमानित क्यों किया? यह तुम्हारा अक्षम्य अपराध है।

मातलि- ....(चुप रहता है)

विश्वामित्र- (गरजते हुए)-मातलि! चुप मत रहो। मेरी बात का स्पष्ट उत्तर दो।......तुम्हारा चुप रहना मेरे क्रोध को बढ़ा रहा है। शीघ्र उत्तर दो। मेरा खून उबल रहा है।

मातलि- (खड़ा होकर)-उपस्थित महानुभावो! आप लोग स्वयं विचार करें कि क्या ऋषियों का भी खून उबाल लेता है!

सभी- (एक साथ)-कभी नहीं-कभी नहीं।

विश्वामित्र- (चिल्ला कर)-मातलि! मैं केवल प्रणाम न करने का कारण पूछता हूँ। खून खौलाने का नहीं। शीघ्र उत्तर दो मातलि! अन्यथा........-।

मातलि- (व्यंग्य पूर्वक)-यदि मैंने आपको कारण बता दिया तो आप उसे सहन नहीं कर सकोगे।

विश्वामित्र- (लगभग चीखते हुए)-मातलि! मुझको पहेली मत बुझाओ। मेरे प्रश्न का सीधा उत्तर दो।

मातलि- तो सुनिये सीधा उत्तर। आप क्षत्रिय हैं और मैं भी श्रेष्ठ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्रिय हूँ।

विश्वामित्र- कभी था, परन्तु; अब नहीं हूँ।

मातलि- (हाथ से अपने को लक्षित करते हुए)-मैं तो पहले भी क्षत्रिय था और इस समय भी क्षत्रिय हूँ। मैं किसी का दिया हुआ नहीं खाता हूँ। आप ऐसे अभिमानी ऋषि को, जो पहले क्षत्रिय था और अब अपने घमण्ड तथा शक्ति से अपने को ऋषि कहलाता फिरता है-मैं उसे प्रणाम नहीं कर सकता। मेरी दृष्टि में आपकी कोई गणना नहीं है।

विश्वामित्र- (क्रोध पूर्वक)-कल के छोकरे! अपनी अक्ल की दवा कर। यदि मैंने तुझे शाप दे दिया तो मुझे दोष मत देना। मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूँ।

मातलि- वाह ऋषिराज! वाह! क्षात्रधर्म को त्याग कर सन्यास ले लिया, किन्तु सम्मान की तृष्णा फिर भी नहीं गयी।

विश्वामित्र- (सक्रोध)-मेरी तृष्णा से तुझे क्या लेना-देना है? मातलि! अपनी जिह्वा में गाँठ लगाओ। अपनी मृत्यु को अपने ही कर्मों द्वारा आमंत्रित मत करो।

मातलि- (दृढ़ता पूर्वक)-महर्षि! अधिक उत्तेजित मत होओ। आपा के बाहर न जाओ; अन्यथा.......।

विश्वामित्र- (अमर्ष सहित)-अन्यथा, तुम क्या कर लोगे? (घूरते हुए) क्या तुम अब मेरी हत्या करोगे.........?

मातलि- मैं......? मैं क्यों आपकी हत्या करूँ? आप तो स्वयं मर चुके हैं। मरे हुए की हत्या नहीं की जाती-उसका अन्तिम कर्म किया जाता है। और वह आपके परिवार वाले ही करेंगे। (विश्वामित्र क्रोध पूर्वक शाप देने के लिये हाथ उठाते है। सहसा राम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आगमन। राम द्वारा विश्वामित्र को शाप देने से रोकना)

राम- नहीं ऋषिवर! नहीं। देवराज इन्द्र के सारथी और मेरे दरबार में आये अतिथि को शाप देना ठीक नहीं।

(विश्वामित्र का शाप देने को उद्यत हाथ रुक जाता है)

(राम राजसिंहासन पर आसीन होते हैं)

विश्वामित्र- राघवेन्द्र! इसे दण्ड दिये बिना मैं नहीं रहूँगा। यह मेरा अपराधी है।

राम- शान्ति, महर्षि! शान्ति। राम के रहते आपको यह कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा।

विश्वामित्र- (रोष पूर्वक)-इसने मेरा अपमान किया है। यह दण्ड का ही पात्र है।

राम- मातलि! महर्षि विश्वामित्र हमारे गुरु हैं और आज की सभा के सभापति भी हैं। आपको महर्षि का अपमान नहीं करना चाहिये था।

मातलि- (हाथ जोड़कर)-हे अयोध्या नरेश! मेरी दृष्टि में विश्वामित्र ऐसे सम्मानों के पात्र नहीं हैं। ऐसा मानव जो अपना धर्म, कर्म और जाति को त्याग कर दूसरा धर्म चलाने की चेष्टा करे, वह आदर का नहीं-निरादर का पात्र है, सम्मान का अधिकारी नहीं।

राम- परन्तु, ये हमारे पूज्य हैं।

मातलि- स्वामी! ये क्षत्रिय हैं। क्षत्रिय का धर्म देश तथा समाज की रक्षा करना होता है। ये आपके पूज्य हो सकते हैं, मेरे नहीं। आप इनकी पूजा करें; किन्तु मैं नहीं करूँगा। ये मेरे लिये पूजा के पात्र नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वामित्र- देखो, राघवेन्द्र! यह तुम्हारे समक्ष भी छोटे मुँह बड़ी बात कर रहा है।

मातलि- (अँकड़ते हुए)-तो मैं भी तुमसे नहीं डरता हूँ। यह बात भली-भाँति सुन और समझ लो।

(जाने को उद्यत होता है।)

राम- ठहरो-मातलि! ठहरो। अब तुम मेरी भी प्रतिज्ञा सुनते और समझते जाओ।

(मातलि का रुक जाना)

राम- मुझे अपनी मर्यादा की सौगन्ध है कि तुमसे महर्षि के अपमान का बदला चुकाऊँगा। मैं आज सूर्यास्त के पूर्व तुम्हारा वध कर दूँगा।

"रघुकुल की है रीति-जिसे रघुवंशी सदा निभाते हैं।
नहीं वचन को जाने देते-प्राण भले ही जाते हैं।।"

राम- हमारे पूर्वजों-महाराज शिबि, हरिश्चन्द्र और पूजनीय पिता दशरथ ने भी प्रण निभाते हुए अपने प्राण त्याग दिये हैं। जाओ-मातलि! जाओ। मै भी देखता हूँ कि कौन तुम्हें बचाता है?

(मातलि का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : पंचम

(परदा खुलता है)

(नारद का वीणा लिये हुए आना)

नारद- (स्वगत)-नारायण!..... नारायण!! अब लीलाधारी की लीला देखने में भरपूर आनन्द मिलेगा। आज भरी सभा में मातलि ने विश्वामित्र को अपमानित करने में कोई कमी न की। उसे जितना समझाया था, उससे भी अधिक सुन्दर ढंग से अपमानित किया।

(मातलि का प्रवेश)

नारद- (सामने देखकर-स्वगत)-अरे, यह तो वही मातलि है, जो अपनी मृत्यु को जानकर इधर-उधर भागा फिर रहा है। (मातलि से-प्रकट)-आओ-आओ मातलि! तुम इतने घबड़ाये हुये क्यों हो?

मातलि- (निकट आकर, हाथ जोड़े हुए)-स्वामी! आपने यह क्या कर डाला कि मुझे ही बलि का बकरा बना दिया। मैं आपको ऐसा नहीं जानता था।

नारद- नारायण! नारायण!! मातलि, तुम क्षत्रिय हो, इस प्रकार मृत्यु से नहीं डरना चाहिये।.......क्षत्रिय तो मृत्यु से खेलते हैं मातलि!

मातलि- (व्यंग्य पूर्वक)-हाँ-हाँ, आपको क्या लेना-देना है? आप तो दूसरों में झगड़ा लगाकर तमाशा देखने वालों में सर्वोपरि हैं। यह बात तीनों लोक जानते हैं।

नारद- नहीं, मातलि! नहीं। तुम चिन्ता मत करो। मुझे तुमसे पूरी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहानुभूति है।

मातलि- (भय मिश्रित रोष पूर्वक)- क्या कहा? मैं चिन्ता ही न करूँ? आज सूर्यास्त तक मैं यमलोक पहुँचा दिया जाऊँगा और मैं ही चिन्ता न करूँ। देवर्षि! भगवान राम ने स्वयं प्रतिज्ञा की है। अब संसार में मेरी रक्षा करने वाला कोई नहीं दीखता है। इस समय मेरे सामने मेरी मृत्यु मुँह खोले खड़ी है और मैं ही चिन्ता न करूँ? आप यह क्या कह रहे हैं देवर्षि! यही आपकी मेरे प्रति सहानुभूति है?

नारद- मातलि! यह समय चिन्ता करने का नहीं है बल्कि कोई युक्ति निकालने का है।

मातलि- (आश्चर्य पूर्वक)-तो क्या अभी मेरे जीवित रहने की कोई युक्ति शेष है?

नारद- हाँ-हाँ, वह अमोघ युक्ति है, और उस युक्ति के रहते भगवान राम तुम्हें मार नहीं सकते हैं। समझे मातलि!

मातलि- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! मैं तो हताश हो चुका हूँ। आपने ही मुझसे मेरी मृत्यु को निमन्त्रण दिलवाया है। इसलिये अब आप ही मुझे बचाने की युक्ति निकालिये। (अधीर होकर) अब समय कम है स्वामी!

नारद- तो सुनो-तुम सीधे स्वर्णगिरि पर चले जाओ। वहीं महाबली हनुमान जी की माता अंजना रहती हैं। तुम्हारी रक्षा माता अंजना ही स्वयं कर सकती हैं या अपने पुत्र महावीर हनुमान से कहकर तुम्हारी रक्षा करा देंगी-समझे?

मातलि- महाराज! मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि वे राम के विरोध में मेरा साथ देंगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद- यह सब तुम्हारे वचन-कौशल पर ही निर्भर करता है। यदि तुम माता अंजना से अनुनय-विनय करके अपनी रक्षा की प्रतिज्ञा करा लोगे तो तुम्हारी रक्षा सुनिश्चित है। इसमें कोई संदेह नहीं, समझे?

मातलि- (हाथ जोड़कर)- अच्छा स्वामी! अब मैं माता अंजना के ही पास जाता हूँ।

नारद- नारायण!....... नारायण!! मातलि! इतना ध्यान रखना-उनसे पहले अपनी रक्षा की प्रतिज्ञा करा लेना। इसके बाद उन्हें बताना कि-भगवान राम ही मेरा बध करना चाहते हैं। चतुरता से काम लोगे, तो निश्चय ही तुम्हारी रक्षा हो जायगी।

मातलि- (हाथ जोड़कर)-अच्छा स्वामी! अब समय कम है। मुझे माता अंजना की ही शरण में जाने दीजिये। बिलम्ब करने से कल्याण नहीं।

नारद- नारायण! नारायण!! जाओ, मातलि! – ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

(मातलि का नारद को शिर झुकाकर प्रस्थान)

नारद- (हँसकर)-अब लीलानायक की लीला देखने में मजा आयेगा। नारायण! नारायण!! (प्रस्थान)

[यवनिका-पतन]

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षष्ठ

(परदा खुलता है)

(स्थान-स्वर्णगिरि पर्वत)

(माता अंजना पूजा कर रही हैं। मातलि आकर चरणों में शिर झुकाता है)

मातलि- (शीश झुकाकर प्रणाम पूर्वक)-रक्षा करो माँ!......माता! मेरी रक्षा करो। मेरे प्राण संकट में हैं। मुझे बचा लो माँ!

अंजना- (मातलि को देखकर)-कौन हो तुम? यहाँ क्यों आना हुआ? मुझसे क्या चाहते हो?

मातलि- माता जी! मुझे बचा लो। (रोने लगता है) मैं मातलि हूँ। .... मेरी रक्षा करो माँ!

अंजना- (मातलि के शिर पर हाथ रखकर)-बेटा, चिन्ता मत करो। जो बात हो-बताओ।

मातलि- (अधीरता पूर्वक)-माता! मेरा कोई नहीं है। विपत्ति का मारा आपकी शरण में आया हूँ माँ! मुझे शरण दो-मेरी रक्षा करो माता!

अंजना- अरे, कुछ कहोगे भी?

मातलि- माँ! मृत्यु मेरा पीछा कर रही है। उसके पंजे से आप ही बचा सकती हैं माँ!

अंजना- तुम घबड़ाओ नहीं। यदि मैं नहीं बचा सकी तो अपने महाबली पुत्र हनुमान से तेरी रक्षा अवश्य कराऊँगी। कौन है वह निर्दयी? जो तुझे मार डालना चाहता है। सब यथासत्य बताओ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातलि- (अधीरता पूर्वक हाथ जोड़कर)-माँ! मेरी विपत्ति हनुमान से भी दूर नहीं हो पायेगी।

अंजना- तो इससे क्या हुआ। मैं तेरा कष्ट भगवान राम से दूर करा दूँगी। (हाथ में जल लेकर) मुझे हनुमान की सौगन्ध है-यदि मैं तेरी रक्षा न करूँ।

मातलि- (प्रसन्न होकर)-माँ! क्या यह सत्य है कि आप मेरा कष्ट श्रीराम से दूर करा देंगी।

अंजना- हाँ-हाँ-यह आर्यनारी का वचन है। वत्स! आर्यनारी अपनी प्रतिज्ञा के पीछे मिटना जानती है। उसे अपने प्रणकी मर्यादा रखनी आती है, फिर तुम्हारा कष्ट तो क्षण भर में मिटाया जा सकता है।

मातलि- माँ! विश्वास नहीं जमता। कैसे कहूँ?

अंजना- सूर्य पूर्व के स्थान पर चाहे पश्चिम में निकलने लगे। नदियाँ चाहे अपनी धारा उल्टी बहाने लगें; किन्तु आर्यनारी का दिया हुआ वचन कभी मिथ्या नहीं होता है। तुम चिन्ता मत करो। अपना कष्ट मुझको बता दो-मत छिपाओ। तुम निःसंकोच सारी बात बताओ। मैं तुम्हारी माँ हूँ। अपने पुत्र की रक्षा करना माता का कर्तव्य है।

मातलि- मातेश्वरी! आज प्रातः श्रीरामचन्द्र जी ने सूर्यास्त के पहले मुझे मार डालने की सौगन्ध ली है।......और आपने मुझे बचाने की प्रतिज्ञा.......।

अंजना- (क्रोध पूर्वक)-चुप कपटी। तूने यह क्या कर डाला?

मातलि- (हाथ जोड़कर)-किन्तु माँ! आपने तो मुझे बचाने का वचन दिया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजना- (क्रोध पूर्वक)-अरे, सिंह की खाल ओढ़ने वाले भेड़िये? तूने धोखा दिया, मेरे साथ छल किया है। यदि मुझको यह पहले ज्ञात हो जाता तो मैं तुझको बचाने का वचन कदापि न देती। चल......दूर हो जा मेरी आँखों से कपटी....... अधम.....धूर्त।

मातलि- (हाथ जोड़कर)-माँ! मैने कोई छल-कपट नहीं किया है। मैंने पहले ही आप से कहा था कि मेरे ऊपर भारी संकट है और आप मेरी रक्षा न कर सकेंगी।......यदि आप नहीं चाहतीं, तो मैं चला जाता हूँ।

(जाने को उद्यत होता है)

अंजना- (आश्वस्त करने की मुद्रा में)- ठहरो मातलि! अब मैं तुम्हें वचन दे चुकी हूँ। मुझे अपने हृदय पर पत्थर रखकर तुम्हारी रक्षा करनी ही होगी,.... अब मुझे अपने वचन का निर्वाह करना ही होगा।

मातलि- माँ! मेरे कारण इतनी व्याकुल न हों। यदि श्रीराम के हाथों मेरी मृत्यु निश्चित है, तो मुझे मर जाने दें माँ! आप धर्मसंकट में न पड़ें।

अंजना- नहीं-मातलि! नहीं। इस प्रकार कहकर तुम मुझे अपमानित मत करो।......मुझे तेरी रक्षा करनी ही होगी। तू सामने (हाथ की अंगुली से संकेत करते हुए) की बाटिका में बैठ। मैं तेरी रक्षा का उपाय करती हूँ। (ध्यान लगाने का उपक्रम करती है। मातलि जाकर बाटिका में बैठ जाता है)

(कुछ क्षणों तक नीरवता, सहसा हनुमान का आगमन)

हनुमान- (हाथ जोड़े हुए शिर झुकाकर)-माता श्री! प्रणाम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजना- (आँखे खोलकर हनुमान को देखते ही)-चिरंजीव पुत्र!

हनुमान- (साश्चर्य)-माँ! आज अयोध्या में हर्ष का सागर हिलोरें ले रहा है और आप यहाँ अकेली बैठी क्या कर रही हैं?

अंजना- (चुप रहती है)-

हनुमान- माँ! आप बोलती क्यों नहीं? आपको क्या हो गया है माँ!. ......क्या मुझसे कोई अपराध हो गया है?

अंजना- नहीं-बेटा, नहीं। ऐसी कोई बात नही है और न मैं तुमसे रुष्ट ही हूँ।

हनुमान- तब क्या बात है माँ! आज आप में यह उदासी कहाँ से आ गयी?

अंजना- मेरी उदासी का कारण मुझसे मत पूछो मेरे लाल! मैं विकट असमंजस में पड़ी हूँ।

हनुमान- (उत्तेजित होकर)-नहीं-माँ! नहीं। आपको बताना ही होगा। हनुमान अभी जीवित है। यदि हनुमान से कोई भूल हुई है तो आपको बताना ही होगा या फिर आज किसी ने आपको अपमानित करने का दुःसाहस तो नहीं किया? आप मुझे स्पष्ट बतायें।

अंजना- नहीं-बेटा! नहीं, वह बात नहीं है।

हनुमान- फिर क्या हुआ है माँ!......आपका चेहरा आज मुरझाया हुआ क्यों है माँ!

अंजना- ''है विपत्ति आकर पड़ी मुझ पर मेरे लाल!
आज धर्म-संकट मुझे घेरे है विकराल।।''

हनुमान- (अधीरता पूर्वक)-माँ! मुझे आप बतायें तो सही। मैं उसका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवारण करूँगा।

अंजना- पुत्र मैं जानती हूँ कि तुम उस धर्म-संकट से बचा नहीं सकोगे।

हनुमान- क्यों नहीं माँ? यदि मैं (हाथ से अपनी ओर संकेत) नहीं बचा सका, तो अपने स्वामी भगवान श्रीराम से कहकर आपको उस धर्म-संकट से बचा लूँगा। माँ! आप तनिक भी चिन्ता न करें।

अंजना- मुझे धर्म संकट से बचाने का वचन देने के पहले भली-भाँति सोच-समझ लो हनुमान!

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-माँ! मैंने आपकी कोख से जन्म लिया है। प्रण करके या वचन देकर मुकर जाना-न तो मैंने जाना है और न सीखा है।

अंजना- तो सुनो पुत्र! मेरी विपत्ति का कारण भगवान राम की वह सौगन्ध है-जो उन्होंने सूर्यास्त के पूर्व मातलि को मार डालने की खायी है।

हनुमान- हाँ-हाँ-भगवान ने सौगन्ध खायी है; किन्तु आप उसमें कहाँ से आ गयीं?........इस विपत्ति में आप कैसे फँस गयीं?

अंजना- हाँ, मैं फँस गयी हूँ या यों समझो कि बीच में आ गयी हूँ। मैं मातलि को प्राण-रक्षा का वचन दे चुकी हूँ।

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-अरे माता जी! आप यह क्या कह रही हैं?

अंजना- हाँ पुत्र! मैं अपने जीते-जी मातलि का वध होता नहीं देख सकूँगी।

हनुमान- माँ! वचन देने के पहले आप कुछ सोच तो लेतीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजना- बेटा! शुभ कर्म में बिलम्ब नहीं करना चाहिये। मातलि अब तुम्हारा छोटा भाई है। उसकी रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है।

हनुमान- मातेश्वरी! आपकी तनिक-सी भूल के कारण आज अनर्थ हो-जायगा। श्रीराम के सेवक को अपने ही स्वामी से टकराना होगा। माँ! मैं आपके वचन की मर्यादा रखूँगा-अपने जीते-जी मातलि का वध नहीं करने दूँगा।

अंजना- हाँ पुत्र! माता के वचन की लाज रखना पुत्र का परम कर्तव्य होता है।

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-माँ! मैं मातलि को लेकर सरयू के तट पर जाता हूँ। कहाँ है वह? मैं अपनी शक्ति के अनुसार उसकी रक्षा करूँगा।

अंजना- (अँगुली से संकेत करते हुए)-वह वहाँ बाटिका में बैठा है।

हनुमान- अच्छा माँ! चलता हूँ।

(हाथ जोड़कर अंजना को प्रणाम करते हुए)

हनुमान- माता श्री! प्रणाम।

अंजना- पुत्र! चिरंजीव। भगवान तुम्हारा कल्याण करें। तुम्हारा वचन सिद्ध हो।

(मातलि को लेकर हनुमान का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तम

(परदा खुलता है)

(स्थान-अयोध्या में सरयू-तट)

(हनुमान तथा मातलि आते हुए)

हनुमान- देखो मातलि! तुम मेरे पीछे-पीछे लगे रहना। मन-ही-मन भगवान राम का नाम लेते रहना। मैं जीवित रहते राम-भरोसे तुम्हारी रक्षा करता रहूँगा।

मातलि- (हाथ जोड़कर)-नाथ! जैसी आज्ञा।

(मातलि का हनुमान के पीछे हो जाना)

हनुमान- (स्वगत)-आज मेरे प्रभु, मेरे आराध्यदेव ने मातलि को सूर्यास्त के पहले मार डालने की सौगन्ध ली है। मैंने भी अपनी माता अंजना के अनुरोध पर मातलि को बचा लेने की शपथ ली है। देखूँ-आज स्वामी और सेवक की लड़ाई में विजयश्री किसको वरण करती है।

(दूसरी ओर से राम का धनुष-बाण लिये हुए आना)

राम- (हनुमान की बात सुनकर)-विजयश्री मुझको मिलेगी महावीर हनुमान! मैं तुम्हें सचेत करता हूँ कि तुम बीच में न आओ। अनाहूत दूसरे की लड़ाई में हाथ मत डालो।

हनुमान- (मुस्करा कर)-स्वामी! हाथ तो डाल चुका हूँ और उसमें मेरा हाथ तब-तक रहेगा जब-तक आपके प्रण का समय बीत नहीं जाता।

राम- हनुमान! तुम इतने दिनों तक मेरे साथ रहे, तो क्या तुम अपने को पहचान सके कि-तुम कौन हो?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- स्वामी! शरीर से तो मैं आपका दास हूँ, आत्मा से मैं आपका अंश हूँ। वैसे जो आप हैं-वही मैं भी हूँ। यह मेरा पूर्ण विश्वास है।

राम- (दृढ़ता पूर्वक)-हनुमान! इस समय तुम मेरे सामने मत आओ। अब मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी ही करूँगा।

हनुमान- स्वामी! यह हनुमान (हाथ से अपनी ओर संकेत) भी आज वचनबद्ध है और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में अनर्थ के लिये तैयार है।

राम- अच्छा तो हनुमान, यदि तुम्हारा यही विचार है, तो मुझे भी स्वीकार है। आओ-अब युद्ध के लिये तैयार हो जाओ।

(राम का तूणीर से बाण निकालना, हनुमान का गदा सँभालना)

(सहसा लक्ष्मण का आगमन)

लक्ष्मण- (सामने देखकर)-ठहरो-भैया! ठहरो। अपने ही ऊपर अपना अस्त्र मत चलाओ। इस युद्ध से बाज आओ।

राम- कौन? तुम-लक्ष्मण? (साश्चर्य देखकर)-लक्ष्मण! इस समय तुम मेरे सामने मत आओ।

लक्ष्मण- (हाथ जोड़कर)-नहीं-स्वामी! नहीं। इतना बड़ा अनर्थ न करें। महावीर जी ने हम लोगों के साथ कितने उपकार किये है-जरा इस पर भी कुछ विचार करें।

राम- (आवेश पूर्वक)-यह समय सोचने-विचारने का नहीं है; और अब सोचने को कुछ बचा भी नहीं है। (सूर्य की ओर देखकर) लक्ष्मण! अब तुम सामने से हट जाओ।

लक्ष्मण- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! जब-तक मेरे शरीर में प्राण हैं तब-तक मैं महावीर जी की रक्षा ही करूँगा। मैं हनुमान जी के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपकारों से कभी भी उऋण नहीं हो सकता स्वामी!

राम- तो मुझे भी इस समय प्रतिज्ञा-पालन से कोई नहीं रोक सकता-लक्ष्मण!

(सहसा भरत का आगमन)

भरत- (राम की बात सुनकर)-तो लीजिये पहले हम लोगों को ही मार डालिये। इसके बाद अपनी प्रतिज्ञा भी पूरी कर लीजिये स्वामी!

राम- (साश्चर्य देखकर)-कौन?.......भरत?.......तुम भी आ गये? क्या तुम भी यही चाहते हो कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी न हो? क्या तुम यही चाहते हो कि मेरी तथा मेरे कुल की मर्यादा मिट्टी में मिल जाय?

भरत- (हाथ जोड़कर)-भैया! मैं आपके पैरों पड़ता हूँ कि आप हनुमान से युद्ध न करें। मातलि को क्षमा करें।

राम- भरत! यह केवल राम की प्रतिज्ञा नहीं है। यह राजा राम की प्रतिज्ञा है। यह तो पूरी होनी ही है। इसे पूरा होने से आज कोई रोक नहीं सकता।

(सहसा विश्वामित्र का आगमन)

विश्वामित्र- (आकर)-मैं रोक सकता हूँ-मैं रोक सकता हूँ-मैं...... (मातलि की ओर देखकर) मैं मातलि को क्षमा करता हूँ।

राम- (साश्चर्य)-क्या आप भी हनुमान के पक्ष में हो गये?

विश्वामित्र- भगवान राम! इस समय आपके और मेरे अतिरिक्त सभी हनुमान के प्रेमी हैं। भक्त और भगवान की लड़ाई सुनकर सभी त्रस्त हैं। (मातलि से) आओ-मातलि! आओ-मैं तुम्हें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभयदान देता हूँ।

मातलि- (हनुमान के पीछे ठीक से छिपकर)-किन्तु; मुनिवर! मुझे आप पर विश्वास नहीं हो रहा है क्योंकि आप क्रोधी हैं। हो सकता है कि आपके अभयदान में कोई छल-कपट हो। मैं कैसे विश्वास करुँ।

विश्वामित्र- नहीं-ऐसा नहीं। मातलि! तुम मुझ पर विश्वास करो। मैं प्रभु के समक्ष सौगन्ध खाता हूँ कि आज से क्रोध नहीं करूँगा। (हनुमान से) आओ- महावीर हनुमान! आओ। मेरे ही क्रोध के कारण आज महा अनर्थ हो जाता। सभी कर्मो का भागीदार मैं अकेला हूँ। मेरे क्रोध के कारण आप लोगों को इतना कष्ट उठाना पड़ा। इसके लिये मैं सभी से क्षमा चाहता हूँ।

मातलि- नहीं-नहीं। मैं सभी से क्षमा माँग लेता हूँ (हाथ जोड़ता है)

विश्वामित्र- अच्छा, ठीक है। (हनुमान तथा राम से) आइये-अब हम लोग चलें।

(एक ओर से सभी लोगों का प्रस्थान, दूसरी ओर से नारद का प्रवेश)

नारद- नारायण! नारायण!! कहो मातलि! कहो। इस युद्ध में तो तुम्हारी जीत हो गई।

मातलि- (हाथ जोड़कर)-क्षमा करो देवर्षि!-अब तो क्षमा करो। किसी भाँति इस बार जीवित बच गया। अब तो मुझे क्षमा करो।

नारद- नारायण! नारायण!! अरे मातलि! क्षमा की क्या बात है? तुम तो मेरे परम प्रिय हो; फिर बार-बार मुझसे क्षमा करने को क्यों कहते हो?

मातलि- (व्यंग्य पूर्वक)-नहीं देवर्षि!-अब आप अपनी लड़ाई लगाने वाली आदत छोड़ दें। बहुत हो चुका। आपके लपेटे में मैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी आ गया था, अब बस....।

नारद- नारायण! नारायण!! अरे मातलि!-मैंने तो तेरी प्रतिष्ठा बढ़ाई है। उल्टे तू मुझे ही दोष दे रहा है मैंने ही सारी लड़ाई लगाई है!......मैं तो दूध का दूध और पानी का पानी करता हूँ।

मातलि- वाह, महाराज! वाह! यह तो खूब कहा, कि आप दूध और पानी अलग करते हैं किन्तु आपके इस कार्य से दूसरे की तो जान के लाले पड़ने लगते हैं।

नारद- मातलि! तुम इसकी चिन्ता मत करो। यह लीला भी लीला नायक श्रीराम की ही रचाई थी।

मातलि- परन्तु यह झगड़ा तो आप ही ने लगाया था। भला इसमें श्रीरामचन्द्र ने क्या किया? जो आप उन पर इस प्रकार दोष मढ़ते हैं।

नारद- नहीं-मातलि! ऐसा नहीं। विश्वामित्र को घमण्ड था कि लोग उनसे डरते हैं। उनके शाप और क्रोध के भय से लोग काँप उठते हैं। अतः उनके इस घमण्ड को चूर करने के लिये यह लीला की गई है। इसमें न तो तेरा दोष है और न मेरा ही कुछ दोष है। नारायण! नारायण!! अब चलें और देखें। आगे प्रभु की क्या लीला होती है-'हरि इच्छा बलवान' नारायण!......नारायण!!

(दोनों का प्रस्थान)

(यवनिका-पतन)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : अष्टम

(परदा खुलता है)

(स्थान-राजभवन का अन्तर्भाग)

(राम तथा जानकी बैठे परस्पर वार्ता कर रहे हैं)

राम- प्रिये सीते! हनुमान जैसा परम भक्त त्रैलोक में दुर्लभ है।

सीता- हाँ स्वामी! निःसन्देह हनुमान जैसा भक्त होना दुर्लभ है। हनुमान को एक क्षण भी आप से दूर रहना असह्य होता है। आपको किस वस्तु की, कब आवश्यकता पड़ेगी, वह पहले ही समझ जाते हैं।

राम- नहीं-प्रिये! नहीं। हनुमान केवल समझ ही नहीं लेते बल्कि मेरे कहने के पहले ही उसे मेरे सामने प्रस्तुत कर देते हैं।

सीता- इससे तो यह प्रतीत होता है कि हनुमान आपकी ही सुख-सुविधा का चिन्तन किया करते हैं।

राम- (उठते हुए) हाँ! इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि पवनपुत्र हनुमान का सारा समय मेरी ही भक्ति और चिन्तन में बीतता है। (कुछ सोचकर) अच्छा, प्रिये! मुझे कुछ आवश्यक कार्य से बाहर जाना है।

(एक ओर से राम का प्रस्थान, दूसरी ओर से भरत का आना)

भरत- (शिर झुकाकर हाथ जोड़े हुए) माता के चरणों में प्रणाम।

सीता- प्रसन्न रहो। कहो भरत! सब कुशल है न?

भरत- (आसन पर बैठते हुए) माँ! जहाँ आप हैं, वहाँ सब प्रकार से कुशल है, किन्तु.............।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता- किन्तु क्या? भरत! कहो-क्या कहना चाहते हो?

भरत- (हाथ जोड़कर) माँ! आखिर यह कब तक चलता रहेगा कि हम लोग बैठें ही रहें और हनुमान ही प्रभु की सम्पूर्ण सेवा कर डालें।

सीता- हाँ भरत, तुम यह ठीक कहते हो कि हनुमान ही प्रभु की सारी सेवायें अकेले ही कर डालते हैं।

भरत- माँ! हम लोगों को भी प्रभु की सेवा का सुअवसर मिलना चाहिये।

सीता- (गंभीर होकर) भरत! सेवा का अवसर सेवक स्वयं जानते हैं और समयानुसार उसे करते ही रहते हैं। इस सम्बन्ध में भला मैं क्या कर सकती हूँ?

भरत- माँ! आप सब कुछ कर सकती हैं। यदि आप नियमानुसार सेवा का विभाजन कर दें तो मुझको, भैया लक्ष्मण और शत्रुघ्न को भी सेवा करने का अवसर मिल सकता है।

सीता- भरत! यदि आप लोगों की यही राय है तो प्रभु की सेवा और समय की सूची बना डालें।

भरत- हाँ माँ! यही राय भैया लक्ष्मण की भी है कि सभी को समयानुसार प्रभु की सेवा का अवसर मिलना चाहिये।

सीता- तो जाओ-सब लोग मिलकर सेवा की सूची बना डालो। कब, कौन प्रभु की क्या सेवा करे-यह भी परस्पर निश्चित करके लिख डालो।

भरत- (प्रसन्न होकर) हाँ माँ! हम लोगों ने प्रभु की सेवा की एक सूची पहले से ही बना ली है। यह देखिये- (सूची देता है)

सीता- (सूची लेकर) सभी लोगों से समझकर यह सूची बनाई हैं?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत- हाँ माँ! भैया लक्ष्मण और शत्रुघ्न इस सूची से पूर्ण संतुष्ट हैं।

सीता- तो ठीक है-आप लोगों को इसी सूची के अनुसार सेवा करने की अनुमति दी जाती है।

(हनुमान का प्रवेश)

हनुमान- (हाथ जोड़कर) मातेश्वरी! प्रणाम। माता जी! कौन-सी सूची को आज्ञा प्रदान की गई हैं? यदि मेरे जानने योग्य हो, तो कृपया मुझे भी बता दें।

सीता- हाँ-हाँ-पुत्र हनुमान! तुम संगत समय पर आये हो। प्रभु के सेवा-काल का बँटवारा किया गया है। आज से लोग इसी के अनुसार प्रभु की सेवा करेंगे।

भरत- इस नियमावली के विपरीत कोई भी सेवा का अधिकारी नहीं है।

हनुमान- (आश्चर्य पूर्वक) सूची और नियमावली? और वह भी प्रभु की सेवा की सूची? लाइये-मुझे भी यह सूची। (हाथ बढ़ाना) मैं भी देखूँ कि मुझे कौन-सी सेवा करनी है!

भरत- (सूची देकर) यह लो-और इसे पूरी पढ़कर भली-भाँति समझ लो।

हनुमान- (सूची पढ़ते हुए) प्रभु की इतनी सेवायें भरत जी करेंगे, इतनी सेवायें लक्ष्मण जी करेंगे और········ इतनी सेवायें शत्रुघ्न जी करेंगे। (सूची उलट-पलट कर देखना)-(आश्चर्य पूर्वक) अरे, इस सूची में तो कहीं मेरा नाम ही नहीं है। इस सूची में मुझे तो प्रभु की कोई भी सेवा नहीं दी गई है।

सीता- क्यों भरत जी! क्या इस सूची में हनुमान जी का नाम ही नहीं है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत- माँ! अब प्रभु की कोई भी सेवा शेष नहीं है, जो हनुमान जी को दी जाय। अब-तक आप ही प्रभु की सारी सेवा करते आ रहे हैं। अब हम लोग प्रभु की सेवा करेंगे।

हनुमान- नहीं-यह त्रिकाल में भी नहीं हो सकता। मुझे भी प्रभु की सेवा का अवसर मिलना चाहिए। माँ! आपके रहते यह सूची अन्याय पूर्ण है। मैं तो प्रभु की सेवा करूँगा।

भरत- हनुमान जी! सारी सेवायें अलग-अलग हम लोगों में बँट गयी हैं और माता जी की स्वीकृति भी हो चुकी है।

हनुमान- यदि माता जी की अनुमति हो गई है, तो ठीक है। परन्तु; इस सूची से बची हुई सेवा ही मुझे करने की अनुमति दी जाय।

भरत- प्रातः काल प्रभु के जागरण से लेकर रात्रि में उनके विश्राम तक की सारी सेवायें दी जा चुकी हैं। हनुमान! अब कुछ भी शेष नहीं है।

हनुमान- (हाथ जोड़कर) माँ! इस सूची में मेरा नाम नहीं है, और न मुझे प्रभु की सेवा का अवसर ही दिया गया है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे भी सेवा करने की अनुमति प्रदान करें। मैं तो प्रभु की वही सेवा करूँगा जो इस सूची में नहीं है और न जो इस सूची में दी गयी है।

सीता- अच्छी बात है-इस सूची में बची हुई सेवा तुम करोगे। बताओ-वह कौन-सी सेवा है, जो बची है।

हनुमान- (कुछ सोचकर) माँ! जब प्रभु को जमुहाई आयेगी, तब मैं केवल चुटकी बजाकर ही अपने प्रभु की सेवा किया करूँगा।

भरत- (हँसकर व्यंग्य पूर्वक) धन्य हो महावीर! भला चुटकी बजाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु की सेवा मानी जायेगी?

सीता- ठीक है, हनुमान! तुम्हें भी तुम्हारे कहने के अनुसार सेवा करने की स्वीकृति दी जाती है।

हनुमान- (पैरों पर शिर रखकर) धन्य हैं-माँ। आप धन्य है। मैं यही सेवा करके प्रसन्न रहूँगा।

(भगवान राम का आगमन)

राम- (आश्चर्य पूर्वक) अरे, अभी तक आप लोग विश्राम करने नहीं गये?

भरत- हाँ चलो हनुमान! अब प्रभु के विश्राम का समय हो गया है।.........यहाँ से चलो।

हनुमान- (दृढ़ता-पूर्वक) अब तो मैं यहाँ से कदापि नहीं जाऊँगा। जाने कब-प्रभु को जँभाई आ जाय। मैं अब अपनी सेवा से वंचित नहीं होना चाहता। आप लोगों की सेवा का समय तो प्रभु के केवल विश्राम के पहले तक ही है। इसलिये आप जायें और मैं यहीं रहूँगा।

भरत- नहीं हनुमान! यह असम्भव है। आपको विश्राम-कक्ष से बाहर चलना होगा। केवल माता जी ही यहाँ रह सकती हैं।

हनुमान- भैया भरत! मैं भला बाहर कैसे जा सकता हूँ? मैं बाहर रहूँ और यहाँ प्रभु को जँभाई आ जाय, तो चुटकी कौन बजायेगा?

भरत- चलिये-चलिये, बाहर चलिये। विश्राम के समय आप यहाँ नहीं रह सकते।

हनुमान- (कुछ सोचकर)-तो ठीक है-मैं इस कक्ष के बाहर ही रहूँगा।

भरत- आप चाहे जहाँ रहें, किन्तु आराम के समय अन्दर नहीं रह सकते।

(भरत का प्रस्थान)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (कक्ष से बाहर आकर)-(स्वगत)-मेरे आराध्य देव को कब जँभाई आ जाय-भला मैं बाहर रहकर कैसे जान सकूँगा? और यदि उस समय चुटकी न बजी तो मेरे स्वामी को कष्ट होगा। मैं.......कहीं नहीं जाऊँगा। अब इसी कक्ष के बाहर एकान्त में छिपकर रात भर चुटकी ही बजाऊँगा। (हनुमान का एकान्त में छिपकर बैठना)

(राम का अपने कक्ष में शयन करना। निद्रामग्न राम की ओर देखकर सीता को सोच, राम का मुँह खुल जाना)

सीता- (राम के खुले मुख को देखकर साश्चर्य-स्वगत) अरे, आज स्वामी को यह क्या हो गया है?.......विश्राम करते ही इनका मुख क्यों खुल गया? (हाथ से राम के खुले मुख को बन्द करती हुई) अरे, यह तो बन्द करने पर भी बन्द नहीं हो रहा है। ऐसा क्यों हो गया? (चिन्तित होती हुई)......यह....यह तो अमंगलसूचक है।...... (लगभग चीखती हुई) ......भरत!.... कहाँ हो? आओ देखो स्वामी को क्या हो गया है?

(भरत का सहसा प्रवेश)

भरत- (आश्चर्य पूर्वक) क्या हो गया माँ? क्या हो गया? माँ! क्या हो गया?

सीता- (अधीर होकर)-देखो तो सही-इनका मुँह क्यों खुल गया?

भरत- (साश्चर्य देखते हुए)-अरे, यह क्या हो गया माँ! आज भैया को क्या हो गया?

सीता- मैं तो कुछ नहीं समझ पा रही हूँ भरत! भला मैं क्या बताऊँ?

भरत- माँ! यदि आज्ञा दें, तो अभी गुरुदेव को बुला लाऊँ। संभवतः वे ही इस रहस्य को समझायें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता- वत्स! मैं कहूँ?........ जो उचित समझो-करो। इस समय मेरी बुद्धि काम नहीं कर रही है।

भरत- अच्छा माँ! मैं अभी गुरुदेव को बुला लाता हूँ।

(एक ओर से भरत का प्रस्थान। दूसरी ओर से वशिष्ठ के साथ भरत का आगमन)

वशिष्ठ- (आते हुए)-क्या हुआ? देखूँ। (वशिष्ठ राम को देखते हैं) अच्छी बात है। (कुछ सोचकर) भरत! तुम तो यहीं हो। (सामने की ओर संकेत करते हुए) उधर देखो-लक्ष्मण और शत्रुध्न भी चले आ रहे हैं।

(लक्ष्मण और शत्रुध्न का समीप आगमन)

वशिष्ठ- (चारों ओर एक दृष्टि डालकर)-मुझे यहाँ महावीर हनुमान नहीं दिखाई दे रहे हैं।......आखिर महावीर जी कहाँ हैं?

भरत- प्रभु के विश्राम के पहले तो यहीं थे। परन्तु अब वे जाने कहाँ होंगे?

वशिष्ठ- भरत जी! इस उत्तर से काम नहीं चलेगा। महावीर जी का पता लगाना ही होगा। यदि बजरंगी यहीं कहीं होते तो अब तक अवश्य आ जाते। आओ-पहले हनुमान जी का पता लगायें। सम्भवतः वे ही इस रहस्य को जानते हों?

सभी- (एक साथ)-चलिये गुरुदेव! (सभी का प्रस्थान)

(सीता, भरत, लक्ष्मण, शत्रुध्न, वशिष्ठ का हनुमान को ढूँढ़ना, एकान्त से 'जय श्रीराम! जय जय श्रीराम'! की ध्वनि सुनाई पड़ना, सभी का आवाज की ओर जाना)

वशिष्ठ- (हनुमान को देखकर साश्चर्य)-धन्य हैं पवन कुमार! आप धन्य हैं। आप यहाँ एकान्त में बैठकर रात में चुटकी क्यों बजा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं? यह तो विश्राम का समय है; फिर यहाँ इस प्रकार रात में बैठकर चुटकी बजाने का क्या प्रयोजन?

हनुमान– (चुटकी बजाते हुए)–गुरुदेव! प्रणाम।

वशिष्ठ– प्रसन्न रहो बजरंगी।

हनुमान– गुरुदेव! स्वामी की सेवा में मुझे केवल चुटकी बजाने की ही सेवा मिली है। इसलिये मैं चुटकी बजा कर अपने प्रभु की सेवा कर रहा हूँ।

भरत– परन्तु, आपको, प्रभु के केवल जँभाई आने पर ही चुटकी बजाने की आज्ञा मिली है।

हनुमान– भाई मेरे, जब मुझे बाहर निकाल दिया गया है, तब मैं कैसे जान सकूँगा कि प्रभु को कब जँभाई आ रही है।

वशिष्ठ– इसीलिये आप रात भर यों चुटकी बजा रहे हैं? बस, बस आञ्जनेय! मैं सब कुछ समझ गया। अब कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है। (सीता से) वैदेही! यह सब क्या हो रहा है? भगवान श्री राम के अनन्य भक्त, अभिन्न हृदय हनुमान को सेवा से क्यों वंचित रखा जाता है?

सीता– मैं क्या करूँ गुरुदेव! कुमार भरत, लक्ष्मण तथा कुमार शत्रुघ्न का कहना है कि 'हनुमान जी के कारण हम लोगों को सेवा का अवसर नहीं मिलता है।'

वशिष्ठ– तो फिर क्या हुआ?

सीता– तो फिर, भरत जी की राय से सेवा की सूची बनी। उसमें महावीर हनुमान को केवल जँभाई के समय चुटकी बजाने की ही सेवा मिल पायी है।

वशिष्ठ– बस कीजिये। मैं सब कुछ समझ गया। (हनुमान से) महावीर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी, आप अपना चुटकी बजाना बन्द कर दें।

हनुमान- (चुटकी बजाना बन्द करके)-लीजिये, गुरुदेव!-बन्द कर दिया। (हनुमान का चुटकी बजाना बन्द होते ही राम का मुँह बन्द हो जाना)

वशिष्ठ- (राम के समीप जाकर देखते हुये)-मैने जो सोचा था-सत्य निकला। लीला नायक की ही लीला है।

(सभी से) देखो, मैं आज सभी लोगों को स्पष्ट शब्दों में बता दे रहा हूँ कि सेवा भाव से होती है, समय के निर्धारण से नहीं होती।

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-नहीं गुरुदेव! भाई लोगों ने सेवा की सूची और समय का निर्धारण किया है।

वशिष्ठ- नहीं-ऐसा नहीं हो सकता। मैं इस कुल का पूज्य गुरु हूँ। अतः मैं आज्ञा करता हूँ कि आज से यह सूची निरस्त मानी जायेगी। सभी लोग प्रभु की सेवा भावानुकूल करें। उसमें किसी प्रकार का प्रतिबंध मान्य न होगा।

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-धन्य हैं, गुरुदेव! आप धन्य हैं।

वशिष्ठ- सभी लोग मिलकर एक बार जय-घोष करें-

भक्तप्रवर महावीर हनुमान की जय!

सभी लोग- (एक साध) जय!

हनुमान- गुरु वशिष्ठ और भगवान रघुवीर राम की जय।

सभी लोग- (एक साथ) जय!!

[पटाक्षेप]

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : नवम

(परदा खुलता है)

(समुद्र-तट)

(हनुमान का शिला-खण्ड पर बैठकर पूजा करना, वाल्मीकि का आगमन)

हनुमान- (वाल्मीकि को देखकर उठते हुए)-आइये-आइये महर्षिवर! प्रणाम! (हाथ जोड़ते हैं)

वाल्मीकि- (आशीर्मुद्रा में)-प्रसन्न रहो रामभक्त हनुमान!.......... महावीर जी! आज मैं आप से कुछ निवेदन करने आया हूँ।

हनुमान- (साञ्जलि)-ऋषिवर! आज्ञा प्रदान करें। यह सेवक सेवा के लिये प्रस्तुत है।

वाल्मीकि- महावीर जी! मैने सुना है कि आपने श्रीरामचन्द्र जी की लीला को अपने कर कमलों द्वारा शिलाओं पर लिखा है।

हनुमान- (विनम्रता पूर्वक)-हाँ महर्षि जी! श्रीराघवेन्द्र का चरित लिखा गया है।.......क्या उस श्रीरामचरित से आपको कोई प्रयोजन है?

वाल्मीकि- हाँ, महावीर जी! उसको देखने के लिये मेरे हृदय में बहुत बड़ी लालसा है।

हनुमान- तो ठीक है। आपकी यह इच्छा हनुमान अवश्य पूरी करेगा। ......आइये मेरे साथ मैं आपको प्रभु का चरित दिखला दूँ। आप मेरी पूँछ पर बैठ जायें।

(हनुमान अपनी पूँछ पर वाल्मीकि को बैठाकर ले जाते है और शिला-लेख दिखलाते हैं।)

हनुमान- देखिये महर्षि जी! यह प्रभु का चरित है, जिसे मैंने समय निकाल कर लिपिबद्ध किया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाल्मीकि- (ध्यान से पढ़ते हुए उदास होकर)-(स्वगत)-प्रभु का पावन चरित स्वयं महावीर हनुमान जी के कर-कमलों द्वारा लिखा गया है।.......यह कितना अद्भुत और विचित्र है? (चकित होते हुए) इसके समक्ष मेरा लिखा हुआ प्रभु-चरित कौन पूछेगा?. ....इससे बढ़कर उच्चकोटि का रामचरित अब कभी भी नहीं लिखा जा सकेगा। (हनुमान से प्रकट)-हे महावीर जी! मैं आप से कुछ याचना करना चाह रहा हूँ।

हनुमान- आज्ञा दीजिये महर्षि जी! मैं सेवा के लिये प्रस्तुत हूँ।

वाल्मीकि- (नतमस्तक होकर)-मेरे द्वारा लिखित 'रामायण' का सर्वत्र प्रचार हो गया है; किन्तु अब यशोकामना के कारण मुझे घृणित स्वार्थ अशान्त कर रहा है। आपके इस रामचरित के समक्ष मेरी कृति व्यर्थ सिद्ध हो जायेगी। मैं तो यहीं चाहता हूँ कि आप इस अनुपम रामायण को इसी समय समुद्र में जलमग्न कर दें।

हनुमान- (हँस कर) बस......? इतनी-सी बात के लिये आपको चिन्ता करना उचित नहीं है। मैं अभी आपकी यह अभिलाषा भी पूरी किये देता हूँ। आप चिन्तित न हों।

(हनुमान का सम्पूर्ण शिलाओं को 'जय श्रीराम' कहते हुये समुद्र में प्रवाहित कर देना)

हनुमान- लीजिये-अब इस रामचरित को कभी कोई भी नहीं पढ़ सकेगा।

(वाल्मीकि हाथ जोड़कर शीश झुका लेते है)

वाल्मीकि- (हाथ जोड़े हुए) महावीर जी! मेरी इस घृणित स्वार्थ वृत्ति का संसार निरादर करेगा। मुझसे अनुचित हो गया नाथ!.....मुझे क्षमा करें। मैंने आपके इतने दिनों के परिश्रम और प्रभु राम के दुर्लभ पावन चरित को जलमग्न कराकर बहुत बड़ा पाप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर डाला है। इस अपराध से मेरा उद्धार कैसे होगा स्वामी?

हनुमान- ऋषिवर! आप इसकी चिन्ता न करें। सब कुछ प्रभु की इच्छा से ही होता है। कलिकाल में जब आप पुनः प्रभु का पावन चरित जन भाषा में लिखेंगे। उसी समय मेरा यह व्यर्थ परिश्रम सफल होगा। उस समय आप सभी लोगों के श्रद्धाभाजन होंगे और 'गोस्वामी तुलसीदास' नाम से विश्व विख्यात होंगे।

वाल्मीकि- कलियुग में लोग काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद के चंगुल में होंगे; तो उस समय प्रभु का चरित लिखना कैसे सम्भव होगा?

हनुमान- (आश्वस्त करते हुए)-महर्षि! मैं उस समय आपका सहयोग करूँगा। आप इसकी चिन्ता छोड़ दें।

वाल्मीकि- (प्रसन्न होकर)-स्वामी! आप तो सदैव मृत्युलोक में रहकर धर्म और भक्तों की रक्षा करेंगे न?

हनुमान- हाँ-हाँ, मैं यथा संभव आपको सहायता करता रहूँगा।

वाल्मीकि- महावीर जी! क्या आप कलिकाल में दुष्टों का संहार भी करेंगे।

हनुमान- नहीं-महर्षि! ऐसा नहीं। कलिकाल में पापी पापवन्त से, अधर्मी अधर्मी से ही सुधारे जायेंगे। उस युग में दुष्टों का संहार करने के लिये न तो प्रभु को अवतार लेना पड़ेगा और न मुझे ही किसी का संहार करना पड़ेगा। कलिकाल का अंत कलिकाल का मानव ही स्वयं कर डालेगा।

वाल्मीकि- (शिर झुकाकर)-धन्य हैं-महावीर जी! आप धन्य हैं। (हाथ जोड़कर)-आपकी बारंबार जय हो। स्वामी! जय हो।।

(हनुमान का प्रस्थान)

(शनैः शनैः पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमन्महानाटक

अंक पञ्चम

दृश्य : प्रथम

(नारद का चेतनदास के साथ बात करते हुये आगमन)

नारद- (वीणा के तारों को छेड़कर)-
भज मन नारायण! नारायण!! नारायण!!!
(दो क्षण रुककर)-देखा, बच्चा चेतनदास? प्रभु ने रावण के संहार के साथ और भी कितनी ही लीलायें दिखायीं।

चेतनदास- हाँ स्वामी! खूब लीलायें दिखायीं।

नारद- (अन्य ओर देखते हुए)-धन्य हैं त्रिलोकी नाथ! आप धन्य हैं। धरा के धर्मरक्षक भगवान राम! आप धन्य हैं। (चेतनदास से)-जब तक भगवान राम अंशों सहित अयोध्या में थे, तब-तक इस नारद का (अपनी ओर हाथ से संकेत) समय मृत्युलोक में ही बीत जाता था। परन्तु; अब तो प्रभु के दर्शन के लिये क्षीरसागर जाना पड़ेगा। क्योंकि, प्रभु का दर्शन किये बिना मुझे चैन नहीं मिलता।

चेतनदास- (साश्चर्य)-क्षीरसागर?......महाराज! अब आप प्रभु के दर्शन के लिये क्यों क्षीरसागर जायेंगे?

नारद- इसलिये वत्स! क्योंकि भगवान राम अब अयोध्या-सहित पूरे मृत्युलोक का सम्पूर्ण भार महावीर हनुमान को सौंपकर स्वयं क्षीरसागर-शायी हो गये।

चेतनदास- स्वामी! तो क्या भगवान राम अब मृत्युलोक में नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयेंगे? जो कि आपको क्षीरसागर जाना पड़ेगा।

नारद- हाँ चेतन! अब प्रभु राम रूप में तो नहीं आयेंगे। यदि उन्हें आना पड़ा तो, किसी दूसरे रूप में ही आयेंगे।

चेतनदास- (हाथ जोड़कर)-महाराज! कृपा करके बतायें कि अब भगवान इस लोक में किस रूप में आयेंगे? अब उनकी कौन-सी लीला होगी?

नारद- नारायण! नारायण!! भला इसे कौन बता सकता है? प्रभु की माया को महाप्रभु हनुमान जी के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता है।

चेतनदास- (साश्चर्य) अच्छा!- महावीर हनुमान जानते है?

नारद- हाँ-हाँ, वे सर्व-समर्थ हैं। वे सब कुछ जानते हैं और सब कुछ कर सकते हैं।

चेतनदास- स्वामी जी! क्या महावीर हनुमान महाप्रभु भगवान श्रीराम से भी बड़े हैं?

नारद- नारायण! नारायण!! इसमें बड़े और छोटे का प्रश्न नहीं है। दोनों-एक हैं। केवल-रूप भेद है। दोनों के स्वरूप में कोई भेद या अन्तर नहीं है; किन्तु कुछ लोग इन दोनों में भेद-विवाद कर रहे हैं।

चेतनदास- (कौतूहल पूर्वक)-विवाद........? स्वामी! कौन इस विषय में विवाद कर रहा है?

नारद- (हँस कर)-नारायण! नारायण!! बस, यही गरुड़देव और चक्रदेव; जो भगवान विष्णु, राम तथा कृष्ण के वाहन एवं अंश हैं, वे भेद मानते हैं।

चेतनदास- वे दोनों क्या कहते हैं?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद- नारायण! नारायण!! उन दोनों का कथन है कि-'भगवान विष्णु, राम एवं कृष्ण से महावीर छोटे हैं। (कुछ सोचकर) गरुड़ देव एवं चक्रदेव स्वयं को भी महावीर हनुमान से अधिक शक्तिमान मानते हैं। इन दोनों को इस विषय में बड़ा भ्रम और अहंभाव हो गया है और अहंभाव तो विनाश का मूल है।

चेतनदास- तब तो उन दोनों का सोचना अनुचित है स्वामी!

नारद- नारायण! नारायण!! अरे, अनुचित ही नहीं, निराधार भी है। उन दोनों पर तो अभिमान का अधिकार है और इसी अभिमान के कारण समझो-उनका भी बेड़ा पार है।

चेतनदास- स्वामी! (कुछ सोचकर)-तब तो प्रभु उन दोनों से रुष्ट होंगे?

नारद- अरे, तुम रुष्ट की बात पूछते हो? प्रभु शीघ्र ही इनके अहम्-दुर्ग को ध्वस्त कर देंगे। (सामने की ओर से शनि को आता देखकर)-देखो-सामने देखो-

(चेतनदास सामने की ओर देखता है) शनिदेव आ रहे हैं। ......आजकल इनके भी शिर पर घोर अभिमान का भूत सवार है।

शनि- (निकट आकर हाथ जोड़े हुए)- देवर्षि! प्रणाम। आपका शुभ दर्शन पाकर धन्य हुआ मैं।

नारद- (आशीर्मुद्रा में)- प्रसन्न रहो-शनि देव! प्रसन्न रहो। ......आज तो आप बहुत ही उतावले लग रहे हैं?

शनि- हाँ देवर्षि! आजकल लोग शक्ति को ही महान मानते हैं।

नारद- (हँसकर)-नारायण! नारायण!! (स्वगत)-जो गरुड़ और चक्र का विचार है-उसी पर शनि भी सवार हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रकट)-हाँ-हाँ, यह सत्य ही नहीं-अक्षरशः सत्य है।...... लोग मानते ही नहीं-शक्ति की पूजा भी करते हैं। नारायण! नारायण!! परन्तु शनिदेव! तुम तो सबसे अधिक शक्तिमान हो। तुम्हारे समान शक्तिमान और महान तो कहीं होगा ही नहीं।

शनि- हाँ, देवर्षि! मैं भी यही सोचता हूँ। परन्तु; अधिकांश देव मुझको महान नहीं मानते हैं।

नारद- नारायण! नारायण!! वे क्या कहते हैं?

शनि- वे सभी संपूर्ण सामर्थ्य-संपन्न तो हनुमान को ही मानते हैं।

नारद- नारायण! नारायण!! अब वे सब आपको ही मानेंगे- और खूब मानेंगे। परन्तु; इसके लिये आपको कुछ करना होगा।

शनि- देवर्षि! इसके लिए मुझे जो कुछ भी करना पड़ेगा-मैं कर डालूँगा।

नारद- नारायण! नारायण!! तो इसके लिए तुमको केवल महावीर हनुमान से भिड़ना होगा।

शनि- (घमण्ड पूर्वक)-कौन हनुमान ?........वही-जिसने रावण की लंका जलायी है?

नारद- हाँ-हाँ, वही जिसने लंका को जलाते समय रावण के कारागार से तुम्हें मुक्ति दिलाई है।

शनि- देवर्षि! आप ठीक कहते हैं। अब मैं उस हनुमान से ही युद्ध करूँगा।.....उसको देख लूँगा।

नारद- (हँस कर)-नारायण! नारायण!! शनिदेव! अब आप मेरी बात बिल्कुल ठीक ढंग से समझ गये।.......अपने मार्ग को प्रशस्त करने का सीधा उपाय आप समझ गए। बस इसी के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद से आपके भाग्य का सितारा और अधिक चमकेगा। तब तो क्या कहना है? देवलोक की कौन कहे-आपके सामने त्रैलोक भी झुकेगा, काँपेगा।

शनि- (हाथ जोड़कर)-धन्य हैं, देवर्षि! आप धन्य हैं। (चरणों में गिरकर) अब मैं सीधा महावीर हनुमान के पास ही जाता हूँ। (शिर झुकाता है)

नारद- प्रसन्न रहो शनिदेव! (शनि का प्रस्थान)

चेतनदास- स्वामी! तो क्या शनिदेव महावीर हनुमान से युद्ध करेंगे?

नारद- नारायण! नारायण!! अभिमान में जीव कुछ भी कर सकता है। जो जैसा करेगा-वैसा फल पायेगा। हम तो केवल लीला देखने का ही आनन्द उठायेंगे।..........अच्छा, चलो-अब आगे होने वाली लीला को देखा जाय।

चेतनदास- हाँ महाराज! चलें।

(दोनों का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

(नेपथ्य से)-

''है अभिमान भयंकर जग में दुष्ट गुणों की खान।
जिसके वश में हो करके नर चलता सदा उतान।।''

(स्वर धीरे-धीरे मन्द पड़ता है)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वितीय

(परदा खुलता है)

(स्थान- वाटिका में पूजा-मण्डप)

(बैठे हुये हनुमान का पूजा करना। शनि का आगमन)

शनि- (ललकारता हुआ)-अरे पाखण्डी हनुमान! अपना पाखण्ड छोड़ दे और मेरे साथ युद्ध के लिये तैयार हो जा। इसी में तेरा कल्याण है।

हनुमान- (ध्यानमग्न रहना)

शनि- (हाथ पकड़कर खींचता हुआ)-अरे हनुमान! आज मैं तुमसे युद्ध करूँगा। यह पूजा-ध्यान छोड़कर तुम मेरे साथ युद्ध के लिये तैयार हो जाओ।

हनुमान- (आँखें खोलकर, साश्चर्य)- कौन ?..........शनिदेव आप?

शनि- (गर्व सहित)-हाँ-हाँ, आँखें खोलकर भली-भाँति पहचान लो। मैं शनि देव हूँ। आज तुम्हारे महाबली होने का घमण्ड चकनाचूर कर दूँगा।

हनुमान- नहीं भाई! अब मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ।........मैं तुमसे युद्ध करने योग्य नहीं हूँ....शनिदेव!

शनि- (तमक कर)-तुम चाहे बूढ़े हो या नादान, बालक हो या जवान। मैं तो तुमसे आज युद्ध अवश्य करूँगा।

हनुमान- भाई शनिदेव! मैं युद्ध कदापि स्वीकार नहीं कर सकता।

शनि- (हाथ पकड़ खींचता हुआ)-तुम चाहे स्वीकार करो या न करो। मैं तो युद्ध करने आया हूँ और अवश्य करूँगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(हाथ छोड़ देता है)

हनुमान- (स्वगत)-शनि को घमण्ड हो गया है।.........यह मुझसे युद्ध अवश्य करेगा। (प्रकट)-भाई शनिदेव! मेरी प्रार्थना स्वीकार करो-मैं तुमसे युद्ध करने योग्य नहीं हूँ।

शनि- (रोष प्रकट करता हुआ)-हनुमान! कान खोलकर सुन लो-आज संसार की कोई भी शक्ति इस युद्ध को नहीं रोक सकती।.........मैं आज तुमसे अवश्य युद्ध करूँगा। आज मुझसे युद्ध किये बिना तुम बच नहीं सकते।

हनुमान- अच्छा भाई! अच्छा। यदि तुम नहीं मानते हो, तो मैं क्या कर सकता हूँ? तुम जैसा चाहो-वैसा करो।

(हनुमान का पूँछ बढ़ाना और शनि को पूँछ से जकड़ लेना)

शनि- अरे-अरे, यह क्या? कौन मुझे बाँधता जा रहा है? (पूँछ की ओर देखकर)-अरे पूँछ नहीं, यह तो लोहे की शृंखला से भी अधिक सुदृढ़ है।

(हनुमान का इधर-उधर दौड़ना, शनि का रक्त-रंजित होकर गिरना और कराहना)

शनि- (गिड़गिड़ाता हुआ)-दया, पवनपुत्र! दया करो। मुझे जीवनदान दो।.......क्षमा कर दो नाथ! मैं अपराधी हूँ। मेरे अपराधों को क्षमा करो।

हनुमान- शनिदेव! अब मैं तुम्हें नहीं छोडूँगा। तुम अभिमानी हो, घमण्डी हो। मुझे अभिमान और घमण्ड चूर करने का भार मिला है। मैं इसे चूर कर दूँगा।

शनि- (घबड़ाता हुआ)-नहीं स्वामी! नहीं। मुझसे छोड़ दो। मुझसे बड़ा अपराध हो गया है। अब मैं कभी आपके पास नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आऊँगा। नाथ! मुझे छोड़ दें।

हनुमान- शनिदेव! अब यह संभव नहीं है कि तुम्हें जीवित छोड़ दूँ। तुम्हारा जैसा अभिमानी और स्वार्थी मुझसे ही लड़े और मैं उसे छोड़ दूँ?......मेरे भक्तों को कष्ट देने वाले शनि! अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा-

"क्या समझ आया था लड़ने मुझसे सीना तानकर।
माँगता है अब क्षमा जब आ पड़ी है जान पर"।।

शनि- (पैरों पर गिरता हुआ)नहीं, महावीर जी! नहीं। आप मेरे अपराधों को क्षमा कर दें। भविष्य में मुझसे अब कभी भी ऐसा अपराध नहीं होगा स्वामी!........मैं आपके भक्तों को कदापि कष्ट नहीं दूँगा। मैं यथाशक्ति उनकी सहायता करूँगा। मुझे क्षमा कर दें नाथ!........मुझे छोड़ दें, अन्यथा अब मैं मर जाऊँगा। नाथ! मुझे असह्य पीड़ा हो रही है। अब क्षमा करें महाप्रभु!

(हनुमान का शनि को बन्धन-मुक्त करना)

हनुमान- अच्छा शनिदेव! अब मैं तुमको इस बन्धन से मुक्त करता हूँ। आज तो तुम्हें जीवित ही छोड़ देता हूँ। परन्तु स्मरण रहे-यदि कभी मेरे भक्तों को कष्ट दिया, तो जीवित नहीं रहने दूँगा-समझे?

शनि- (हाथ जोड़ता हुआ)-हाँ, स्वामी! हाँ। भली-भाँति समझ गया। अब कभी ऐसा अपराध नहीं करूँगा। आपके भक्त मेरे भी प्रिय और भक्त होंगे स्वामी! परन्तु आपसे मेरी एक प्रार्थना है।

हनुमान- ठीक है, शनिदेव! बोलो-क्या कहना चाहते हो?

शनि- (हाथ जोड़े हुए)-चोट लगने से मैं बहुत पीड़ित हूँ। उपचार के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कुछ दे दें-तो बड़ी कृपा होगी।

हनुमान- (कटोरी में दीपक से तेल गिराकर देते हुए) लीजिये-शनिदेव! इस कटोरी में तेल है। इसे लगा लीजिये।

शनि- (तेल लगाकर) धन्य हैं महावीर जी! आप धन्य हैं। आपका दिया हुआ तेल मेरे लिये अमृत से भी बढ़कर है। मेरी सारी पीड़ा समाप्त हो गई।

(हनुमान के पैरों पर गिरता है)

हनुमान- प्रसन्न रहो शनिदेव! मेरे द्वारा तुमको कष्ट पहुँचा, इसके लिये मुझे खेद है।

शनि- नहीं-नहीं। आप ऐसा न कहें। आपका दिया हुआ तेल लगाते ही मेरा समस्त कष्ट दूर हो गया। अब मैं प्रसन्न हूँ। मुझे कोई भी कष्ट नहीं है।

हनुमान- मैं भी तुमसे प्रसन्न हूँ शनिदेव! और यह आशीर्वाद देता हूँ कि जो भक्त शनिवार को तुम्हारे निमित्त तेल-दान करेगा, वह सांसारिक कष्टों से मुक्त होगा। और तुम्हारी कोप-दृष्टि उस पर नहीं पड़ेगी।

शनि- (उल्लास पूर्वक हाथ उठाकर) महावीर हनुमान की जय!

(शिर नवाकर प्रस्थान करता है)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : तृतीय

(परदा खुलता है)

(स्थान- मृत्यु लोक के मार्ग पर)

(नारद का चेतनदास के साथ आना)

नारद- नारायण! नारायण!! बच्चा चेतनदास!

चेतनदास- हाँ महाराज!

नारद- देखी-शनि और हनुमान की लड़ाई?

चेतनदास- खूब देखा, महाराज! इस लड़ाई में तो शनिदेव ने ही करारी मात खायी। उनके घोर घमण्ड ने ही उनकी यह दुर्दशा करायी।

नारद- ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है। अब शनिदेव कभी अभिमान का द्वार नहीं देखेंगे। बच्चा चेतन! राम और रावण की लड़ाई का अंक पूर्ण हो गया और इसी के बाद ही शनिदेव का भी अभिमान चूर्ण हो गया। अब वे कदापि हनुमान के सम्मुख शिर नहीं उठा सकेंगे।

चेतनदास- स्वामी! अब आपने और कौन-सी लीला देखने का विचार किया है?

नारद- नारायण! नारायण!! भला यह भी पूछने की बात है? अब तो रामावतार की लीला पूर्ण हो गयी। इसके बाद तो कृष्णावतार का ही अवसर है। यह द्वापर युग का अंतिम चरण बीत रहा है।

चेतनदास- स्वामी! तब तो कृष्णावतार की भी लीला देखने को मिलेगी?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद- क्यों नहीं? क्यों नहीं?? इस अवतार में तो महाभारत की लड़ाई होगी। भगवान कृष्ण की सहायता से महाबली भीम को महाभारत-युद्ध में विजयश्री मिलेगी।

चेतनदास- महाबली भीम क्या सचमुच बहुत बलवान हैं?

नारद- नारायण! नारायण!! इसी का उन्हें भी अभिमान है कि -'मैं ही सबसे अधिक बलवान हूँ', 'मेरे समान बलवान संसार में दूसरा कोई नहीं है'।

चेतनदास- (कौतूहल पूर्वक) अभिमान है?

नारद- हाँ-हाँ, अभिमान है और महाभारत युद्ध से पूर्व ही वह अभिमान चूर्ण हो जायेगा।

चेतनदास- स्वामी! भगवान कृष्ण तो महाबली भीम के सहायक हैं। वे कैसे उनका घमण्ड चूर्ण होने देंगे?

नारद- (हँसते हुए)-नारायण! नारायण!! बच्चा, उसे तो महाबली हनुमान ही चूर्ण कर देंगे। .... अच्छा, अब आओ और प्रभु की लीला चुपचाप देखते चलो।

(दोनों का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

(नेपथ्य से)

''सदा सभी का घोर शत्रु है महादैत्य अभिमान।
चूर्ण करेंगे गर्व भीम का महावीर हनुमान।।''

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्थ

(परदा खुलता है)

(स्थान- वन प्रान्त में नदी का तट)

(भीम द्रौपदी के साथ नदी-तट पर बैठे हैं।)

भीम- प्रिय पांचाली! हम दोनों का यहाँ पर अधिक समय बीत गया है। अब हमें अपने भाई अर्जुन आदि का भी पता लगाना चाहिये। न जाने, इस समय वे लोग कहाँ पर होंगे? मुझे उनकी चिन्ता हो रही है।

द्रौपदी- हाँ स्वामी! मेरी भी यही इच्छा थी कि सभी लोगों का पता लगा लिया जाय।

(तेज हवा के झोंके से एक फूल का उड़ते हुए आकर द्रौपदी के सम्मुख गिरना)

(द्रौपदी फूल को उठाकर देखती है)

द्रौपदी- (स्वगत)-धन्य है यह पुष्प और धन्य है इसकी सुगन्ध। (भीम को पुष्प दिखाती हुई-प्रकट) स्वामी! देखो तो-यह कितना सुन्दर पुष्प है? ऐसा अद्‌भुत पुष्प तो मैंने कभी नहीं देखा है।

भीम- (हाथ में लेकर देखते हुये)-हाँ प्रिये! मैंने भी इतना सुन्दर फूल तो इसके पूर्व कभी नहीं देखा था।.......यह तो बड़ा ही आकर्षक फूल है।

द्रौपदी- (मनुहार पूर्वक) यदि आप मुझसे सच्चा प्रेम करते हैं, तो आप ऐसा ही दूसरा पुष्प लाने की कृपा करें। स्वामी! इस पुष्प ने मेरा मन मोह लिया है।.......यह मुझे अत्यन्त प्रिय है। दूसरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प पाकर ही मेरा मन शान्त होगा।

भीम- प्रिये! मैंने ऐसा पुष्प केवल आज ही देखा है। मैं यह नहीं जानता कि यह किस वन, उपवन या वाटिका का पुष्प है। (कुछ सोचकर)........परन्तु, तुम चिन्ता मत करो। पवन देव इसे अपने झोंके से उड़ा लाये हैं। मैं उन्हीं के प्रवाह के सहारे इस पुष्प के वृक्ष का पता लगाऊँगा और तुम्हारी प्रसन्नता के लिये पुष्प अवश्य लाऊँगा। क्योंकि तुम्हारी प्रसन्नता में ही मेरी प्रसन्नता है।

द्रौपदी- स्वामी! यदि संभव हो, तो आप इसके लिये शीघ्रता करें। सबके पास शीघ्र लौटना भी है।

भीम- (उठते हुए)-हाँ प्रिये! मैं अभी जाता हूँ और इस पुष्प के तरु का पता लगाकर दूसरा पुष्प भी लाता हूँ।

(अन्य ओर मुँह करके-स्वगत) यह पुष्प मुझे देवलोक का ही लगता है। ....अब मैं देवलोक जाकर इसे अवश्य लाऊँगा। मुझे कोई भी रोक नहीं सकता है। (गदा की ओर देखते हुये) महाबली भीम को संसार में कोई भी टोंक नहीं सकता है। .... अच्छा प्रिये! मैं जाता हूँ। तुम यहीं रहो। मैं फूल लेकर शीघ्रमेव आता हूँ।

(भीम का गरजते हुए प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : पंचम

(परदा खुलता है)

(स्थान- सघन वन प्रान्त)

(हनुमान का एक ओर से टहलते हुए आना, दूसरी ओर से भीम का गरजते हुये आना)

हनुमान- (दूर से आती हुई गर्जना को सुनकर-स्वगत)-अरे, यह कौन है? जो घनघोर गर्जन करके दिशाओं को कंपायमान कर रहा है ......। इस क्षेत्र में तो देवों के अतिरिक्त और कोई भी जीव नहीं आ सकता है। परन्तु........यह है कौन? जो कि निर्भयता पूर्वक गरजता हुआ चला आ रहा है? (कुछ देर सोच-समझकर)-अरे, यह तो भीम की गर्जना है। यह तो मेरा छोटा भाई है।........हाँ, समझ में आया। इसे अपनी शक्ति पर गर्व है। गर्व ही जीव के पतन का कारण है।...... मैं इस मार्ग से भीम को नहीं जाने दूँगा।........अब मैं यहीं विश्राम करता हूँ और अपने भाई भीम को भी देखूँगा। भीम का दर्प-दलन आवश्यक है।

(हनुमान का पूँछ फैलाकर मार्ग में लेट जाना, भीम का आगमन)

भीम- (हनुमान को मार्ग अवरुद्ध कर लेटा हुआ देखकर-सरोष)-अरे, यह कौन है, जो कि मेरे मार्ग को रोक कर सोया हुआ है? क्या यह मुझ महाबली भीम को नहीं जानता? (कुछ क्षण रुककर) अरे! कौन हो तुम?

हनुमान- (आँखें खोलकर कुछ देर भीम को देखकर)-भैया, मैं तो पशु और रोगी हूँ। तुम बुद्धिमान मनुष्य हो। मैं यहाँ सुख पूर्वक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो रहा था। तुमने मुझे क्यों जगा दिया? ....यहाँ से आगे देवलोक है। मनुष्य के जाने का मार्ग नहीं है।.........तुम कहाँ जाना चाहते हो? ऐसा प्रतीत हो रहा है, कि तुम भटक गये हो! इस मार्ग पर आगे जाना तुम्हारे लिये शुभ नहीं है।

भीम- (चिढ़कर)-अरे, तुम से रास्ता कौन पूछ रहा है? तुम मेरे मार्ग से हट जाओ-मुझे जाने दो।

हनुमान- देखो भैया, यहाँ के कन्द-मूल-फल अधिक मीठे होते हैं। तुम इन्हें खाकर विश्राम करो और यहाँ से लौट जाओ। आगे मत जाओ।

भीम- (क्रोध पूर्वक)-बूढ़े बन्दर! मैं तुमसे परामर्श लेने नहीं आया हूँ। मैं चन्द्रवंश के अन्तर्गत कुरुवंश में उत्पन्न महाराज पाण्डु का पुत्र भीमसेन हूँ। अब तुम उठकर मेरे रास्ते से हट जाओ।

हनुमान- भीम! मैंने तुमसे पहले ही कह दिया- इधर यहाँ से आगे मनुष्यों के जाने का मार्ग नहीं है। इस मार्ग से जाने पर तुम्हारे प्राण संकट में पड़ जायेंगे।

भीम- (आक्रोश पूर्वक) बस-बस, चुप रह। मेरी चिन्ता छोड़कर सीधे उठ जा।

हनुमान- भैया, मैं तो रोगी हूँ। उठ नहीं सकता हूँ। तुम ही मुझे लाँघ कर चले जाओ।

भीम- (डपटते हुए)-बूढ़े बन्दर! बकवास बन्द कर। मैं जानता हूँ कि परमात्मा सभी जीवों में व्याप्त है। अतः मैं तुम्हें लाँघकर नहीं जा सकता। यदि मुझे लाँघकर ही जाना होता तो तुम क्या हो? इस (पर्वत शिखर की ओर हाथ से संकेत करते हुये)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गगन स्पर्शी पर्वत को भी लाँघ कर चला जाता। जैसे महाबली हनुमान सौ योजन सिन्धु को लाँघ कर लंका गये थे। तुमने भी सुना होगा?

हनुमान- अरे भैया, वह हनुमान कौन था जो सौ योजन सिन्धु को लाँघ गया था?

भीम- (ऐंठते हुये)-वे मेरे भाई हैं।......अब तुम मेरा मार्ग छोड़-कर हट जाओ। तुम यदि अब मेरी बात नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें मृत्युदण्ड दूँगा।

हनुमान- भैया, आप मुझ वृद्ध और रोगी पर क्रोध न करें। मैं उठने में असमर्थ हूँ। कृपा पूर्वक आप ही मेरी पूँछ हटाकर जहाँ जाना चाहते हैं- चले जायें।

भीम- (रोष पूर्वक)-बूढ़े बन्दर!-'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः'। मैं तेरी पूँछ ही नहीं हटाऊँगा, बल्कि तुझे ही उठाकर फेंक दूँगा।

(भीम का हनुमान की पूँछ पकड़कर उठाना, पूँछ का टस से मस न होना)

भीम- (हार कर हाथ जोड़े हुए)-हे कपिश्रेष्ठ! आपं मेरे अपराध क्षमा कर दें। मैं अपने दुर्वचनों के लिए आपसे क्षमा माँगता हूँ। आप इस रूप में कौन हैं? (सविनय) स्वामी! मैं आपकी शरण में हूँ। कृपा पूर्वक मुझे अपना परिचय दीज़िये नाथ!

हनुमान- भीमसेन! सभी मुझे हनुमान कहते हैं। मैं अपने स्वामी के आज्ञापालन में यहाँ रहता हूँ। माता जानकी की कृपा से मुझे यहीं इच्छित भोग भी मिल जाता है। इस मार्ग पर आगे देवगण निवास करते हैं। इधर से आगे किसी भी मनुष्य का जाना संभव नहीं है। तुम जिस पुष्प के लिये जाना चाहते हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका वृक्ष इधर समीप में (हाथ से संकेत) है- चले जाओ।

भीम- (पैरों पर गिरकर) धन्य हैं महावीर जी! आप धन्य हैं। मेरे ज्येष्ठ भ्राता! आप धन्य हैं।

हनुमान- भाई भीम! जब तुम मुझसे मिल ही गये तो तुम मिलने का कुछ लाभ भी तो ले लो। जो चाहो-वर माँग लो।.........भाई भीम! यदि तुम कहो तो मैं दुर्योधन को भाइयों सहित मार डालूँ। या तुम चाहो तो मैं उसे बाँधकर तुम्हारे ही चरणों में डाल दूँ अथवा विशाल पर्वत-खण्ड पटक-पटक कर उसका सम्पूर्ण नगर ही नष्ट कर दूँ। तुम मुझसे कोई वर माँगो।

भीम- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! यदि आपकी कृपा मुझ पर रही, तो शत्रु पराजित ही हो जायेंगे।

हनुमान- भीमसेन, तुम मेरे भाई हो। इसलिए मैं तुम्हारा कुछ-न-कुछ प्रिय अवश्य करुँगा। जब तुम शत्रु की सेना में प्रवेश करके गर्जन करोगे उस समय मैं तुम्हारे सिंहनाद को बढ़ा दूँगा। उस गर्जन को सुनकर तुम्हारा शत्रुदल मृत्यु को प्राप्त होगा। ....अब तुम सुखपूर्वक जाओ और समय-समय पर मुझे याद करते रहना।

भीम- (हनुमान को शिर झुकाकर)-भैया! प्रणाम।

हनुमान- (हाथ उठाकर)-कल्याणमस्तु।

(भीम का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षष्ठ

(परदा खुलता है)

(एक ओर से नारद और दूसरी ओर से चेतनदास का आना)

नारद- (आते हुए)-नारायण! नारायण!! ....बच्चा चेतनदास!

चेतनदास- हाँ महाराज!

नारद- देखो, जिस तरह भक्त भगवान से प्रेम करते हैं, वैसे ही भगवान भी अपने भक्तों का नित्य-निरन्तर ध्यान रखते हैं। वे अपने भक्त को सदैव शुद्ध और पवित्र अन्तःकरण वाला देखना चाहते हैं।............समस्त दुःखों का मूल अभिमान होता है। प्रभु जब अपने भक्तों में अभिमान का अंकुर पाते हैं तो अविलम्ब उसको नष्ट कर डालते हैं। और यही भगवान का करुणाभाव है।

चेतनदास- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! आपका कथन सत्य है। आज-तक मैंने भी यही देखा है।

नारद- चेतनदास! आजकल द्वारकाधीश भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्तों की गर्वहरण लीला प्रारम्भ करने वाले हैं। चलो-प्रभु की यह लीला भी देखी जाय।

चेतनदास- (कौतूहल पूर्वक)-वह कैसे स्वामी? अब तो कोई भी जीव अभिमान करने वाला नहीं रह गया है। तब गर्वहरण-लीला कैसे संभव है?

नारद- यह तो सत्य है। परन्तु धरती कभी भी अभिमानियों से शून्य नहीं होती।

चेतनदास- स्वामी! मुझे भी उन अभिमानियों के नाम बता दें, कि वे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन हैं?

नारद- चेतन! वे पुराने अभिमानी नहीं हैं। वे तो सदैव प्रभु के साथ रहते हैं। प्रभु की कृपा से वे साधारण या असाधारण सभी कार्य सम्पन्न कर डालते हैं।

चेतनदास- (साश्चर्य)-तो उनमें गर्व की कौन-सी बात है? जब वे समस्त कार्य प्रभु की कृपा से ही करते हैं। तब उसमें गर्व करने का क्या कारण है?.....वे हैं कौन?

नारद- वे हैं-गरुड़ और चक्र। जो सदैव प्रभु के साथ ही रहते हैं और प्रभु की कृपा से कार्य सम्पन्न करते हैं और उन्हीं पर आश्रित रहते हैं।

चेतनदास- आखिर वे दोनों अपने को क्या समझते हैं?

नारद- नारायण! नारायण!! यही कि वे सारा कार्य अपनी ही शक्ति से करते हैं।

चेतनदास- यह तो उनकी भयंकर भूल है।

नारद- नारायण! नारायण!! और भूल ही तो दुःखों का मूल है। ....चेतन! आओ मेरे साथ और प्रभु की लीला देखो।

(दोनों का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तम

(परदा खुलता है)

(समुद्र तट पर द्वारिकापुरी)

(भगवान कृष्ण अपने सभासदों के साथ दरबार में बैठे हैं)

प्रधानमंत्री- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! यदि आज्ञा पाऊँ, तो कुछ मनोरंजन का साधन प्रस्तुत करूँ?

कृष्ण- जैसी तुम्हारी इच्छा।

प्रधानमंत्री- (पुकारता है)-प्रहरी!........प्रहरी!!

प्रहरी- (आकर)-आज्ञा श्रीमान्!

प्रधानमंत्री- जाओ- किसी अप्सरा को प्रस्तुत करो।

प्रहरी- (हाथ जोड़कर)-जो आज्ञा स्वामी! (प्रस्थान करता है)

(कुछ देर में दो अप्सराओं का नृत्य करते हुए प्रवेश)

दोनों अप्सरायें- (नाचती हुई गाती हैं)-

''पकड़ प्रेम की डोर- अरे मन! तू चल रे!
चल प्रियतम की ओर अरे मन! तू चल रे!!
    इधर-उधर भटकता न जाने कहाँ-कहाँ,
    ढूँढ़ रहा सुख-सिन्धु अरे, क्यों जहाँ-तहाँ,
जहाँ ज्ञान का भोर-वहीं पर तू चल रे!
चल प्रियतम की ओर-अरे मन! तू चल रे!!
    क्यों रहता दिन-रात घोर अभिमान-भरा,
    प्रियतम का पथ भली-भाँति पहचान जरा,
मद के छूता छोर-नहीं मन! तू चल रे!
चल प्रियतम की ओर-अरे मन! तू चल रे!!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ असत् को, सत् को तू उरहार बना,
खिले सुमन-सा जीवन में व्यवहार बना,
लेता हर्ष-हिलोर- अरे मन! तू चल रे!
पकड़ प्रेम की डोर-अरे मन! तू चल रे!!"

(दोनों नर्तकियाँ कृष्ण को साञ्जलि शिर झुकाकर प्रस्थान करती हैं)

कृष्ण- (स्वगत)-मेरे निजी वाहन गरुड़ को अपनी शक्ति एवं वेग से उड़ने का अभिमान हो गया है......और उधर चक्र का भी अभिमान अपनी सीमा पार कर गया है। समस्त दुःखों का मूल अभिमान है।......मैं अपने भक्तों में अभिमान का अंकुर भी नहीं रहने दूँगा। महावीर हनुमान से दोनों के अभिमान को चूर करा दूँगा। तभी इन दोनों का कल्याण होगा।

(कृष्ण का ध्यान-मग्न होना)

(प्रहरी का प्रवेश)

प्रहरी- (घबड़ाया हुआ हाथ जोड़कर)-अन्नदाता की जय हो।

कृष्ण- कहो प्रहरी! कहो-क्या संवाद लाये हो?

प्रहरी- स्वामी! राज-उद्यान में एक बहुत बड़ा बन्दर आया है।

कृष्ण- क्या?......बन्दर......?

प्रहरी- हाँ स्वामी! बलवान बन्दर है। फलों को खाता है। तोड़कर फेंकता है। शाखाओं को तोड़ रहा है और बड़े-बड़े वृक्षों को उखाड़ दे रहा है। ऐसा बन्दर तो मैंने जीवन में कभी नहीं देखा है।

कृष्ण- तुमने उस बन्दर को क्यों नहीं मार भगाया?
तू मेरे पास क्यों भाग आया?

प्रहरी- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! बन्दर साधारण नहीं, महा बलवान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जो भी उसके पास गया-उसको बलवान बन्दर ने मार भगाया।

कृष्ण- (गंभीर होकर)-ठीक है, प्रहरी! ठीक है। तुम चिन्ता मत करो। इसी समय जाकर गरुड़ और चक्र को मुझसे मिलने की सूचना दो कि वे दोनों अविलम्ब आकर मेरे सम्मुख उपस्थित हों।

प्रहरी- नाथ! जो आज्ञा। (शिर नवाकर प्रस्थान करता है)

कृष्ण- (स्वगत)-आज मैंने महावीर हनुमान का आह्वान किया है। वे ही अपने उचित कार्यक्रमों द्वारा गरुड़ और चक्र का गर्व हरण करेंगे।

(गरुड़ और चक्र का प्रवेश। दोनों श्रीकृष्ण को शिर नवाते हैं)

गरुड़- (उत्साह पूर्वक)-द्वारकाधीश भगवान श्रीकृष्ण की जय हो।

कृष्ण- प्रसन्न रहो गरुड़ देव!

चक्र- (हाथ जोड़कर)-त्रिभुवन पति को प्रणाम।

कृष्ण- सुदर्शन! प्रसन्न रहो।

गरुड़- (साञ्जलि)-स्वामी! आपने हमें स्मरण किया है? हमारे लिये स्वामी की क्या आज्ञा है?

कृष्ण- हाँ, आज आप ही दोनों की आवश्यकता आ पड़ी है।

गरुड़- स्वामी! आज्ञा दीजिये। कौन-सी समस्या आ पड़ी है? जो आप इतना पीड़ित-चिंतित हैं।

चक्र- स्वामी! बस, आज्ञा की देर है। यह सेवक अविलम्ब समस्या का निवारण कर देगा।

गरुड़- हाँ स्वामी! शीघ्र बतायें। हम लोग असम्भव को भी संभव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने वाले है। हमारे लिये तीनों लोकों में कोई भी कार्य असम्भव नहीं है।

चक्र- नाथ! आप तो भली-भाँति जानते हैं कि हम दोनों बुद्धि और बल में निराले हैं। और...... हर कठिन से कठिन कार्य को भी चुटकी बजाते ही कर देने वाले हैं। हम दोनों के समान बलवान-बेगवान कोई नहीं है।

कृष्ण- (मुस्कारते हुए)-यह तो मैं ठीक-ठीक जानता हूँ। इसीलिये आप ही लोगों को बुलाया है। सुना-आज राज-उद्यान में एक बहुत बड़ा बन्दर आया है। उसने पूरे राज-उद्यान को उजाड़ने की चेष्टा की। जो भी उसको रोकने या पकड़ने गया, उसे ही मार गिराया। इसलिये गरुड़ जी? आप स्वयं अपने साथ सेना लेकर जायें और उसको पकड़ कर मेरे सामने लायें। इस कार्य में विलम्ब न करें।

गरुड़- (हाथ जोड़कर)-अरे स्वामी! आप यह क्या कह रहे हैं? बन्दर को तो कोई भी पहलवान पकड़कर ला सकता है। उसके लिये मेरी या सेना की क्या आवश्यकता है? चींटी को पकड़ने के लिये जाल का क्या काम?

कृष्ण- नहीं-गरुड़! नहीं। बन्दर का पकड़ना खेल नहीं है। इसलिये इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये आपको ही भेज रहा हूँ। आप ही समर्थ हैं इसमें।

गरुड़- नाथ! जो आज्ञा। (शिर नवाकर प्रस्थान करता है)

कृष्ण- (चक्र से)-हाँ, चक्रदेव! आप स्वयं राजभवन के मुख्य द्वार पर पहरा देंगे। मेरी आज्ञा के बिना आप किसी को भी अन्दर नहीं आने देंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्र- ठीक है स्वामी! मैं आपकी अनुमति के बिना किसी को भी अंदर नहीं आने दूँगा।

कृष्ण- ठीक है। अब आप भी जायें और मेरे आदेश का पालन बड़ी कड़ाई से करें।

चक्र- अच्छा स्वामी! अब मैं जाता हूँ और राजभवन में आने वालों को बाहर ही रोक देता हूँ। कोई भी प्रवेश नहीं करने पायेगा।

(कृष्ण को शिर नवाकर चक्र का प्रस्थान)

कृष्ण- (स्वगत)-आज इन दोनों के अभिमान का अन्त होगा। मेरे भक्त गरुड़ और चक्र-दोनों ही घमण्ड के दुर्ग में घिर गये हैं, अब वह ध्वस्त हो जायगा।

(यवनिका-पतन)

(नेपथ्य से)

"अहंकार की मदिरा पीकर जो भी जन बौराया।
वही एक दिन घोर गर्त में गिरा और पछताया।।"

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : अष्टम

(परदा खुलता है)

(स्थान-द्वारका का राज-उद्यान)

(हनुमान का फल खाना और वृक्ष तोड़ना)

हनुमान- (स्वगत)-यह द्वारका का राज-उद्यान है। इसके फल तो बहुत मीठे है; किन्तु आज मैं इसको उजाड़ दूँगा।

(गरुड़ का प्रवेश)

गरुड़- (निकट आता हुआ- सुनकर)-क्या कहा! उजाड़ डालेगा तू? अरे दुष्ट बन्दर! तेरा यह साहस? बोल, अरे बोल-तू कौन है? तूने इस बाटिका को उजाड़ने का साहस क्यों किया?

हनुमान- (उपेक्षा पूर्वक)-तुम तो देख ही रहे हो कि मैं बन्दर हूँ और मैंने कोई नवीन काम तो किया नहीं। वानर जो करते हैं-वही काम मैंने भी किया है। यह तो बन्दर का सहज स्वभाव है भाई!

गरुड़- (व्यंग्य पूर्वक)-अच्छा...... तो तू अब चल महाराज के पास, वहीं तुझे मीठा फल खाने को मिलेगा। तुझे पता चल जायेगा कि किससे पाला पड़ा है।

हनुमान- (तिरस्कार पूर्वक)-चल, हट। मैं क्यों किसी महाराज के पास जाऊँ? मुझको तेरे महाराज से क्या लेना-देना है? होंगे तेरे महाराज!

गरुड़- (क्रोधित होकर)-मैं कहता हूँ कि तू मेरे साथ सीधा चला-चल। अन्यथा; जानता नहीं? कि मैं कौन हूँ और क्या कर सकता हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- (हँस कर)-अरे भाई! तुम कौन हो? जो व्यर्थ में अपने बल और घमण्ड को मुझे सुनाते हो।

गरुड़- बकवादी बन्दर! मैं (हाथ से अपनी ओर संकेत)- गरुण देव हूँ। मैं चाहूँ तो क्षण भर में आकाश-पाताल एक कर दूँ।

हनुमान- (तिरस्कार पूर्वक)-अरे, चल-हट। तुम्हारी जैसी लाखों चिड़ियाँ मैंने देखी हैं। यदि तुममें कुछ भी बल या साहस हो, तो वह भी दिखा सकते हो।

गरुड़- अच्छा........। यदि तू मेरा बल ही देखना चाहता है- तो देख।

(गरुड़ का हनुमान पर आक्रमण करना, हनुमान का गरुड़ को रोकना तथा झपट कर गरुड़ को पूँछ में लपेट लेना। गरुड़ का छटपटाना)

गरुड़- (गिड़गिड़ाता हुआ)-हे वानर! मुझको द्वारकाधीश भगवान कृष्ण ने भेजा है। मैं तो तुमको केवल बुलाने आया हूँ। मुझे छोड़ दो।

(हनुमान गरुड़ को पूँछ से मुक्त करते हैं)

हनुमान- हे पक्षिराज! मैं तो कोशलेश भगवान श्री राघवेन्द्र राम का भक्त हूँ। मैं क्यों तुम्हारे श्री कृष्ण चन्द्र के पास जाऊँ?

गरुड़- अरे, भगवान राम और भगवान कृष्ण तो एक ही हैं। इसलिये तुम्हें उनकी भी सेवा में उपस्थित होना चाहिये। (दूसरी ओर मुँह घुमाकर-स्वगत)-यदि मैं इसकी पूँछ की पकड़ में न आता, तो यह मेरा कुछ भी नहीं कर सकता था।

हनुमान- गरुड़ देव! तुम्हारा कथन सत्य हैं कि श्रीकृष्ण और श्रीराम एक हैं। परन्तु मेरा मन तो धनुर्धर श्रीराम का ही चरणानुरागी है। इसलिये मैं किसी दूसरे की सेवा में नहीं जा सकता। मेरे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम प्रभु तो श्रीराम ही हैं। जाकर तुम अपने महाराज से बता दो। मैं नहीं जाऊँगा।

गरुड़- (क्रोध सहित)-क्या कहा? तू नहीं चलेगा? मैं कहता हूँ कि तुझे भगवान श्रीकृष्ण की सेवा में चलना ही होगा। तू स्वयं को क्या समझता है?

हनुमान- देखो, भैया गरुड़! मुझसे झगड़ो मत। मुझे शान्ति पूर्वक फल खाने दो और तुम यहाँ से चले जाओ।

गरुड़- (अँकड़ता हुआ)-अच्छा; तू सीधे नहीं चलेगा, तो मैं तुझे बलपूर्वक पकड़ कर ले जाऊँगा। (हनुमान को पकड़ने लगता है, गरुड़ का हनुमान को पकड़ना। हनुमान का गरुड़ को उठाकर समुद्र में फेंकने को उद्यत होना)

हनुमान- (सँभल कर)-अरे गरुड़! मैं तो तुझे निरीह पक्षी समझता था। परन्तु तू आग से खेलना चाहता है? वायुमण्डल को छोड़कर शून्याकाश में तैरना चाहता है? तो ले अपने बल और घमण्ड का प्रतिफल।

(गरुड़ को दूर फेंक देते हैं)

हनुमान- (स्वगत)-अरे, यह तो समुद्र में जा गिरा।.........यह सब श्रीकृष्ण चन्द्र की ही माया है। यदि यह कहीं भूमि पर गिरता तो इसका अंजर-पंजर बिखर जाता। अब मैं इसी समय द्वारका जाकर प्रभु का दर्शन करूँगा। जय श्रीराम!

(प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : नवम

(परदा खुलता है)

(स्थान-द्वारका का मुख्य द्वार)

(द्वार पर चक्रदेव पहरा दे रहे हैं)

चक्र- (स्वगत)-आज मैं भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञानुसार मुख्य द्वार पर पहरा दे रहा हूँ। उनकी अनुमति के बिना मैं किसी को भी अन्दर नहीं जाने दूँगा। यह महाराज का दृढ़ आदेश है।

(हनुमान का आगमन)

हनुमान- (निकट आकर, सुनकर)-नहीं भाई, ऐसी प्रतिज्ञा मत करो। मुझे इसी समय प्रभु से मिलना है।

चक्र- (हनुमान को देखकर आश्चर्य व उपेक्षा पूर्वक)-अरे वानर! तू, और प्रभु के पास जायगा? मैं कहता हूँ कि तू वृक्ष पर जाकर बैठ। मुझसे टकराने का साहस मत कर।

हनुमान- (दृढ़ता सहित)-नहीं भाई, मैं तो इसी समय मिलने जाऊँगा। तू मेरे मार्ग से हट जा। मुझे जाने दे।

चक्र- (डाँटता हुआ)-चुप रह दुष्ट! तू किसके सामने मुँह खोल रहा है? जरा सोच।

हनुमान- रुष्ट मत हो प्रहरी! मैं देख रहा हूँ कि तुम अकेले पहरेदार हो। तुम अपने सामर्थ्य से अधिक अपनी शक्ति का दावा मत करो।

चक्र- बकवादी बन्दर! भगवान श्री कृष्ण मुझको बलवान समझते हैं। इसलिये मुझे वे ऐसे कार्यों को ही सौंपते है। (गर्वपूर्वक अपनी ओर संकेत) चक्र हूँ मैं। प्रभु के संकट में उनका साथ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता हूँ। इस समय तू अंदर नहीं जा सकता है। यदि भीतर जाने की चेष्टा की, तो तुझे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा। अतः, यहाँ से अविलम्ब भाग जा तू।

हनुमान- भाई चक्र! मेरे पास समय बहुत कम है। मुझे अभी लौटना भी है। तू व्यर्थ मुझे रोक कर अपने प्राणों को संकट में डाल रहा है।

चक्र- (तिलमिला कर)-ओह! छोटा मुँह और बड़ी बात? मैं तुझे तो क्या? किसी को भी भीतर नहीं जाने दूँगा।

हनुमान- नहीं मानोगे?

चक्र- कदापि नहीं। क्या कर लोगे मेरा?

हनुमान- (सानुरोध)-भाई चक्र! एक बार मान जाओ। मैं तुमसे अनुरोध कर रहा हूँ।

चक्र- मैं त्रिकाल में भी नहीं मानूँगा और न तुझे जाने ही दूँगा। (अँकड़ता है)

हनुमान- तो मैं भी नहीं मानूँगा। तुझे केवल अपने मुँह (मुँह की ओर संकेत) में ही रख लूँगा।

(हनुमान का चक्र को पकड़ कर मुँह में रखना)

हनुमान- जय श्रीराम! (राजद्वार में प्रवेश करते हैं)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : दशम

(परदा खुलता है)

(स्थान-द्वारका का राजदरबार)

(भगवान कृष्ण अपने सभासदों के साथ बैठे हैं)

कृष्ण- प्रधान जी!

प्रधानमंत्री- महाराज!

कृष्ण- (सचिन्त मुद्रा में)-अभी तक गरुड़ जी उस बन्दर को पकड़ कर नहीं आये? उनको गये हुए अब-तक अत्यधिक समय बीत गया है।

प्रधानमंत्री-हाँ स्वामी! अभी नहीं आये। सुना है-बन्दर बड़ा ही बलवान है। किन्तु; स्वामी! गरुड़ जी कम बलवान नहीं हैं। वह कार्य पूरा करके ही आने वाले हैं।

कृष्ण- हाँ, यह बात तो है। परन्तु अभी तक तो आये नहीं।

प्रधानमंत्री- स्वामी! आते ही होंगे।

(हनुमान का प्रवेश)

(कृष्ण का राम-रूप होकर धनुष-बाण धारण करना, हनुमान का शिर झुकाना)

हनुमान- (साञ्जलि)-धन्य हैं कृपानिधान! (कृष्ण के पैरों पर शिर रखते हैं)

कृष्ण- (हनुमान को उठाते हुए)-कहिये-महावीर जी! कहिये; सब कुशल तो है?

हनुमान- (साञ्जलि)-आपकी कृपा से सब कुशल ही है। केवल आपके दर्शन के लिये चला आया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण- बहुत अच्छा किया। इसी बहाने मुझे भी आपका दर्शन मिल गया। महावीर जी! आपको यहाँ तक आने से किसी ने रोका तो नहीं?

हनुमान- (हाथ जोड़कर)-स्वामी! आपका चक्र मुझको आप तक आने से रोक रहा था। व्यर्थ में विलम्ब होता देखकर मैंने उसको अपने मुँह (संकेत) में ही बन्दी बना कर रख लिया है।

(हनुमान का चक्र को उगल देना, चक्र का हाथ जोड़कर सभी के सामने शिर झुका लेना)-(सभी लोग देखकर हैरान होते हैं)-(भीगे हुए गरुड़ का प्रवेश, सभी को देखकर शीश झुका लेता है)

कृष्ण- (देखकर साश्चर्य)-अरे गरुड़ जी! आप समुद्र में स्नान करके आ रहे हैं क्या?

गरुड़- (हाथ जोड़कर लजाते हुए)-नहीं, स्वामी! नहीं। मुझे क्षमा कर दें।......... मुझे अभिमान हो गया था नाथ! इसलिये हनुमान जी ने मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दिया था। प्रभो! मैं लज्जित हूँ। अभिमान के ही कारण लंकापति रावण की भी दुर्दशा हुई थी। यही दशा आज मेरी भी हुई हैं-

''बढ़ा अभिमान रावण में, बना वह वीरवर बंका।
न लेकिन बच सका रावण, न उसकी बच सकी लंका''।।

कृष्ण- हाँ, यह सत्य है कि अभिमान पतन का मूल कारण है। अभिमान ही सर्वनाश का भी मूल कारण है।

गरुड़- हाँ, स्वामी! उसका फल मुझे भी मिल गया। मेरे शरीर और मन से अभिमान सदैव के लिये दूर हो गया।

चक्र- (साञ्जलि)-स्वामी! मेरे भी अपराधों को क्षमा करें। गरुड़ जी के साथ महावीर हनुमान ने मेरे भी अभिमान को चूर-चूर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया।

कृष्ण– ठीक है। यदि शरीर और अन्तःकरण से अभिमान दूर हुआ, तो अच्छा ही हुआ। अभिमान ही समस्त पाप-ताप-शाप का मूल है। अब आप लोग गंगाजल के समान निर्मल और पवित्र हो गये। इसका श्रेय महावीर हनुमान को ही है। बोलो–महावीर हनुमान की जय!

सभी– (एक साथ)–महावीर हनुमान की जय!!

(पटाक्षेप)

(नेपथ्य से)

जहाँ नहीं अभिमान है, वहाँ नित्य भगवान।
चाहे कोई हो यहाँ, प्रभु इच्छा बलवान।।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : एकादश

(परदा खुलता है)

(स्थान-समुद्रतट पर पर्वत-शिखर)

(हनुमान का पर्वत पर पूजामग्न रहना। अर्जुन का आगमन)

अर्जुन- (हनुमान को देखकर-साश्चर्य)-अरे वानर! तुम कौन हो? जो इस पर्वत-शिखर पर बैठकर पूजा-पाठ कर रहे हो। तुम्हारा नाम क्या है?

हनुमान- (हँसकर)-पाण्डुनन्दन अर्जुन! मैं (अपनी ओर संकेत करते हुए) प्रभु-कृपा से समुद्र पर सौ योजन सेतु बाँधने वाला भगवान श्रीराम का दास हनुमान हूँ।

अर्जुन- (सगर्व)-अरे, सौ योजन सेतु तो मेरा जैसा कोई भी धनुर्धर बाणों से ही बाँध सकता था। इसके लिए तुम्हारे प्रभु ने व्यर्थ ही वानरों को श्रमित किया।

हनुमान- नहीं-ऐसा नहीं है अर्जुन! बाणों का सेतु मेरे जैसे वानरों का भार नहीं सह सकता था। इसीलिये मेरे स्वामी ने शर-सेतु निर्माण का विचार ही नहीं किया।

अर्जुन- (गर्वपूर्वक)- अरे हनुमान! तुम यह क्या कहते हो? यदि वानर-भालुओं के गमनागमन से ही शर-सेतु टूट जाय, तो फिर धनुर्विद्या ही कैसी? (गाण्डीव की ओर गर्वपूर्वक देखता हुआ) तुम अभी अर्जुन के इस गाण्डीव धनुष का चमत्कार देखो। मैं बाणों से समुद्र पर सेतु बनाता हूँ। तुम्हारे जैसे बन्दर उस पर निर्भयता-पूर्वक खेल-कूद कर सकते हैं। इसमें रंचमात्र भी सन्देह नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान- यदि तुम्हारा बनाया हुआ शर-सेतु मेरे अँगूठे के ही दबाव से टूट जाय, तो तुम क्या करोगे?

अर्जुन-- ठीक है, यदि वह शर-सेतु टूट गया तो मैं तुम्हारे सामने ही चिता बनाकर उसमें जीवित ही भस्म हो जाऊँगा।.......... हनुमान! अब तुम भी कोई प्रण करो।

हनुमान- अच्छी बात है! मैं भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि तुम्हारे बाणों से निर्मित शर-सेतु मेरे अँगूठे के ही दबाव से न टूट जाय, तो मैं जीवन भर तुम्हारी ध्वजा पर बैठकर तुम्हारी सहायता करूँगा।

अर्जुन- अच्छी बात है। मैं अभी अपने प्रचण्ड गाण्डीव से समुद्र पर सेतु बनाता हूँ।

(अर्जुन का बाण चलाना, आवाज होना, सेतु का बँधना)

अर्जुन- (हनुमान से)-वानरराज! बाणों का सेतु तैयार है। अब इच्छानुसार इस पर उछल-कूद करके देख लो। यह टूट नहीं सकता।

हनुमान- (निकट जाकर सेतु को देखते हुए)-अच्छा ठीक है। अब तुम्हारे सेतु पर मैं अपने अँगूठे का भार रखता हूँ।

(हनुमान का पुल पर अँगूठा रखना, आवाज होना, पुल टूटना, अर्जुन का शिर झुका लेना)

हनुमान- (हँसकर)-अर्जुन! तुम्हारा शर-सेतु तो टूट गया। अब इसके बाद तुम्हारा क्या विचार है?

अर्जुन- (साञ्जलि)-मैं लज्जित हूँ महावीर जी! कि मैं अपनी पहली प्रतिज्ञा पूरी न कर सका। पहली प्रतिज्ञा की पराजय मुझे स्वीकार है। यह अर्जुन (अपनी ओर हाथ से संकेत) अब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी दूसरी प्रतिज्ञा को सत्य करने के लिये चिता पर भस्म होने को तैयार है।

हनुमान- (वर्जना पूर्वक)-नहीं-अर्जुन! नहीं। यह नश्वर शरीर तुम्हारे पास परमात्मा की धरोहर है। जीवित रहते इसे चिता पर भस्म करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। मानव शरीर अत्यन्त दुर्लभ है।

अर्जुन- नहीं, महावीर जी! आप ऐसा न करें। यदि मैं अपनी पहली प्रतिज्ञा पूरी न कर सका तो अब मुझे दूसरी प्रतिज्ञा पूरी करने दें।

हनुमान- पाण्डुनन्दन अर्जुन! मैं किसी जीव को अग्नि में भस्म करने का पक्षधर नहीं हूँ।

अर्जुन- (दृढ़ता पूर्वक)-कुछ भी हो। मैं तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी ही करूँगा।

(अर्जुन लकड़ियाँ एकत्र कर चिता बनाकर आत्मदाह के लिये उद्यत होकर)

अर्जुन- (साञ्जलि)-मुझे अपनी बाण-विद्या पर अभिमान हो गया था। प्रभु ने आज मेरे अभिमान को नष्ट कर दिया है। मैं अपने कटु वचनों के लिये आपसे अन्तिम क्षमा माँगता हूँ।

हनुमान- अर्जुन! तुम इसकी चिन्ता मत करो। मैं तुमसे रुष्ट नहीं हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम इस शरीर को, जो कि ईश्वर की धरोहर है-इसे चिता पर मत भस्म करो। यह करना श्रेयस्कर नहीं है।

अर्जुन- नहीं-नहीं, आप ऐसा न कहें। अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा चिता पर ही पूरी करेगा। (आकाश की ओर देखकर) हे सखा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवकीनन्दन! मुझे क्षमा करना। तुम्हारा यह सखा तुमसे अंतिम बार नहीं मिल पा रहा है। इसके लिये अपने इस अर्जुन को क्षमा करना।.........भाई युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव-मुझे क्षमा करना। (हाथ जोड़कर) मेरा अंतिम प्रणाम स्वीकार करना।.....सबको मेरा अंतिम प्रणाम।...... सभी मुझे क्षमा करें।

(अर्जुन का चितारोहण के लिये उद्यत होना। सहसा ब्रह्मचारी की आवाज सुनाई पड़ना)

ब्रह्मचारी- (अदृश्य रहकर)-सावधान-अर्जुन! सावधान।

अर्जुन- (असमंजस में पड़कर)-सावधान.........? अर्जुन को इस समय सावधान करने वाले आप कौन हैं?

ब्रह्मचारी- (सामने आकर)-अर्जुन! लोग मुझको ब्रह्मचारी कहते हैं। क्या यह बता सकते हो कि इस समय तुम चिता पर भस्म होने के लिये क्यों तुले हो? तुमने कोई अपराध तो किया नहीं। फिर ऐसा क्यों करने जा रहे हो?

अर्जुन- हाँ, ब्रह्मचारी जी! मैं अवश्य बताऊँगा। मेरे और महावीर जी के बीच यह प्रतिज्ञा की गई थी कि मैं अपने बाणों से सुदृढ़ सेतु बना दूँगा। जिस पर हनुमान जी निर्भयता पूर्वक उछल-कूदकर देख सकते हैं। यदि वह सुदृढ़ पुल इनके दाब से टूट गया तो मैं इनके सामने ही चिता बनाकर भस्म हो जाऊँगा।

हनुमान- इस बात पर मैंने भी कहा था-यदि तुम्हारा शर-सेतु मेरे पैर के अँगूठे के भार से ही न टूट गया, तो मैं जीवन भर तुम्हारे रथ की ध्वजा पर बैठकर तुम्हारी सहायता करूँगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारा सेवक बनकर रहूँगा।

अर्जुन- ब्रह्मचारी जी! मैं अपनी पहली प्रतिज्ञा में पूरी तरह हनुमान जी से परास्त हो गया। इसलिये अपनी दूसरी प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ।

ब्रह्मचारी- पाण्डुनन्दन! मैं सब कुछ समझ गया। परन्तु आप लोगों की यह प्रतिज्ञा साक्ष्य के अभाव में निराधार है। इस समय मैं दोनों के बीच में साक्ष्य हूँ। अर्जुन! अब तुम मेरे सम्मुख शर-सेतु का निर्माण करो और मेरे ही सामने हनुमान जी अपना अँगूठा रखें। तभी आप लोगों की प्रतिज्ञा पूरी मानी जायेगी।

हनुमान- ब्रह्मचारी जी! मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं आपकी बात से सहमत हूँ और पुनः सेतु पर चढ़ने को तैयार हूँ।

अर्जुन- (तमक कर)-तो मुझे (अपनी ओर हाथ से संकेत) कब अस्वीकार है? यह अर्जुन भी अपने गाण्डीव से पुनः शर-सेतु बनाने के लिये तैयार है।

ब्रह्मचारी- तो पाण्डुनन्दन, अब किस बात की देरदार है? यथाशीघ्र सेतु निर्माण करो। जिससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाय।

(अर्जुन का बाण चलाना, आवाज होना, सेतु तैयार होना)

अर्जुन- (संकेत करते हुए)-देखिये महावीर जी! शर-सेतु तैयार है।

हनुमान- तो मैं भी तैयार हूँ। (चल देते हैं)

(हनुमान का पुल पर चढ़ना, सेतु न टूटने पर साश्चर्य देखना)

हनुमान- (स्वगत-साश्चर्य)-अरे, जो शर-सेतु मेरे अँगूठे के भार को नहीं सह सका था, वही अब मेरे भार को कैसे सह ले रहा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है?·····इसमें कुछ-न-कुछ रहस्य अवश्य है। अच्छा········ मैं जरा पुल के नीचे तो देखूँ।

(हनुमान का पुल के नीचे देखकर मुस्कराना)

हनुमान- (अर्जुन से)-पाण्डुनन्दन अर्जुन! इन (हाथ से संकेत) ब्रह्मचारी जी की सहायता से तुम विजयी हुए और मैं पराजित। ब्रह्मचारी के वेश में स्वयं मेरे प्रभु ही पधार कर तुम्हारी रक्षा कर रहे हैं। हे अर्जुन! मेरे आराध्य देव भगवान श्रीराम ने मुझे वरदान दिया था कि-'द्वापर के अन्त में मुरली मनोहर और ब्रह्मचारी के वेश में दर्शन दूँगा'। पाण्डुनन्दन! तुम्हारी रक्षा को निमित्त बनाकर मेरे प्रभु ने अपने वरदान को पूरा किया है।

(आवाज के साथ ब्रह्मचारी का अन्तर्धान होना, श्रीकृष्ण का दर्शन होना)

हनुमान- (उल्लसित होकर)-

बोलो मुरली मनोहर भगवान श्रीकृष्ण की जय!··········

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की जय!!

अर्जुन- (उच्च स्वर से)-महावीर हनुमान की जय!

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : द्वादश

(परदा खुलता है)

(स्थान - महाराष्ट्र में गोदावरी-तट)

(समय - प्रातः उदयकाल)

(समर्थ रामदास गोदावरी से निकल कर तट पर वस्त्र बदल रहे हैं)

रामदास- (वस्त्र बदलते हुए-स्वगत)-प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में आकर गोदावरी स्नान करके जल में खड़े-खड़े एक प्रहर तक राम-नाम जपते हुए आज बारह वर्ष पूरे हो गये। प्रभु की कृपा से निर्बाध तेरह करोड़ राम-नाम जप का अनुष्ठान आज सम्पन्न हो गया। बड़ी दया की उन करुणानिधान ने। जय-जय श्रीरघुवीर समर्थ! जय-जय श्रीरघुवीर समर्थ!! जय-जय श्रीरघुवीर समर्थ!!!

(सहसा तटवर्ती अशोक वृक्ष से उतर कर एक स्वर्णरोम कपि का रामदास के सामने आना।)

रामदास- (चकित होकर देखते हुए)-जय-जय श्रीरघुवीर समर्थ! जय-जय श्री......(सहसा कपि का अन्तर्धान होना और सूक्ष्म रूप से रामदास के शरीर में प्रविष्ट होकर कुंडली जागृत करके सहस्त्रार से जोड़ देना। रामदास की आँखे बन्द होना व रोमांचित होना। कुछ क्षण बाद हनुमान का अपने मूल रूप से रामदास के सम्मुख प्रकट होना।)

हनुमान- (रामदास के सन्मुख प्रकट होकर)-जय श्रीराम!

रामदास- (आँखें खोलकर हनुमान को देखकर)-ओह! आप?

हनुमान- (अभय मुद्रा में)-जय श्रीराम!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदास– (साञ्जलि स्तुति करने लगते हैं)–

''जय महावीर स्वर्णिम शरीर जय भक्तिवीर जय आंजनेय जय!
जय बलनिधान हनुमान प्रभो! पवमानवेग जय अप्रमेय जय!!
जय रामभक्ति के चिर बसंत सद्गुण अनन्त जय संत-श्रेय जय!
जय-जय अजेय जय नित्य गेय जय कृपामूर्ति रघुवीर-ध्येय जय!!''

रामदास– (हनुमान के चरणों में शिर रखकर साञ्जलि)–मेरे सुख-सौभाग्य की सीमा नहीं है आज आपके दर्शन पाकर।

हनुमान– (अभय मुद्रा में)–श्री रघुनाथ जी की भक्ति से मैं तुम पर तुष्ट हूँ रघुवीर समर्थ! मेरी इच्छा है कि तुम चारो ओर श्री राघवेन्द्र राम का सुयश-सौरभ प्रसारित करो। मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा।

रामदास– (साञ्जलि)–एक और प्रार्थना है प्रभो!

हनुमान– वह क्या? शीघ्र बताओ।

रामदास– (साञ्जलि)–मैं आपकी भी महिमा एवं आराधना-अर्चा का प्रचार-प्रसार करना चाहता हूँ।

हनुमान– मुझे आपके यश-प्रचार में स्पृहा नहीं है समर्थ! किन्तु अपनी प्रसन्नता के लिए तुम कुछ भी कर सकते हो। –'शिवास्ते सन्तु पन्थानः'।

(हनुमान का अन्तर्धान होना)

रामदास– (स्वगत)–अच्छा, अब मैं भी कुटी पर चलूँ।

('जय रघुवीर राम भगवान! जय-जय महावीर हनुमान!! का कीर्तन करते हुए रामदास का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्यः त्रयोदश

(परदा खुलता है)

(स्थान - काशी)

(दृश्य - एक ओर एक बबूल का वृक्ष)

(समय - प्रातः काल ब्रह्मबेला)

(शौचक्रिया से लौटते हुए तुलसीदास बबूल-वृक्ष पर लोटा में बचा हुआ जल चढ़ाते हैं। सहसा हँसने की आवाज के साथ बबूल से प्रकट होकर एक छायामूर्ति का दिखाई पड़ना)

छायामूर्ति- (प्रसन्न स्वर में)-मैं तुम्हारी इस सेवा से बहुत प्रसन्न हूँ। वरदान माँगो।

तुलसीदास- (साश्चर्य)-आप कौन हैं? पहले अपना परिचय दीजिये। मुझे बड़ा विस्मय हो रहा है।

छायामूर्ति- (उच्च स्वर में)-मैं एक प्रेत हूँ। भूतभावन शिव ने मुझे अपना गण माना है। मैं बहुत समय से प्यासा था। यह बबूल ही मेरा डेरा है। तुम चालीस दिनों से अनवरत जल चढ़ाते रहे। तुम्हारी इस सेवा से मुझे तृप्ति मिली। भगवान शिव की प्रेरणा से मैं तुम्हें वर देना चाहता हूँ। तुम्हें अभीष्ट वरदान देकर मुझे हार्दिक हर्ष होगा। माँगों-क्या चाहिये तुम्हें?

तुलसीदास- (सविनय)-प्रेतप्रवर! मैं तो त्याग-वैराग्य का पथिक हूँ। मुझे.......कुछ नहीं चाहिये। देना ही है तो आप मेरा इच्छित वर दें, इससे बढ़कर मुझे कुछ भी अभीष्ट नहीं है। आप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझको श्रीरामचन्द्र का दर्शन करा दें।

छायामूर्ति- मुझमें भौतिक वस्तुएं देंने की ही सामर्थ्य है। श्रीराम का दर्शन कराने की सामर्थ्य होती, तो मैं स्वयं दर्शन करके अपना उद्धार न कर लेता। किन्तु......

किन्तु; तुम निराश न होओ। मैं तुमको श्रीराम का दर्शन पाने की युक्ति बता सकता हूँ।

तुलसीदास- (सोल्लास)-बताइये। प्रेतप्रवर! शीघ्र बताइये। मेरे प्रभु श्रीरामचन्द्र का दर्शन कैसे मिलेगा?

छायामूर्ति- काशी में प्रहलाद घाट पर प्रतिदिन श्रीरामकथा होती है। उसमें हनुमान जी कोढ़ी के वेश में सम्मिलित होते हैं। तुम उनको पहचान कर पैर पकड़ लेना और जब-तक वे श्रीराम का दर्शन कराने का वचन न दें; तुम पैर न छोड़ना। तुम्हें वे ही श्रीरघुनाथ का दर्शन करवा सकते हैं। जाओ-जैसा मैंने कहा, वैसा ही करो। तुम्हारा मनोरथ पूरा हो जायेगा। (अन्तर्हित हो जाता है।)

(तुलसी का प्रस्थान)

(यवनिका-पात)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : चतुर्दश

(परदा खुलता है)

(स्थान - काशी में प्रह्लाद घाट)

(समय - सायंकाल)

(कथा-मंडप में कथा हो रही है। सभी श्रोताओं के पीछे एक वृद्ध कोढ़ी बैठा है। वहीं पास में तुलसीदास भी बैठे है)

कथावाचक- (कथा समापन करते हुए)-अब आज की कथा यहीं विराम ले रही है -

"कथा-समापन होत अब, सुनहु वीर हनुमान!
जो कोउ जहाँ से आयउ, सो तहँ करउ पयान।।"
बोलिये आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्र की जय।।

(धीरे-धीरे सभी का प्रस्थान। केवल तुलसीदास और कोढ़ी रह जाते है। तुलसीदास कोढ़ी के पैर पकड़ कर चरणों पर अपना शिर रख देते हैं)

कोढ़ी- (पीछे हटने का प्रयास करते हुए)-अरे, दूर हटो-दूर। यह क्या कर रहो हो? छोड़ो मेरे पैर। देखते नहीं? मैं गलित कुष्ठ का रोगी हूँ।

तुलसीदास-(पैरों को दृढ़ता से कसते हुए)-नहीं, प्रभो! आप मुझे दूर न हटाइये। मुझ पर कृपा कीजिये। मैं आपको ऐसे नहीं छोड़ूँगा।

कोढ़ी- क्या मिलेगा तुम्हें मेरे पैर पकड़ने से! क्यों तुम कोढ़ी को छूकर कोढ़ी होना चाहते हो? छोड़ो मेरे पैर। (पैर छुड़ाने का प्रयास करना)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसीदास– नहीं–आप ऐसा न कहें। मैं आपको पहचान गया हूँ।....... आप........आप मेरे लिये एक वचन दें, तो मैं आपके पैर छोड़ दूँगा। अन्यथा नहीं छोड़ूँगा, आप भले ही मेरा वध कर दें, किन्तु मैं मानने वाला नहीं।

कोढ़ी– अरे, ऐसा क्यों कहते हो तुम? क्या चाहते हो तुम मुझसे? बोलो मैं पूरा करने का वचन देता हूँ।

तुलसीदास– (उल्लसित होकर)–मुझे आप राघवेन्द्र श्रीराम का दर्शन करा दें। बस, यही आपकी कृपा चाहता हूँ। मुझे और कुछ भी अभीष्ट नहीं है। मैं अपनी इस इच्छापूर्ति के लिये आपकी शरण में हूँ। मुझपर कृपा करें आप। (चरणों पर पुनः शिर रखना।)

कोढ़ी– (हनुमान के रूप में प्रकट होकर)–तुलसीदास! मैं प्रभु के प्रतिं तुम्हारी दृढ़-निष्ठा से प्रसन्न हूँ। तुम उनके दर्शन के लिये चित्रकूट चलो। वहीं भजन करो। प्रभु सानुज वहाँ विराजमान रहते हैं। मैं उनसे तुमको साक्षात् दर्शन देने की प्रार्थना करूँगा।

तुलसीदास– (सोल्लास हाथ जोड़कर)–अच्छा स्वामी! मैं ऐसा ही करूँगा। आपके वचन पर मुझे पूर्ण विश्वास है।

हनुमान– अच्छा, अब वहीं पहुँचो।– 'मंगलमस्तु'।

(हनुमान का अन्तर्धान होना। तुलसी का राम-राम कहते हुए प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : पञ्चदश

(परदा खुलता है)

(स्थान-चित्रकूट में मन्दाकिनी तट पर तुलसीदास की कुटी)

(तुलसीदास कुटी-द्वार पर खड़े-खड़े मंदाकिनी का प्रवाह देख रहे हैं। हवन-कुंड से धूम उठ रहा है)

तुलसीदास- (स्वगत)-आज छह मास पूरे हो गये चित्रकूट में आकर अनुष्ठान करते-करते। अभी तक श्री रघुनाथ जी का दर्शन नहीं हुआ। हनुमान जी भी यहाँ नहीं मिले।........मुझे तो प्रभु का दर्शन होने तक यहीं डटे रहना है। हनुमान जी ने यही कहा है।

(सहसा एक ओर से पथ पर आते हुए अश्वारूढ़ दो युवकों को देखकर)

तुलसीदास- (स्वगत)-ये राजकुमार कितने सुन्दर हैं। स्यात् ये आखेट के लिये जा रहे होंगे। इनको देखकर ऐसा ही प्रतीत हो रहा है........आखेट इस तपोभूमि चित्रकूट में........?........ इस कलियुग में यह भी संभव है। उँह........मैं भी क्या सोचने लगा? राम........राम........राम........राम।

(राजकुमारों का दृष्टि-ओझल होना। सहसा हनुमान का प्रकट होना।)

हनुमान- (तुलसी के सामने प्रकट होकर)-दर्शन पा गये रघुनाथ जी के? ठीक से पहचान लिया तुमने उनको? तुम्हारी लालसा पूरी हो गयी?

तुलसी- (ससंभ्रम)-कहाँ.......?.......कहाँ हैं रघुनाथ जी? मैं तो कब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रतीक्षा में हूँ उनके दर्शनों की। कब होगा उनका दर्शन?

हनुमान- चूक गये न? पहचानना ही तो कठिन है उनको। वे सर्वरूप प्रभु तो सर्वत्र सब काल में उपस्थित हैं किन्तु माया-मोह-ग्रस्त जीव उनको पहचान कहाँ पाता है? अभी तो अश्वारूढ़ सानुज प्रभु इधर ही से गये हैं। क्या तुमने उनको देखा नहीं?

तुलसीदास-(हनुमान के पैर पकड़ कर)-हाय! मैंने तो उनको आखेट के लिये निकले हुए राजकुमार समझा। (माथा पीटकर) हाय रे दुर्भाग्य। अब मुझे मेरे रघुनाथ जी के दर्शन कब होंगे?

हनुमान- (आश्वासन मुद्रा में)- निराश न होओ तुलसीदास! मैं श्री रघुवीर जी से पुनः प्रार्थना करूँगा तुम्हें दर्शन देने की। तुम यहीं चित्रकूट में रहकर भजन करो। मैं इस बार उनकी पहचान कराने का भी तुम्हें वचन देता हूँ। तुम यहीं डटे रहना।

तुलसीदास- (हाथ जोड़कर)-ठीक है स्वामी! मैं प्रतीक्षा करूँगा।

(हनुमान का अन्तर्धान होना। तुलसीदास का राम-राम कहते हुए कुटी में प्रवेश)

(यवनिक-पात)

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : षोडस

(परदा खुलता है)

(स्थान : चित्रकूट का रामघाट)

(समय : प्रातः काल)

दृश्य- तुलसीदास राम-राम जपते हुए चन्दन घिस-घिसकर कटोरी में रख रहे हैं। घाट पर स्नानार्थियों की भीड़ है।)

तुलसीदास-(स्वगत)-आज चित्रकूट में स्नान का महापर्व है। चारो ओर श्रद्धालु स्नानार्थियों का हर्ष-समुद्र हिलोरे ले रहा है। अनेक साधु-सन्त भी स्नान के लिए बाहर से आ रहे हैं। उनके भोजन आदि की सेवा के लिए तो मेरे पास कुछ साधन नहीं है। मैं क्या कर सकता हूँ? राम.......राम! राम.....राम! यह चन्दन ही सन्त-महात्मा अपने मस्तक पर लगा लेंगे, मेरी यही सेवा स्वीकार कर लेंगे, तो मैं कृतार्थ हो जाऊँगा। राम......राम...राम......राम।

(सहसा श्याम-गौर दो बालकों का तुलसीदास के सम्मुख आगमन। तुलसीदास उनके रूप-माधुर्य को अपलक देखने लगते हैं।)

दोनों बालक-(हाथ आगे बढ़ाकर)-बाबा! हमें भी चन्दन दो। हम तिलक लगायेंगे।

तुलसीदास-हाँ- हाँ, लो, लगा लो, (चन्दन की कटोरी व दर्पण देते हुए) आज तो यह चन्दन की सेवा सबके लिये है। लो-तुम दोनों भी लगा लो।

(दोनों बालक अपने हाथ से चन्दन लगाते है)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसीदास-राम······राम······राम······राम।

चन्दन घिसना बड़ा कठिन है।

राम······राम······राम······राम।

(हनुमान तोते का रूप बनाकर वृक्ष की शाखा पर बैठे हैं।)

हनुमान- (तोते के स्वर में)-

"चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन की भीर।

तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुवीर।"

तुलसीदास-(चन्दन घिसना छोड़कर शीघ्रता से राम के चरणों में शिर रखते हुए)-

मेरे नाथ!······मेरे प्रभु!

मेरी जन्म-जन्म की लालसा पूरी हुई स्वामी!

(राम का तुलसी के शिर पर हाथ फेरना)

(पटाक्षेप)

(नेपथ्य से)

"भक्त और भगवान का मिलन हो गया आज।

महावीर की कृपा से पूर्ण हुआ सब काज।।

रोम-रोम पुलकित हुआ, उर में अति उल्लास।

महानन्दरस-सिन्धु में विह्वल तुलसीदास।।"

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य : सप्तदश

(परदा खुलता है)

(स्थान-वाराणसी में गंगा तट पर एक मन्दिर)

(तुलसीदास आसन पर बैठे हैं। सामने एक चौकी पर हस्तलिखित 'श्रीरामचरितमानस' रखा हुआ है तथा पूजन-सामग्री भी रखी है)

तुलसीदास-(स्वगत)-धन्य हैं महावीर हनुमान! आप धन्य हैं। आपकी महिमा ही अपार है। इस घोर कलिकाल में आपकी महती कृपा से ही प्रभु के पावन चरित का यह महा ग्रन्थ-'श्रीरामचरितमानस' जन-भाषा में संपूर्ण हो गया। मैं कृतकृत्य हो गया प्रभो! मैं कृतकृत्य हो गया।

(कृतकृत्यता से उल्लसित होकर)

''हो गया यह 'चरित-मानस' पूर्ण श्री भगवान का।
है अनुग्रह दास पर बस, वीरवर हनुमान का।।''

(दो चोरों का मन्दिर के बाहर आगमन)

प्रथम चोर-(भीतर आकर शिर झुकाता है)-गोस्वामी बाबा!......गोस्वामी बाबा! पायँ लागौं। आपको काशी नरेश ने अभी बुलाया है।

तुलसीदास- अच्छा बच्चा! मैं अभी चलता हूँ। महाराजा प्रभु का पावन चरित बड़ी तन्मयता से सुनते हैं।

प्रथम चोर- लेकिन स्वामी जी! आप जायें। मुझे अभी और भी कार्य करना है। सारा कार्य पूरा करके ही मैं लौट पाऊँगा। आप पहुँचें वहाँ।

तुलसीदास- ठीक है- ठीक है। तुम अपना कार्य निबटा कर आना। तब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक मैं चलता हूँ।

(तुलसी का ग्रंथ को लेकर प्रस्थान। दूसरे चोर का प्रवेश)

द्वितीय चोर- (निकट आकर)-क्या हुआ? तुलसी बाबा गये?

प्रथम चोर- जायेंगे नहीं, तो क्या बैठे रहेंगे?……अब हम लोगों का रास्ता साफ है-किसी का भी भय नहीं है। जितना सामान चाहो-उठा ले चलो।

द्वितीय चोर- अरे भाई, यह तो बताओ कि तुमने तुलसी बाबा को यहाँ से कैसे खिसकाया?

प्रथम चोर- अरे, खिसकाया ही नहीं, उन्हें उल्लू भी बनाया है।

द्वितीय चोर- अरे भाई, यह कैसे? कि उन्हें उल्लू भी बनाया है।

प्रथम चोर- बस-बस, चुपचाप मेरे साथ लगे रहो…अन्यथा अभी गोसाईं बाबा भी आता होगा।

द्वितीय चोर- जैसा चाहो, तुम वैसा करो। अब तो तुम्हारा साथ पड़ ही गया है।

(दोनों चोरों का सामान की गठरी बाँधकर सिर पर रखना, भागने के लिए इधर से उधर जाना, गदा देखकर पुनः लौटना-घबड़ाना।)

द्वितीय चोर-(घबड़ाये हुए स्वर में) कुछ देख रहे हो?

प्रथम चोर- हाँ, देख तो रहा हूँ। हर रास्ते पर कोई गदा लिये हम लोगों को मारने दौड़ता है।

द्वितीय चोर- मैंने पहले ही सोचा था कि सामान ऐसे ही खुला पड़ा है, जरूर कोई रखवाला होगा।

प्रथम चोर- अरे, यह रखवाला है या हम लोगों की मृत्यु का शिकंजा! कुछ समझ में नहीं आता-क्या करूँ?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय चोर- मुझे भी तो अब कोई रास्ता नहीं सूझता। अब हम लोग पकड़े जायेंगे। मैंने पहले ही कहा था कि कलियुग है। इस युग में पापों का फल तुरन्त मिलता है।

प्रथम चोर- भाई, मुझे क्षमा करो। मेरे ही कारण आज तुम भी फँस गये। (आवाज सुनाई पड़ती है, सुनने लगता है) अरे, लगता है कि गोसाईं बाबा आ गये।

द्वितीय चोर- तब तो अच्छा हुआ, मै उन्हीं के पैरों पर गिरकर इस अपराध के लिये उनसे क्षमा माँग लूँगा।

(तुलसीदास का आना, दोनों चोरों का छिपना, तुलसीदास का चोरों को छिपते हुए देखना)

तुलसीदास- आप लोग कौन हैं? जो इस समय मेरी कुटिया में पधारे हैं।

दोनों चोर- (घबड़ा कर तुलसी के पैरों पर गिरते हुये) महाराज! क्षमा कर दें····क्षमा···। हम लोग चोर हैं। चोरी करने आये थे।

तुलसीदास- नहीं भाई। आप लोग ऐसा न कहें। बतायें-आप लोग कौन हैं? और कहाँ से आये हैं? मुझसे जो भी काम हो; निःसंकोच कहें। भय न करें।

प्रथम चोर- नहीं महाराज! यह सत्य है कि हम लोग चोर हैं। यहाँ चोरी करने आये थे। (छिपाकर रखी हुई गठरी की ओर संकेत करते हुये) देखिये-सामने देखिये। आपका पूरा सामान चुराकर हम लोग भागने ही वाले थे।

तुलसीदास- (सहजता पूर्वक)-तो तुम लोग रुक क्यों गये?

द्वितीय चोर- आपके पहरेदार ने हमको जाने से रोक दिया है।

तुलसीदास- (साश्चर्य)-मेरे पहरेदार ने रोका है?·······अरे, मैं एक गरीब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण हूँ। आकाश-वृत्ति ही मेरा सहारा है। भाई, तुम लोग यह क्या कह रहे हो? मेरे पास तो भगवान को छोड़कर और कोई नहीं है।

प्रथम चोर- वाह, गोसाईं बाबा! वाह! आप भी खूब कहते हैं।

द्वितीय चोर- प्रत्येक द्वार पर अच्छे पहरेदार रखते हो। वे हमें भागने से रोकते हैं; और आप ही मखौल करते हो?

तुलसीदास- (अन्य ओर मुँह करके-स्वगत)-मेरे पास यहाँ कौन है? जिसने इनको भागने से रोक रखा है। (चोरों की ओर मुँह करके-प्रकट)-अच्छा तो बताओ-तुम लोगों को रोकने वाला पहरेदार कैसा था?

प्रथम चोर- (हाथ जोड़कर)-स्वामी जी! पहरेदार का चेहरा तो नहीं देखा। परन्तु द्वार तक जाते ही उसका गदा हम लोगों के शिर तोड़ने के लिये आ जाता था।

द्वितीय चोर- हो सकता है कि आपके भगवान ही हम लोगों को अनुचित काम करने से रोकते हों।

तुलसीदास- (अन्य ओर देखते हुए-स्वगत)-धन्य हो प्रभो! आप धन्य हो। मेरे ही कारण आपको पहरेदारी करनी पड़ी। आपकी लीला ही बड़ी विचित्र है। (चोरों से-प्रकट)-आप लोग अब चिन्ता छोड़ दें। वे ही प्रभु जो अभी तक आप लोगों को रोकते रहे-अब नहीं रोकेंगे। आप लोग जा सकते हैं।

प्रथम चोर- (हाथ जोड़कर)-बाबा! हमें क्षमा कर दें।

द्वितीय चोर- हम आज से अब कभी भी चोरी नहीं करेंगे।

तुलसीदास- यह तो बहुत अच्छी बात है कि तुम लोग चोरी नहीं करोगे। परन्तु तुम लोगों को कहना चाहिए कि-'हम अन्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों को भी अनुचित धन्धे से रोकेंगे।'

प्रथम चोर- हाँ, महाराज! हाँ। आज से हम लोग न अनुचित धन्धे करेंगे और न होने देंगे।

डॉ० राम स्वरूप आ... बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट-
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

तुलसीदास- ठीक है-भक्तो! ठीक है।

(अन्य ओर मुख करके)-(स्वगत)-

'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।

जो जस करै सो तस फल चाखा'।।

(चोरों से)-देखो, वह गदा महावीर हनुमान जी का था। वे ही तुम्हें इस अनुचित कार्य से रोक रहे थे। कलिकाल में महावीर हनुमान ही सर्वोपरि देव हैं, जो इस लोक में वास करते हैं। तुम लोग भी धन्य हो, जो इसी बहाने उनका दर्शन पा गये।

प्रथम चोर- नहीं महाराज! हम लोगों ने केवल गदा ही देखा है।

तुलसीदास- चोरी करने आये थे, तो गदा का दर्शन पाये हो। उनकी भक्ति करोगे, तो तुम्हें उनका भी दर्शन मिल जायगा। बोलो-महावीर हनुमान की जय!

दोनों चोर- (एक साथ)-महावीर हनुमान की जय!!

तुलसीदास- (गद्गद् होकर गुनगुनाते है)-

"जो सुनेगा नित्य लीला वीरवर हनुमान की।

प्राप्ति होगी अभय की, आनन्द की, बल-ज्ञान की।।

ज्ञान में, विज्ञान में, बल में स्वयं उपमान हैं।

भक्त राघव राम के महिमान श्री हनुमान हैं।।"

(पटाक्षेप)

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट-
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(नेपथ्य से)

राघवेन्द्र के दूत, वीर हनुमान! तुम्हारी जय हो।
आञ्जनेय रणधीर वीर बलवान! तुम्हारी जय हो।।
शरणागत के दुःख-दोष
पल भर में हरने वाले।
दीन जनों के जीवन-वन को
नन्दन करने वाले।
राम-भक्ति के दिव्य दीप्त दिनमान! तुम्हारी जय हो।
राघवेन्द्र के दूत, वीर हनुमान! तुम्हारी जय हो।।
कल्पवृक्ष से भी बढ़कर तुम
मनवांछित के दाता।
राम-कथा-रसिकों के तुम हो
भव-भय-भ्रम से त्राता।
मोह-निशा-सुप्तों के शुभ्र विहान! तुम्हारी जय हो।
राघवेन्द्र के दूत, वीर हनुमान! तुम्हारी जय हो।।
ऐसी कृपा करें-भक्तों का
सब संकट कट जाये।
अखिल विश्व से द्रोह-द्वेष का
गहन तिमिर छँट जाये।
जग में मानव-मानवता का प्रति क्षण मंगलमय हो।
राघवेन्द्र के दूत वीर हनुमान! तुम्हारी जय हो।।
हनुमान! तुम्हारी जय हो।।.........................

(शनैः शनैः स्वर शान्त होता जाता है)

इति

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

१. साहित्य रत्नालय
३७/५०, गिलिश बाजार
शिवाला रोड, कानपुर-२०८००१
फोन-०५१२-२३५३५८६, मो०नं०-०९४५१५४४८६६

२. श्री जगदीश प्रसाद म० पोद्दार
६५, उद्योग भवन,
सोनावाला लेन,
गोरेगाँव (पूर्व)
मुम्बई - ४०००६३
मो०नं० - ०९८६९९०९९११

३. भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
'साहित्यमण्डप' चन्द्रलोक कालोनी,
शहजादपुर, अकबरपुर-२२४१२२,
अम्बेदकरनगर (उ०प्र०)
मो०नं० - ७०८०३२२७९५

Central Library
185363
Gurukula Kangri (Deemed to be University)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.P.S पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 097 ARY-H आगत संख्या 185363

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

185363

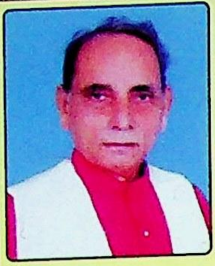
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचयाक्षर



कवि, लेखक, समीक्षक, सम्पादक

आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

जन्म-२ जनवरी, १९४९ ई०
माता-श्रीमती राजरानी देवी पत्नी-श्रीमती सुमन त्रिपाठी
पिता-श्री भगवती प्रसाद त्रिपाठी 'भगवतशरण'
जन्मस्थान-ग्राम व पत्रालय-गुलरिहा, जनपद-उन्नाव, उ०प्र०
सम्प्रति-बी०एन० इण्टर कालेज, अकबरपुर-अम्बेडकरनगर से सेवानिवृत्त आचार्य

कृतित्व- ईसवीय सन्-१९६७ से अद्यावधि- पर्यन्त देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख एवं रचनायें इत्यादि प्रकाशित।
प्रकाशित कृतियाँ- (१) भाव प्रसून (छन्द संग्रह) १९६९ ई०, (२) लीला माधुरी (छन्द संग्रह) १९७१ ई०, (३) वेदना (खण्ड काव्य) १९७७ ई०, (४) वियोगिनी (खण्ड काव्य) १९७९ ई०, (५) हनुमत् शतक (ब्रजभाषा) १९८२ ई०, (६) तत्वदर्शन (मुक्तक काव्य) १९८७ ई०, (७) भगवती शतक (ब्रजभाषा) १९८४ ई०, (८) उरवीणा (गीत संग्रह) १९८५ ई०, (९) भारत व्यथा (अवधी प्रबन्ध) १९८७ ई०, (१०) जय जन्मभूमि (खड़ी बोली प्रबन्ध काव्य) १९८८ ई०, (११) जय गीधराज (महाकाव्य) १९८८ ई०, (१२) संघर्ष (वीर काव्य) १९९१ ई०, (१३) पुष्पांजलि (गीत संग्रह) १९९२ ई०, (१४) जय भारत जय भारती (गीत संग्रह) १९९४ ई०, (१५) आओ बच्चो गाओ बच्चो (बाल गीत) १९९४ ई०, (१६) हनुमन्महानाटक (१९९४ ई०), (१७) स्वयंप्रभा (खण्ड काव्य) १९९५ ई०, (१८) क्रान्तिवीर आजाद (महाकाव्य) १९९७ ई०, (१९) जीवनवीणा (छन्दकाव्य) १९९७ ई०, (२०) गीतपर्व (गीतसंग्रह) १९९८ ई०, (२१) बच्चे गायें गीत, (२२) प्यारे पक्षी प्यारे फूल, (२३) पर्यावरण की पुकार (तीनों १९९९ ई० में प्रकाशित), (२४) गीत वृन्दावन २००१ ई०, (२५) धूप के फूल (निबन्ध संग्रह) २००२ ई० (२६) गीतगंगा २००२ ई०, (२७) राष्ट्र अस्मिता के निहितार्थ २००३ ई० (२८) राष्ट्रचिन्तन के आयाम २००३ ई० (२९) दोहा कुंज २००३ ई०, (३०) साहित्य-चिन्तन २००४, (३१) भ्रमभंजन २००४, (३२) कर्तव्य-मार्ग २००५, (३३) मानवता २००५, (३४) विविधायन (गीत संग्रह) २००६, (३५) धर्म-चिन्तन-२००६ ई०, (३६) बच्चों की दुनिया-२००७ ई०, (३७) कल्याणी चालीसा-२००७ ई० (३८) ब्रजवेणु-२००७ ई०, (३९) अहिंसा-२००८ ई०, (४०) गीतगोपाल-२००८ ई०, (४१) विनय वाटिका, (४१) संकट मोचन (अवधी प्रबन्धकाव्य) २०१६ ई०, (४३) नवदुर्गास्तोत्र (२०१८), (४४) विनयाष्टक (२०१९), (४५) श्रीहनुमत्हृदय-स्तोत्र (२०१९) इत्यादि ६२ पुस्तकें प्रकाशित।

प्रकाशोन्मुख कृतियाँ- अहिल्यायन, गंगायन, जयन्त, श्रीरामचरितायन, बच्चे गायें, बाल वीणा, बृज विनोद इत्यादि।
संस्थापना एवं सम्पादन-प्रकाशन- १९९५ में 'हिन्दी सहकार संस्थान' की स्थापना करके राष्ट्रीय चेतना एवं सत्साहित्य की पत्रिका 'सहकार- का सम्पादन-प्रकाशन १८ वर्षों तक।

पुरस्कृत कृतियाँ- १९९६ में पं० भूपनारायण दीक्षित 'बाल साहित्य पुरस्कार'-५०१ रू०, 'आओ बच्चो गाओ बच्चो' कृति को प्राप्त, १९९७ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'हनुमन्महानाटक' को रू ८००० का पुरस्कार प्राप्त २००५ में 'भगवती शतक' पुस्तक को बृजभाषा साहित्य सम्मान, जयपुर द्वारा ५००० रूपयों का पुरस्कार प्राप्त, २०१५ में 'हिन्दी सभा', सीतापुर द्वारा 'श्रीरामकृपा स्तोत्र' पर श्रीरामकथापुरस्कार प्राप्त।

अलंकरण एवं सम्मान- 'काव्यश्री' अलंकरण (१९९५), आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान (१९९७), मैथिली विश्व विद्यापीठ द्वारा 'महामहोपाध्याय' मानद उपाधि (१९९८), ए०वी०आई० (यू०एस०ए०) द्वारा मैन ऑफ द इयर सम्मान (१९९८) तथा अपने शोध परामर्श मण्डल में चयन। आई०बी०सी० कैम्ब्रिज द्वारा मैन ऑफ इयर (१९९८ सम्मान) तथा 'हूज-हू' के २७वें संस्करण में उल्लेख। महावीर सेवा संस्थान, प्रतापगढ़ द्वारा 'साहित्य शिरोमणि, उपाधि (१९९८), शिव संकल्प साहित्य परिषद, होशंगाबाद द्वारा 'छन्दश्री' सम्मान (१९९९), अ०भ०सा०स०, मथुरा द्वारा 'कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' (२०००), प्रथम 'मीरा प्रतियोगिता पुरस्कार' सीतापुर द्वारा प्राप्त, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ द्वारा 'विद्या वाचस्पति' उपाधि तथा 'महाकवि' मानद उपाधि (२००० ई०) प्राप्त। बाल साहित्य की विशिष्ट सेवा हेतु भा०बा०क० संस्थान, कानपुर, नागरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया एवं बाल साहित्य कला संस्थान, बस्ती द्वारा सम्मानित तथा दीर्घकालीन महत्वपूर्ण साहित्य सेवा हेतु 'संस्कार भारती', उन्नाव द्वारा 'गुरु सम्मान' प्राप्त। महानुभाव विश्वभारती, महाराष्ट्र द्वारा ग्रन्थोत्तेजक (साहित्यालंकार) मानद उपाधि (२००१) तथा सरस्वती साहित्य वाटिका, गोरखपुर द्वारा 'सरस्वती साहित्य सम्मान' २००१ प्राप्त और साहित्यिक सामाजिक संस्था 'सामयिकी', भीलवाड़ा द्वारा विभिन्न सेवाओं हेतु २००१ में सम्मान-पत्र प्राप्त। हिन्दी भवन, गाजियाबाद के अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के क्रमशः ७वें, ८वें, ९वें तथा ११वें समारोह में हिन्दी भाषा साहित्य संस्कृति एवं विविध सेवाओं तथा 'सहकार' पत्रिका के स्तरीय सम्पादन हेतु सम्मान-पत्र प्राप्त। 'युग मानस संस्था' आन्ध्र प्रदेश द्वारा आयोजित अ०भा० लघुकथा प्रतियोगिता २००० में प्रथम पुरस्कार प्राप्त। 'साहित्य मण्डल' श्रीनाथद्वारा से 'बृजभाषा विभूषण' तथा 'संपादक शिरोमणि' सम्मान एवं 'सुरभि सा०सं०अकादमी' खण्डवा द्वारा 'राष्ट्रगौरव' सम्मान एवं 'पारसमणि' अलंकरण तथा अक्षरधाम समिति, हरियाणा द्वारा 'अक्षर आचार्य' उपाधि २००४ में प्राप्त। सन् २००५ में बी०एन०इं०का० अकबरपुर में सम्मानित एवं 'साहित्यभूषण' उपाधि प्राप्त। अ०भा०सा०संगम, उदयपुर, द्वारा 'कविसम्राट' एवं रा० राजभाषा पीठ-प्रयाग द्वारा २००७ ई० में 'भारतीरत्न' उपाधि प्राप्त। उ०प्र० राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान लखनऊ द्वारा २०११-१२ में 'साहित्य गौरव' सम्मान प्राप्त।
आजीवन मानद सदस्य- संस्कार भारती, (अवध) उन्नाव तथा 'नारायण सेवा संस्थान' उदयपुर (राज०) के आजीवन सदस्य।
वर्तमान सम्पर्क सूत्र- 'साहित्यमण्डप', चन्द्रलोक कालोनी, शहजादपुर, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर, उ०प्र० मो०-७०८०३२२७९५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar